परिवर्तनकामी रचनाक संवाहक मैथिली त्रैमासिक



अक्टूबर, 2010-मार्च, 2011 मूल्य : 20 टाका



अंतिका प्रकाशन से 2011 में प्रकाशित किताबें

उपन्यास

धर्मस्थल : प्रियंवद मूल्य सजिल्द 225.00 पेपरबैक 110.00

कहानी-संग्रह

पाँच का सिक्का : अरुण कुमार असफल मूल्य सजिल्द 225.00 पेपरबैक 110.00
लाल छींट वाली लुगड़ी का सपना : सत्यनारायण पटेल मूल्य सजिल्द 225.00 पेपरबैक 110.00
नगरवधुएँ अख़बार नहीं पढ़तीं : अनिल यादव मूल्य सजिल्द 200.00 पेपरबैक 100.00

कविता-संग्रह

ग़लत पते पर समय : नईम मूल्य सजिल्द 225.00
पुश्तों का बयान : राजेश सकलानी मूल्य सजिल्द 200.00

ग़ज़ल-संग्रह

समय से लड़ते हुए : नरेन्द्र मूल्य सजिल्द 200.00 पेपरबैक 100.00

आगामी सेट की पुस्तकें

उपन्यास

शिप्रा एक नदी का नाम है : अशोक भौमिक
अधूरे सूर्यों का सत्य : प्रकाश कांत
भूलन कांदा : संजीव बख्शी
मोड़ पर (मैथिली) : धूमकेतु अनु. स्वर्णा
डॉक्टर ग्लास (स्वीडिश): ज़लमार सॉडरबैरिए अनु. द्रोणवीर कोहली

कहानी-संग्रह

पाताल पानी : मदन मोहन

कला

समकालीन भारतीय चित्रकला : हुसैन के बहाने : अशोक भौमिक

आलोचना

रूपबंध की राजनीति : गद्य विधाओं की आलोचना : अरुण प्रकाश
हिन्दी उपन्यास : अरुण प्रकाश
स्त्री स्वाधीनता का प्रश्न और नागार्जुन के उपन्यास : श्रीधरम

रचनावली

चन्द्रेश्वर कर्ण रचनावली खण्ड-1 : संपादक : श्रीधरम
(हिन्दी कहानी आलोचना संबंधी लेख)

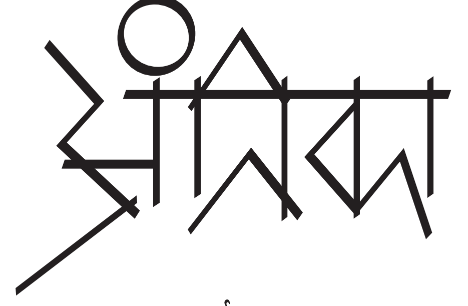
चन्द्रेश्वर कर्ण रचनावली खण्ड-2 : संपादक : श्रीधरम
(गोदान, उपन्यासकार अश्क, उपन्यास संबंधी अन्य लेख)

चन्द्रेश्वर कर्ण रचनावली खण्ड-3 : संपादक : श्रीधरम
(प्रेमचन्द, निराला, रामवृक्ष बेनीपुरी, नागार्जुन, रेणु, राजकमल पर केन्द्रित आलोचना)

चन्द्रेश्वर कर्ण रचनावली खण्ड-4 : संपादक : श्रीधरम
(नाटक, कविता, अन्य गद्य विधाओं, लोकगाथाओं-संस्कृतियों पर केन्द्रित आलेख)

चन्द्रेश्वर कर्ण रचनावली खण्ड-5 : संपादक : श्रीधरम
(कहानी, उपन्यास, लोककथा, रिपोर्ताज, संस्मरण, डायरी, पत्र आदि)

परिवर्तनकामी रचनाक संवाहक मैथिली त्रैमासिक



अक्टूबर, 2010-मार्च, 2011
पूर्णांक : 34 अंक : 3-4 वर्ष : 12

एहि अंक मे

सम्पादक
अनलकांत

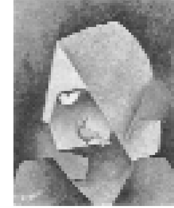
संयुक्त-सम्पादक
श्रीधरम/रमण कुमार सिंह/अविनाश

कला सम्पादक
अशोक भौमिक

संपादकीय सहयोगी
आशुतोष कुमार ठाकुर/अतुल कुमार ठाकुर

मुख्य प्रबंधक : **दीपक कुमार दिनकर**

आवरण चित्र : **अशोक भौमिक**
भीतरक समस्त रेखांकन : **पंकज दीक्षित**



संपादकीय कार्यालय :
सी-56/यूजीएफ-4, शालीमार गार्डन एक्सटेंशन-II, गाजियाबाद-201005 (उ.प्र.)
ई-मेल : antika56@gmail.com
वेबसाइट : www.antika-prakashan.com
फोन : 0120-2648212 मो. : 9871856053

मूल्य : एक प्रति : 20 टाका, **वार्षिक :** 80 टाका
संस्था एवं पुस्तकालय : 100 टाका
विदेश : नेपाल : 300/- अन्य देश : 25 डालर/15पाउंड
आजीवन : 2100 टाका

चेक/ड्राफ्ट ***अंतिका*** क नाम सँ रहय।

अंतिका सँ संबंधित सभ विवादास्पद मामिलाक न्याय क्षेत्र दिल्ली रहत। रचना मे व्यक्त विचार सँ संपादकीय सहमति अनिवार्य नहि।

स्वामी-प्रकाशक-मुद्रक : **नंदिनी**
153 बी/पाकेट-ई, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-95 सँ प्रकाशित आ तरुण प्रिंटर्स, 9267, शाही मोहल्ला, वेस्ट रोहतासनगर, शाहदरा, दिल्ली-32 सँ मुद्रित।
सम्पादक : **अनलकांत**



गामक सीमान सँ किछु सांस्कृतिक चिंता

जत'क धूरा-गर्दा, हवा-पानि आ बसात मे खेलाइत-धुपाइत जुआन भेलहुँ, आइ ओत' स्वयं केँ हम अनचिन्हार जकाँ स्तब्ध आ असहाय पबैत छी। बुझ' मे नइँ अबैत अछि जे बयालीस साल पहिने मिथिलाक जाहि कोसिकन्हा गाम मे हमर जन्म भेल छल ओ पछिला बीस-बाइस साल मे एतेक अपरिचित-अनचिन्हार किऐ आ कोना भ' गेल!...बदलाव प्रकृतिक नियम थिक आ ओकर एक टा सातत्य प्रक्रिया होइत छै, मुदा ओत' जे बदलाव देखा रहल अछि ओ प्रकृति विरुद्ध तँ थिके, ओकर प्रक्रिया सेहो ततेक अराजक, दिशाहीन आ विस्मयकारी अछि जे आसानी सँ ठीक-ठीक किछु बताओल नइँ जा सकैत अछि।



एना नइँ जे पहिने ई भू-भाग खूब धन्य-धान्य आकि स्वर्ग छल। 'अहा, ग्राम्य जीवन क्या है' सन कोनो बात कहियो नइँ छल।... तहियो ओत' भीषण दरिद्रा बास करैत छल। नरको सँ नारकीय स्थिति छलै। गामे कि, लग मे कतहु कोनो स्कूल आकि अस्पताल नइँ छल। पक्की सड़क आकि बिजली मादे तँ हम सभ दस-बारह सालक उमेर धरि किछु सुननहुँ नइँ रही। गामक आगू-पाछू दुनू दिस नदी बहैत रहै— मिरचैया आ गेड़रा। आ ओहि नदी मे आसपास कोनो पुल धरि नइँ छल। चारू कात जंगल छल, अंतहीन जंगल। कतहु-कतहु बाँस, एकाध आम-कटहरक बगीचा आ गाछी। बेसी खैर, साहौड़, जिलेबी, बबूर सन गाछक झोंझि साँप-सनगोहि, बिज्जी-नढ़िया आ खिखिर सँ भरल। परती-पलार झौआ-कास-पटेरक दुर्गम झाड़-झंखाड़ सँ भयाओन। उपजाउ जमीन नाममात्र छल। गाम भरिक हाल तखन ई छलै जे साल भरि मे डेढ़ सय सँ बेसी दिन भात-रोटी नइँ जुमै। सालक दू सय सँ बेसी दिन लोक उसिनल अल्हुआ, खेसाड़ी आ कुरथीक उसना आकि कौन-चीन-जौ-बाजरा-जनेर सन कदन्न पर खेपैत छल। माछ, काछु, खढ़िया, बटेर, लालसर, पड़ौकी आकि बनमुर्गी सन जीवक मांसु तँ लोक खाइ छल, मुदा ताहि लेल तेल-मसालाक अकाल रहै छलै। जीर गनिक' आ तेल बुन्नक हिसाबें खर्च करबाक मजबूरी छलै। नगदी लेल पटुआ-तमाकू आकि दूध मात्रक आसरा रहै। पूरा गाम मे एक सेट सँ बेसी कपड़ा तखन नवविवाहिताक छोड़ि प्राय: किनको लग नइँ रहै छलै। बरतन-बासनक हाल ई छल जे एक-दू गोटे सँ बेसी पाहुन अयला पर अड़ोसिया-पड़ोसियाक आँगन सँ थारी-बाटी माँगि क' आन' पड़ै। साबुनक चलन तखन बड़ थोड़ छलै आ सेहो सभतरि नइँ। असक्क पड़ल लोकक इलाज पथ्य-परहेज सँ घरेलू ढंगे होइ। झोराछाप डाक्टर-वैद्य धरि तेना सुलभ नइँ छलै। झाड़-फूक आ टोटकाक आसरा छलै।... भगवान पर भरोस आ फुर्सतिक मारतेरास क्षण रहै छलै। ततेक ने पलखति रहै छलै जे गप्पबाजी आ ठट्ठा मे लोक सहजहि पारंगत भ' जाइत! भूखलो लोक तेना ने गप्प हँकैत हँसैत रहै छल स्वाभाविक हँसी जे ओकर चिन्ता, परेशानी बिलायल रहै छलै।

तखन व्रत-उपवास दिन कटै लेल अन्न बचबैक तरीका बुझाइ छल। भगवानक नाम तखन संकटक दिन कटबा सन स्थिति मे बल देब'वला अदृश्य शक्ति सँ बेसी महत्त्व नइँ रखै छल। पाबनि तिहार तँ रहय, मुदा ढकोसला आ अंधविश्वास कने कमे छल। धर्म आ ईश्वर केँ ल'क' लड़ै-भीड़ैक स्थिति तँ एकदम्मे नइँ छल। धर्म आ ईश्वरक दोकान तखन अपना गामक सीमान सँ दूर धरि नइँ लखा दै छल। एक टा ग्रामदेवताक थान शीशोक झोंझि मे जरूर छल, मुदा ओतहु साल मे मात्र एक बेर लोक सभ जुटै छलाह। एकाध पहरक कीर्तनक बाद घर-घर सँ पठाओल मुट्टी भरि अक्षत, किछु केरा आ एकाध किलो दूध सँ बनल सझिया खीरक परसाद ल' सभ राजी-खुशी अपन घर घुरै छलाह। सामूहिकताक भावना संबंध केँ आधार दै छल। कुटुम्बजनक सत्कार आ सम्मान एक घर मात्रक नइँ, गाम भरिक कर्तव्य बुझाइ छल। कोनो एक व्यक्तिक उपलब्धिक सुख गाम भरि केँ सुख पहुँचबैत आनंदित करै छल।

मुदा आइ अपन ओही गाम मे हम स्वयं केँ स्तब्ध, असहाय आ अनचिन्हार अनुभव क' रहल छी। ओही गाम मे जतय हम अपन जिनगीक आधा सँ बेसी दिन कटने छी। जतय सालो-साल माल-जाल चरौने छी। जतय सँ खेती-बाड़ी करैत, माछ पकड़ैत स्कूलक बाट तकने रही। जतय सँ चलिक' बाहरक दुनिया सँ हमर तार जुड़ल। अपन ओही गाम मे हम एकसर भ' गेल छी जत'क धूरा-गर्दा, माटि-पानि, बसात आ रूप-रंग-गंध हमरा रग-रग मे बसल अछि आ जकरा बिना हमर अनुभव-संसार शून्य अछि।...

आइ हम अपन ओही कालिकापुर गाम मे बहरिया भ' गेल छी!...

जिला-जयबार सँ बाहर सर्वप्रथम अठारह वर्षक उमेर मे 1987 मे प्रवास पर निकलल रही। भागलपुर, दिल्ली, पटना, सहरसा, दरभंगा आदि...1995 धरि बेसी समय बिहारेक सीमा मे अध्ययन आ अन्यान्य संघर्ष मे बौआइत रहलहुँ।...से कहि सकै छी जे 1995 धरि गाम सँ जुड़ाव सभ तरहें बेसी छल। एत' ईहो कहय चाहब जे बदलावक बसात ओही दौर मे शुरू भ' गेल छल जखन प्राय: देशक आन-आन गाम सेहो बदलाव दिस अग्रसर भेल हैत। इन्दिरा जीक काल मे बीस सूत्री कार्यक्रम सभक माध्यमे गाम-घर मे 'लूट आ फूट'क नव आधार राखल गेल छल। राजीव युग धरि आरो नव-नव सब्सिडी स्कीम सभ आबि एहि व्याधि केँ चहुँदिस पसारलक। ओही दौर मे बिहार मे तथाकथित संस्कृत शिक्षा केँ बढ़ावा देब'क एक सरकारी योजनाक अंतर्गत हमरो गाम मे हमर पितामहक नाम सँ एक टा संस्कृत मध्य विद्यालय खोलल गेल। पछिला सत्ताइस-अट्ठाइस साल मे ओ स्कूल साक्षर तँ एकहु व्यक्ति केँ नइँ कयलक, मुदा ओहि स्कूल सँ आन-आन गामक पाँच व्यक्तिक संगहि एक ग्रामीण सेहो 'मास्टर साहेब' कहाब' लगलाह। जे आर गोटे 'मास्टर साहेब' नइँ बनि सकलाह हुनका सभक संग स्थानीय स्तर सँ कोर्ट-कचहरी धरि मामिला चलल। आ एहि मामिला आ अन्य बदलाव सभक प्रभाव कहि सकैत छी जे आइ ओत' घर-घर आ व्यक्ति-व्यक्ति मे वैर आ वैमनस्य स्थायीभाव जकाँ पसरि गेल अछि।

जंगलक कटाइ-सफाइ 1982-83 मे शुरू भेल छल आ 1986-87 धरि पूरा इलाका एकदम्मे उजाड़ भ' गेल छल। 1990-91 अबैत-अबैत तँ ई इलाका एक टा एहन विरान भू-भाग लगै छल जकरा देखला सँ पहिनेक भौगोलिक परिवेशक कल्पना धरि फूसि बुझाइ छल। ई अभियान वास्तव मे खेती योग्य भूमि तैयार करबा सन कृषक समुदायक प्रशंसनीय सोच सँ जुड़ल छल। ओहि कृषक लोकनि केँ ई नइँ बुझल छलनि जे खेती एहि तरहें अर्थहीन आ बेकार भ' जायत, जेना कि भेल। सरकारक कोसी सिंचाई परियोजना एकदम्मे असफल साबित भेल। ओकर बाद सरकारी स्तर पर कृषक लोकनि केँ सुविधा, सहायता देब' आकि जागरूक बनब' लेल कोनो टा ईमानदार प्रयास नइँ भेल। गामक हृदय पर मरल अजगर जकाँ ओ नहरि एखनहुँ सूतल अछि जाहि मे पचास साल बीत गेलाक बादो कहियो पानि नइँ आयल।

ओहि मरल नहरि आ मरले सन स्कूल (जत' मास्टर साहेब लोकनि कखनहुँ काल बैसिक' खैनी खाइत आ गप्प हँकैत छथि) केर अलावा ओहि गामक भीतर पछिला शताब्दी मे सरकारी योजना सभ सँ आओर कोनो काज देखबा मे नइँ आयल। हँ, जखन खेती निरंतर घाटाक सौदा होइत गेल तँ परेशान हाल लोक बाहर ताक-झाँक शुरू कयलक। पहिने एत' सूचनाक स्रोत मात्र रेडियो छल। फेर बाहर सँ घूरल लोकक अनुभव सेहो गामक बसात मे नव-नव बात पसार' लागल। फेर बैट्री सँ चल'वला टीवी सेहो गामक सीमान मे प्रवेश कयलक। टीवीक विज्ञापन नव-नव सपना संग पसारैत गेल पलायन आ बाजारक वायरस।...

1995क बाद सँ हम दिल्ली/गाजियाबाद रहि रहल छी। साल मे एक-दू बेर ओतहु जाइत रहल छी। किछु बेर तँ महीना धरि रहल छी। तैयो रसे रस सब बेर पछिला खेप सँ कने बेसीए अपरिचयक स्थिति बनैत आ बढ़ैत बुझायल।...आ आइ स्थिति तेहन विकट भ' गेल अछि जे आसानी सँ ठीक-ठीक बतायब कठिन लागि रहल अछि।

एहि बीच पढ़ले-लिखल लोक टा ने, अनपढ़-अशिक्षित, श्रमिक जनक संगहि एहन तथाकथित कुलीन-मालिकान लोक सभ सेहो जे गाम मे मजूरी नइँ क' सकै छथि, नगर-महानगर दिस चुट्टीक धारी जकाँ निकलि चुकल छथि। हम 1987 मे मैट्रिकुलेशन कयने रही। 24 साल भेल अछि। तहिया सँ आइ धरि गामक जनसंख्या दुगुना सँ बेसी भ' गेल अछि। सरकारी वेबसाइट सेहो तहियाक लगभग चारि सय जनसंख्या वला ओहि गामक ताजा जनसंख्या साढ़े एगारह सय सँ बेसी बतबैत अछि। एहि बीच आठ-दस गोटे मैट्रिकुलेशन आ एकाध ग्रेजुएशन कयलनि अछि— मुदा तखन मात्र एक प्रतिशत लोक बाहर कमाबै लेल जाइ छल आ आइ पचास प्रतिशत बाहर कमा रहल छथि। आइ गाम मे असहाय वृद्ध, महिला आ नेना-भुटका केँ छोड़ि कामकाजी लोकक दर्शन दुर्लभ भ' गेल अछि। आब कतहुक सूचना जतेकाल मे दिल्ली-कोलकाता पहुँचैत अछि, ओतबे मे कालिकापुर सेहो। आब ओत' पाइ सेहो पहिनेक अपेक्षा बहुत बेसी पहुँचैत अछि। प्राय: सभ घर सँ एक अथवा ओहि सँ बेसी सदस्यक कोनो ने कोनो बैंक मे एकाउण्ट अछि। लगभग तीस प्रतिशत घरक महिलाक नामे सेहो बैंक एकाउण्ट अछि। मोबाइल सभ घर मे। साइकिल केँ के पूछय, किछु मोटरगाड़ी सेहो आबि गेल अछि। तखन पूरा गाम मे एको टा पक्का घर नइँ छल, आइ कतेको पक्का मकान अछि। सीडी, डीवीडी प्लेयरक सभ तरहक संस्करण अपन रस्ता ओम्हर बना रहल अछि। गुटखा-पाउच सँ कोकाकोला धरि आब ओत' सहजहि 'ठंडा-गरम'क परोसा बनि रहल अछि। आब सभ घर मे रोजे भात आकि रोटी पकैत छै। अल्हुआ, मक्कै, मड़ुआ आकि खेसारी-कुर्थी अलोपित भेल जा रहल छै। आब माछ-मांसुक साधन पहिने जकाँ सुलभ नइँ होइतो ओकर खपत कतेको गुणा बढ़ि गेल छै। अढ़ाइ सय टके किलो भेटयवला खस्सीक मांसु आकि दू सय टके किलो बिकायवला आंध्राक माछ ओत'क हाट-बाजार मे जतेक पहुँचैत छै, सभ टा खपि जाइत छै।

वर्ष 2008 मे ओत' कोसीक भीषण बाढ़ि आयल छल। कतेक लोक तबाह-बर्बाद भेलाह। किछु गोटे मरबो कयलाह। बाढ़िक बाद भीषण सूखाड़ आयल। भूमिक जलस्रोत बहुत नीचा चलि गेल।

गाछ-बाँस सूखैत गेल। पोखरि तोपा गेल आकि सूखि गेल। गामक पश्चिम सँ बह'बला सदानीरा नदी मिरचैया सेहो सूखि गेल।

तैयो किछु एहन अभागल लोक जिनका लग बाहर कमाब' लेल जाय जोगर 'पूत' नइँ, तिनका छोड़ि बाकी परिवारक उपर एहि बाढ़िक कमे प्रभाव भेटत। एकाध तँ एहि बाढ़ि सँ तेना लाभान्वित भेलाह जे ओ हरेक साल एहन आपदा अयबाक कामना क' सकै छथि। सामान्यजन आ बहुतायत आमजन जँ एहि आपदा सँ प्रभावित होइतो अप्रभावित सन लगै छथि, तँ तकर कारण थिक गाम सँ बाहर काज कर'वला हुनक पारिवारिक लोकनिक आय। यैह कारण रहल जे ओत' घर-घर बैंक एकाउण्ट अछि ताकि प्रवासी पाइक प्रवाह सहज रूपें होइ आ सरकारी योजनाक ड्राफ्ट भजब' मे परेशानी नइँ होइ। आब तँ काफी समय सँ इन्दिरा आवास योजना, जवाहर रोजगार योजना, आपदा राहत योजना आदिक पाइक वैधानिक-अवैधानिक प्रवाह सेहो प्रवहमान अछि।...

निश्चये अहाँ सोचैत हैब जे जखन गाम एतेक खुशहाल भ' गेल अछि, तँ हम किऐ दुखी भ' रहल छी अपन परिचयहीनताक दुख ल'क'? सभक खुशहाली देखि हम किऐ ने खुश भ' रहल छी? बहुत संभव जे हमर ग्रामीण लोकनि हमरा 'दुष्ट प्रवृत्तिक लोक' धरि बूझ' लागल हेताह!

जे से, हम पूर्ववत दुखी छी आ भौचक्क! विकासक ई आन्हर आ दिशाहीन दौर गाम केँ पाइ जरूर खूबे देलक आ ओहि पाइ सँ लोक टीवीक विज्ञापन मे देखल जायवला अनेक उत्पाद सेहो खरीदैक स्थिति मे आबि गेल अछि। मुदा, ओकर खेत फेर सँ बंजर भ' गेल अछि आकि भ' रहल अछि। आब ओ अपन खेतक साग-सब्जी कम आ बाजारक तरकारी बेसी खाइत अछि। इलाज लेल कतेको झोराछाप डाक्टर सेहो आबि गेल अछि अनेक तरहक बेमारीक संग। टोना-टोटका आ अंधविश्वास पहिने सँ बेसीए भेल अछि। भगवान लोकनिक कतेको ब्राण्डक नव-नव दोकान तँ खुजले अछि, धार्मिक आयोजनक बहाने शक्ति-प्रदर्शन सेहो बढ़ल अछि। धर्म आ जाति-पातिक बीच जतेक मेल-मिलाप बढ़ल, ओहि सँ बेसी ओकर राजनीति सँ नव-नव अंतर्कलह जन्म लेलक। स्त्री-शिक्षा पूर्ववत गौण रहल। नारी उत्पीड़न आ दहेजक दिखावा चरम पर अछि। विवाह आदि सन आयोजन मे आडंबर आ बर्बादी शहरीए ढंगें बेसम्हार भेल अछि।

आँगन-दलानक बेड़ आ कलमगाछीक दृश्य जरूर एखनो किछु काल लेल मनोहारी लगै अछि। रस्ता-पेड़ा चलैत लोकक खूनक रंग पहिने जकाँ अछि। मारतेरास बात-विचार पहिने जकाँ होअयक बादो आजुक ग्रामीणजनक भीतर एक टा चालाक किस्मक शहरीक समस्त वणिक बुद्धि आबि गेल अछि। आ तेँ आजुक ग्रामीण आ शहरी लोकक जीवनक उद्देश्य मुनाफा आ सिर्फ मुनाफा आ सेहो निजी मुनाफा लेल चिंतित-परेशान रहनाइ भ' गेल अछि।

प्राय: यैह कारण रहल अछि जे आइ हमरा गामक लोक केँ जे लड़ाइ लड़बाक चाही छल ताहि लेल ओ आगाँ नइँ अबैत अछि। फलत: ओकर आर्थिक समृद्धि आ बौद्धिक दरिद्रता एक्के संग बढ़ल जा रहल अछि। जवाहर रोजगार योजनाक अन्तर्गत सभ साल किछु खरंजा सड़क आ किछु पुल बनैत अछि आ जल्दिए तकर ईंट अलोपित भ' जाइत अछि। प्राय: तेँ आइ धरि एत' एको टा ढंगक पुल आकि एको फुट पक्की सड़क नइँ बनल अछि। बिजली सेहो नइँ आबि सकल। हँ, आब साँझक बखत सझिया पाइक जेनरेटरवला लाइट सप्लाइक एक टा नव फंडा ताकल जाय लागल अछि। एहि सँ लोकक मोबाइल चार्ज भ' जाइत अछि आ बैट्री सेहो। सस्ता मनोरंजन, क्षणिक उत्तेजना भेटैत रहौ! नइँ बनय अस्पताल, नइँ चलय स्कूल! सड़क-स्कूलक अभावो मे सुखक पुल तँ बनिए रहल अछि!

एहन विषम काल मे अपनहि गाम मे, हम अपरिचित-अनचिन्हारक स्थिति मे पहुँच चुकल छी आ आब ओम्हर जयबाक मोन नइँ करैत अछि, तँ ककरो किऐ कोनो फर्क पड़तै! पहिने सब साल जाइत रही, आब दू-तीन साल पर एकाधहु रोज लेल गेला पर केओ-ने-केओ कोनो-ने-कोनो बहाने अपमानित करबाक लेल तत्पर बुझाइत अछि। भ' सकैत अछि, कोनो दिन हमर सहोदरे हमरा अपन पैतृक जमीन सँ बेदखल करबाक लेल फरुसा ल'क' दौड़य!...

बंधु! हम जाहि गामक बात-कथा एतय राखल अछि ओकर सीमान सँ अहाँक जुड़ाव भने नइँ होअय, मुदा ध्यान दी जे ओहि बात-विचारक संबंध कतहु ने कतहु अहाँक अपन जुड़ाव-लगाव वला गाम सँ तँ नइँ बनैत अछि?

एहि अंक मे प्रस्तुत जीवकान्त जीक आत्मकथा सेहो एक अलग तरह सँ गामेक चिन्ता ल'क' सोझा अबैत अछि। खासक' कृषि-संस्कृतिक चिन्ता ल'क'। मैथिलीक अधिकांश रचनाकारक जीवनानुभव मे गामक अंश पर्याप्त अछि। तेँ हुनका लोकनि सँ हमर विनम्र अनुरोध हैत जे ओ अपन चिंता साझी करबाक प्रयास करथि।

बहुत प्रयासक बादो तीन मास पर अंक लेल पर्याप्त सामग्री नइँ जुटि सकल आ दुख अछि जे 'अंतिका'क ईहो अंक संयुक्तांक भ' गेल! आगाँ स्थिति मे सुधार होअय ताहि लेल हमसभ प्रयासरत छी, मुदा ई प्रयास तखने फलीभूत भ' सकत जँ 'अंतिका'क शुभचिंतक-रचनाकार लोकनि सेहो एहि चिंता मे संग दैथि।

बदलैत कृषि-संस्कृतिक बीच एक शिक्षक-लेखकक यात्रा

जीवकान्त

जीवकान्त जीक व्यक्तित्व मे सँ शिक्षक आ लेखक-कवि केँ विलगाक' देखब कठिन अछि। संगहि ई दुनू तरहक व्यक्तित्व एक खाँटी कृषक परिवारक समस्त गुण-संस्कार सँ आविष्ट अछि। आमतौर पर गाम-घरक मध्यवर्गीय मैथिल परिवार मे जाहि तरहक जीवन भेटैत छै, ताहि सँ बहुत अलग तरहक जीवन हिनक नइँ रहलनि। मुदा आजादी पूर्व जनमल पीढ़ीक जीवनानुभव आ आजुक पीढ़ीक जीवनानुभव मे व्यापक अन्तर देखाओत। जीवकान्त जीक जे जीवनानुभव अछि, से हुनका पीढ़ीक लोक लेल आ गाम-घर सँ जुड़ल बादोक पीढ़ीक लोक लेल भनहि नव नइँ होअय, मुदा आजुक शहरी पाठक लेल अबस्से अभिनव हैत। आ एहि आलोक मे हुनक रचना केँ बुझै-समझैक कुंजी सेहो भेटि सकै अछि।

जीवकान्त जी केँ अपन बालपन, गाम-घर आ परिवार सँ जुड़ल जीवनानुभव लिखबा लेल हम कतौक वर्ष सँ आग्रह करैत रहल छलियनि। मुदा ई पठबैत जखन ओ फोन कयलनि, ताधरि ई सब पुस्तकाकार छपि गेल छल। तैयो 'अंतिका'क पाठक लेल एकर सर्वाधिक अंश एत' प्रस्तुत करबाक पाछाँ लेखक आ संपादक दुनूक ई सोच रहल जे मैथिलीक पोथी बेसी गोटे केँ उपलब्ध नइँ होइत छनि। जे संपूर्ण पोथी पढ़' चाहैत हो, से प्रकाशक : जखन-तखन, लक्ष्मीसागर, दरभंगा सँ 'एकहि पच्छ इजोर' नामक ई पोथी प्राप्त क' सकैत छथि। पृ. 96, मू. 75 टाका।

एहि आत्मकथा-अंशक संग एत' हुनक एक टा नव कविता सेहो प्रस्तुत अछि

—संपादक

भोला, भगवत, भगवान

आ फेर ओ दिन आबि गेल। हमर स्कूल धरबाक दिन। ओहि सँ एक-आध दिन पहिने जे हमर जाँच परीक्षा भेल छल, से अद्‌भुत छल।

हमर छोट पित्ती रहथि लोअर पास। खेतीक काज देखथि। भोर-साँझ दोकान पर बैसथि। छोट-छीन लटकेनाक दोकान। गाम-घर लेल नोन-तेल, सुपारी-तमाकू-बीड़ी इत्यादि उपलब्ध रहै। क्यो धान चढ़ाबय, क्यो मड़ुआ-खेसारी चढ़ाबय। कम लोक रहय जे पाइ, दुपैयाही अथवा एकन्नी ल'क' जाय आ सौदा कीनय। चारू भाइ मे यैह टा रहथि जे अक्षर चीन्हैत रहथि। हमरा सभ हुनका पढ़ुआ काका कहियनि।

एक दिन दोकानक आगाँ नुड़िआइत रही। पढ़ुआ काका केँ पलखति रहनि। पुछलनि, ''तोरा लिखय अबैत छौ?'' हम कहलियनि, ''अबैए।''

दोकान सँ पथरखड़ीक एक छोट ढेप फोड़िक' ओ हमरा देलनि आ आदेश देलनि, ''लिखि क' देखा।''

दोकानक छोटका ओसारक नीचाँ बाट रहै। धूरा-माटि सँ झाँपल। हम बाट पर बैसिक' एक डड़ीर खीचल। बालु पर डड़ीर खिचा गेल। धनुषाकार टेढ़ डड़ीर। डड़ीरक निच्चाँ मे हम अक्षर लिखल, ''ओ ना मा सी धं।''



ओ देखलनि, तँ प्रसन्न भेला। पुछलनि, ''स्कूल जाक' पढ़बें?'' हम कहलियनि, ''हँ, हम जायब स्कूल।''

स्कूलक नाम सँ बाल-गोपाल डेराइत छल। दुनू उखड़हा स्कूल मे घेरल रहय पड़ैत छलै। लघी-नदी सेहो करबा लेल गुरुजी सँ छुट्टी लेबय पड़ैत छलै।

बात-बात पर गुरुजी मारैत छलथिन—दे छौंकी। रे छौंड़ा, हाथ निकाल! बेदरा सभ तरहत्थी पसारि हाथ बढ़ाक' गुरुजीक सोझाँ क' दैनि, आकि दे छौंकी। छौंकी पर छौंकी। बेसी तमसेलाह गुरुजी, तँ कहतनि, दोसरो हाथ निकाल। एना मे दुनू तरहत्थी पर बाँसक करची पड़ैत छल—सटाक-सटाक। करची टूटि जाइत छल।

बहुते बेदरा स्कूल नइँ जाइत छल। माय-बाप ठोंठिअबैत छलथिन, तँ नोर चुअबैत आ हिचुकैत जाइत छल। कनैत नेना केँ बाप स्कूल धरि पहुँचा अबैत छलथिन।

कोनो नेना सबक नइँ याद क' पबैत छल, तँ स्कूल जयबाक समय कतहुँ नुका जाइत छल। तखन गुरुजी स्कूल सँ चारि गोट विद्यार्थी केँ एहेन बच्चाक घर पर पठा दैत छलथिन। ई चारू गोट बच्चा होइत छल गुरुजीक सिपाही। ई सभ बच्चा केँ ताकिक' टाँगि लैत छल, आ टँगने-टँगने स्कूल पहुँचा दैत छल। आब ई बच्चा नोर चुआ रहल अछि आ गुरुजी बाँसक करची सँ ओकर तरहत्थी केँ पीटि रहल छथि—दे छौंकी, लगा छौंकी।

स्कूल घृणास्पद जगह रहै। गुरुजी चंडालक भाइ बुझा पड़थि।

कोनो विद्यार्थी स्कूल सँ घुरि क' घर अबैत देरी ठोहि पाड़िक' कानय लागय। बाप पुछथिन—रे की भेलौ? बच्चा अंगा फेकिक' पीठ उघाड़िक' देखा दैनि। पीठ पर लाले-लाल चेन्ह, छौंकीक चेन्ह। बाप बच्चाक डेन पकड़ने स्कूल जाथि। गुरुजी केँ कहथिन, ''बड़

चंडाल छी, बच्चा केँ कतहुँ एना डेंगाओल जाइ!''

बेटा केँ निर्भय करैत बाप कहथिन, ''जो, भ' गेलौ छुट्टी। काल्हि सँ स्कूल जेबाक काज बन्न।''

गुरुजी केँ बाप कहथिन, ''अहाँ राखू अपन स्कूल। हमर बेटा मूरखे रहत। अहाँक स्कूल मे आगाँ पयर नइँ देत।''

स्कूल ओहि दिन मे सत्ते कालकोठरी जकाँ बूझल जाइक। तथापि किछु छात्र स्कूल अबस्स जाय।

दोसरा दिन सँ हमहूँ स्कूल जाय लगलहुँ। जे छात्र साल-छओ मास सँ स्कूल धयने रहथि, सैह हमरो संग क' लैथि आ हम ओहि बालक संग स्कूल जायब शुरू क' देल।

हमरा जे सबक भेटय, से हम अभ्यास करी, स्कूलक समय मे झूठ-मूठ पाँच मिनटक छुट्टी नइँ माँगी आ ने स्कूल छोड़ि सड़क पर बौआइ।

हम गुरुजीक प्रति आदर-भाव रखैत रही। हुनक आज्ञाक उल्लंघन नइँ करी। तेँ हमरा पिटाइ नइँ भोगय पड़य। ई नइँ कहि सकैत छी जे हम कहियो मारि नइँ खयलहुँ। हमरो छड़ीक मारि खाय पड़ैत छल।

अपर मे पढ़ैत रही। गाम मे लोअर धरि पढ़ाइ रहै। अपर मे घोघरडीहा (लोक कहै घोंगरड़िया आ स्टेशन मास्टर जखन फोन पर कंट्रोल सँ बात करै, तँ चिचिआक' कहै—घोगरिया-घोगरिया।) पढ़ए गेलहुँ। मलेरिया मास दू मास पर लागि जाय। तेहैया लागय। शरीर कमजोर भ' जाय। दस दिनक बाद स्कूल जाइ, तँ पिटाइ लागय। गुरुजी रहथि सिद्धिनाथ बाबू, गाम भवानीपुर। अनुशासनप्रिय रहथि। हुनका होनि जे हम अनुपस्थित भ' अनुशासन भंग करैत रही। तेँ ओ मरम्मति करथि। ओ जखन मोन सँ हमर मरम्मति करथि, तँ ओद-बाद उठा देथि। माल-जाल जकाँ डेंगा देथि। राति मे निन्न मे कुहरी। भोर मे माय कहय, ''भरि राति कुहरलेहें।''

अपर मे हमर सबको तैयार नइँ होअय। दस दिन हम ज्वरक कारणेँ स्कूल नइँ जा पाबी। दस दिन मे ओ हिन्दी व्याकरण मे एक-दू अध्याय पढ़ाक' बढ़ि जाथि। ताहि मे हम कमजोर भ' जाइ। तकर फलाफल होअय जे ठोकाइ मे पड़ि जाइ।

तकर बाद हम सुधार कयल। किताब पढ़िक' बुझबाक प्रयत्न करय लगलहुँ। अगिलो पाठ केँ क्रमश: तैयार करैत गेलहुँ, तँ अनुपस्थित भेलाक बादो सही जवाब देबाक स्थिति मे हम होइ।

शिक्षक अपन विषयक ज्ञाता होथि। अपन संपूर्ण आवश्यक सूचना ओ छात्र केँ देबाक प्रयत्न करथि। जे हुनक ई अवदान लेबाक अनिच्छा करय, से थूरल जाय। हम शिक्षकक पढ़ाइ केँ आदरपूर्वक अंगीकृत करी, तेँ हम हुनक कृपापात्र बनि सकलहुँ आ अपेक्षाकृत हमर देह कम धुनायल।

जे विद्यार्थी अवज्ञा करैत अछि, सबक तैयार करबा मे अनठबैत अछि, सबक केँ महत्त्वहीन बूझि ओहि पर ध्यान नइँ दैत अछि, से शिक्षकक कोपभाजन भ' जाइत अछि आ पिटाइत अछि, थेत्थर भ' जाइत अछि, आ बीचहि मे स्कूल छोड़ि पड़ाइत अछि।

जे छात्र कमजोर भ' जाइए, से शिक्षक केँ पसिन्न नइँ करैए, चाहैए शिक्षक ने पूछथि, ने आगाँ पढ़ाबथि। ओ शिक्षकक उपस्थिति मात्र सँ, ओकर अस्तित्व सँ, घृणा कर' लगैत अछि। शिक्षकक प्रति ई घृणा, ई प्रतिशोध-भावना ओकर अंग-अंग सँ प्रकट होअय लगैत अछि, ओकर बजबा सँ, ओकर चलबा सँ, शिक्षक दिस ओकर तकबा सँ, घोर अश्रद्धा झलकैत छै। जेना झालि झनझनाइत अछि, तहिना ओकर सश्रर्धा झन-झन बजैत छै। बेसुराह भ' जाइत छै। वर्ग मे जे शिक्षण-कर्मक एक संगीत बनैत छै, तकर ओ विरोधी भ' जाइत अछि, शिक्षणक वातावरणक संग स्कूलक मूल उद्देश्य केँ नष्ट करैत अछि। तकर परिणाम होइत छै, ओ दण्डित कयल जाइत अछि, विद्यालय सँ निष्कासित क' देल जाइत अछि। बहुतो छात्र रोज-रोजक हड़हड़-खटखट सँ अरिआ जाइत अछि, स्कूलक त्याग क' दैत अछि।

स्कूल मे बीचहि मे छोड़बाक (ड्रॉप आउट)क बहुत घटना होइत छै। तकर दस-बीस अन्य कारण भ' सकैत छै, मुदा ई कारण सेहो प्रमुख कारण थिक। तेँ जे छात्र शिक्षकक प्रति आदर-भाव नइँ रखैत अछि, पाठ्यवस्तुक तैयारी केँ महत्त्व नइँ दैत अछि, से बीचहि मे पढ़ाइ छोड़ि पड़ाइत अछि, आ जँ लटकल-फटकल रहि जाइत अछि, तँ संस्थाक लेल, वर्गक अन्य छात्र लेल, विनाशकारी आ घातक सिद्ध होइत अछि।

ओना जे विद्यार्थी फिरण्ट नइँ होइत छल, तकरा लेल स्कूल बहुत आनन्ददायक जगह छल। शिक्षक सभ बहुत उदारमना होइत छलाह। ओ सभ चाहैत छलाह जे हुनक पढ़ाओल विद्यार्थी बहुत योग्य होअय, जतय कतहुँ जाय विद्यालयक नाम आ शिक्षकक नाम उज्ज्वल करय।

हमरा सभक विद्यालय गामक कात मे (पछबारी कात मे) छल। टोल सँ सटलो छल आ टोल सँ निट्ठाहे बाहर छल। विद्यालयक पछबरिया सिमान पर एक टा चालू सड़क छलै, डिस्ट्रीक बोर्ड (बाद मे पी. डब्लू. डी.) रोड। रोडक पच्छिम एक टा पैघ सन पोखरि, रमदतही पोखरि। ओकर पुबरिया मोहारक काते-कात रोड। उतरबरिया खाली। पछबरिया मोहार पर जंगल। बाँस आ आमक गाछी। गाछी पर गाछी। पचासो बीघा मे लगातार गाछी। गाछी ततबा समृद्ध छलै जे सड़क सँ जनाइत छल पोखरिक पच्छिम-दच्छिन मे कोसक कोस घनघोर जंगल अछि। उतरबरिया मोहारक उपयोग लोक बाह्य भूमिक रूप मे करय। गामक एहेन पोखरिक मोहारक बहुत उपयोग छलै। भोर-साँझ लोक 'पोखर दिस' जाइत छल। विद्यालयोक छात्र जँ सचुक्का अथवा फुसियाही दस मिनट अथवा पाँच मिनटक छुट्टी ल' बहराइत छल, तँ दौड़िक' उतरबरिया मोहार दिस पड़ाइ छल।

किछु विद्यार्थी छल जे नीक पढ़ैत छल, से शिक्षक सभक कृपापात्र भ' जाइत छल। शिक्षक लोकनि ओकरा आवेश सँ पढ़बैत छलाह, मनोयोग आ स्नेह सँ बुझा दैत छलाह।

हम जखन स्कूल जायब शुरू कयने रही, तँ प्रधान शिक्षक रहथि रामेसर गुरुजी। बड़ी टा कर्चीक छौंकी राखथि। बड़ तमसाथि तँ करबीर फूलक डाँट तोड़बाक' मँगाबथि। गंजी-कुरता नइँ पहिरथि। धोती नइँ पहिरथि। एक टा कपड़ा डाँर मे लपेटने रहथि, से गमछी सँ पैघ होइत छल, आ धोती सँ छोट होइत छल। लुंगियो सँ झूस। ओकरा संभवत: खड़ुकी कहल जाइक।

गुरुजी ग्रामीण रहथि। बुझू स्कूलक पछुआड़ मे हुनक घर रहनि।

स्कूल समय पर खुजि जाय। विद्यार्थी सभ बाढ़नि पकड़ि ओकर बहार-सोहार करी। शनि दिन गोबर-पानि सानिक' ओकरा नीपी।

वर्ग शुरू करबा सँ पूर्व स्कूल मे प्रार्थना कराओल जाइक। छुट्टी सँ पहिने सभ छात्र केँ पाँत मे ठाढ़ होयबा लेल कहल जाइक। फेर गिनतीक उच्चारण जोर-जोर सँ बाजिक' कराओल जाइक। पहिने एक सँ शुरू क' सय धरिक गिनती। तकर बाद दोनाइ धोखबाओल जाइक, तकर बाद गरहाँ पढ़ाओल जाइक। रोज एक बेर ओकर सस्वर पाठ कयला सँ संख्याक

पहाड़ा तीन साल मे बेसी छात्र केँ कण्ठस्थ भ' जाइक। एक टा तेजगर आ वरिष्ठ छात्र आगाँ-आगाँ खाँत सभ पढ़ै। पाछाँ-पाछाँ तीनू वर्गक सय-पचास बाल-गोपाल सभ दोहराबय। चिकरि-चिकरिक' ई खाँत सभ पढ़ल जाइक। बाट पर जाइत-अबैत राही-बटोही सभक ध्यान एहि धोखन्त विद्या दिस चल जाइक।

एहि गुरुजीक बाद हमरा सभक एक नया गुरुजी अयलाह, बदलिक' आन स्कूल सँ अयलाह। गाम चिकना। हुनक नाम बच्चा झा। एहि शिक्षकक हम बहुत आभारी भेलहुँ। संभवत: हिनक हाथ खाली रहैत छलनि। छड़ी-तड़ी ल'क' ई विद्यार्थी केँ चमकाबथि नइँ।

ई उज्जर साफ धोती पहिरथि। मुदा गंजी-कुरता नइँ। आधा धोती डाँर मे लटपटा लेथि आ आधा धोती गरदनि पर राखि लेथि आ पाँखुर झाँपि लेथि। ओकरा कहल जाइ—एकपलिया। एके पल्ला धोती सँ गरदनि सँ ठेहुन धरि झँपने रहथि।

मीठ बाजथि, दुलार सँ बाजथि। उच्च स्वर मे नइँ बाजथि। बच्चा सभ केँ नया पाठ बहुत स्नेह सँ पढ़ाबथि, पुरना पाठ ध्यान सँ सुनथि, आ सुधार क' देथि।

ई गामक बाहरक लोक रहथि। भोजन आ निवास लेल कोनो सुभ्यस्त आ सभ्य परिवार मे डेरा करय चाहथि। हमर जेठ पित्ती, दीना बाबू, हुनका सम्मान-पुरस्सर अपना परिवार मे ल' आनल। हमरा लोकनि चारि भाइ। चारू पितिऔत। हम भैयारी मे सभ सँ छोट। किछु छेंटगर भ'गेल रहथि, जे लोअर स्कूलक गुरुजीक पढ़ाइ समाप्त क' लेने रहथि। हम छोट रही।

हमरा हुनक पाठक आवश्यकता रहय। हमरे आश्रम मे रहथि। गामो पर हिनक टहल हम करी। भोजन कराबय आँगन बजाक' ल' जइयनि। तहिना ओहो भोर-साँझ निश्चिन्त रहथि, तँ हमरा अपना लग बैसाक' नव पाठ पढ़ा देथि। पुरना पाठ सुनिक' ओहि मे सुधार करबाक हेतु कहथि।

ओ हमरा परिवार मे साल दूए-तीनेक रहलाह। हमरा बहुत लाभ भेल। हिन्दीक किताब धड़धड़ाक' पढ़ि जाइ, अखबारक टुकड़ी भेटि जाए, तँ निरवरोध पढ़िक' सुना दियनि। किताब पढ़बा मे कतहुँ गलती नइँ होअय। ह्रस्व-दीर्घक विवेक विकसित भेल। डिक्टेशन (श्रुति लिपि) जँ लिखाओल जाइ, तँ हमरा लेख मे हिज्जेक गलती नइँ होअय। तहिना जोड़-घटाव, लघुत्तम-महत्तम (लघुतम केँ लघुत्तम बाजब प्रचलित रहै)। लोअर पाठ-चर्या मे जे विषय ज्ञान अपेक्षित रहै, से हमरा प्राप्त भ' गेल।

दलानक घर रहै। भीतर मे बड़का सोंफ (मोथिक नमहर-चौड़गर पटिया) ओछाओल जाइक। पन्द्रह-सत्रह आदमी ओहि पर राति मे विश्राम करय। ओसार पर दू-तीन टा चौकी राखल रहै। ताहि पर पातर ओछाओन (सतरंजी जाजिम इत्यादि) देल रहै। दू नम्बर पाकल पजेबाक देबाल खढ़ सँ छड़ाओल रहै।

देबालक एक आला मे एक रामायण राखल रहै। तुलसीदासक रामचरितमानस। सभ रामायने कहै। मोटका टाइप। यत्र-तत्र लिखल 'अथ क्षेपक' आ 'इति क्षेपक'। पढ़निहार कम रहै। सुननिहार बहुत रहै।

कहियो-काल रामायन केँ उठाक' ओसारक चौकी पर राखी। ओकरा पढ़ी। पढ़ल भ' जाय।

गुरुजी बच्चा झाक शिष्यत्व मे हमरा अनेक लाभ भेल। पढ़बा मे मोन लागि गेल। जनाइत छल पढ़ब-लिखल आसान काज थिकै, मोनलग्गू काज थिकै। तँ पठन-पाठन मे अनुराग उत्पन्न भेल।

दोसर लाभ ई भेल जे शिक्षक समुदायक प्रति आदर आ श्रद्धाक भाव जाग्रत भेल।

स्कूल जायब शुरू कयने रही प्राय: आठ बर्खक अवस्था मे। जनौ भेल छल प्राय: पाँच बर्ख मे। एक मड़बा पर चारि टा बरुआ। हमर बाप रहथि सहोदर चारि भाइ। चारू भाइक एक-एक टा बेटा। आश्रम (चूल्हा) साझी रहै। सम्राज साझी रहै। साझिए सँ सभ खर्च।

हम सभ सँ छोट रही मड़बा पर। जनौक बहुत बात मोन नइँ। जनो मे भेटल रहए हनुमानी। कान मे कर्णफूल, कनौसी। हाथ मे चानीक मट्ठा।

जनौ मे भोज भेल रहै। नीक भोज। भात मे माछक खण्ड परसल गेल रहै। आलूक भुजिया बनल रहै। आलूक एहेन भुजिया जे मुँह मे देला पर कुड़-कुड़ आवाज करै।

उपनयनक (कुमरमक) भोज मे एहन विन्यास आब नइँ देखाइ छै।

छठम बर्खक रही, तँ देश मे 'भारत छोड़ो' आन्दोलन फूटल रहै। से बात मोन नइँ पड़ैत अछि। बाद मे गोरा पलटन गाम मे घूमय अबै। जाहि गामक लोक थाना इत्यादिक बेसी नाश कयने रहै, ताहि गाम केँ फूकिक' जरा दै।

डेराइत रहय लोक। दमन-चक्र बहुत भयावह रहै। ओकर प्रतिरोध नइँ रहै। लोक गाम छोड़िक' पड़ा जाय। गामक स्त्रीगण आ बच्चा सभ केँ बस्तीक बाहर गाछी-बिरछी मे छपकय लेल कहल जाइ।

फुलपरास मे थाना रहै। तकरा आन्दोलनकारी जरौने रहै। गोरा पल्टन फुलपरास बस्ती केँ फूकि देने रहै।

हमरा सभक बस्तीक लोक केँ अन्देशा रहै। से अन्देशे रहलै।

कनेक-कनेक मोन पड़ैए, दिन मे सकाले भानस भ' जाइ। खाक' स्त्रीगण ओ नेना घर-दुआर छोड़िक' बस्ती सँ सटल गाछी मे जा बैसय। बाल-गोपाल सभ प्राय: खेल-धूप मे लागि जाय।

हमरा किछु मोन अछि। हमरा उपनेनिया लाल धोती पहिरा दिअय। ललका हाफशर्ट से पहिराबय। जनौ मे सोनाक हनुमानी भेटल रहय, से गरा मे ध' दिअय, मट्ठा तँ पहिरनहि रही। कनौसी सेहो पहिरनहि रही। दस दिन एहन पहिरन-ओढ़न मे आँगन सँ बहराइ। सूर्यास्त सँ पहिने लोक एकाएकी बस्ती पर आबय आ अपन-अपन घरक केबाड़क जिजीर खोलय।

1946 ई. मे निर्णय भेल जे गाम मे हाइस्कूल खोलल जाय। ताहि सँ पहिने हमरा सभक टोल मे पच्छिम मे एक टा गौंआरी पुस्तकालय चालू भ' गेल रहय। नाम रहै श्री 108 दुर्गाविजय पुस्तकालय। ओहि मे थोड़ेक पोथी रहै। दैनिक पत्र अबैत छल, से मोन नइँ अछि। अबैत रहल होयतै। घोघड़िया बजार मे आर्यावर्त अबैत रहै। ओकर संवाददाता रहथि देवी प्रसाद केजरीवाल। वैह अखबारक एजेंट सेहो रहथि। दस टा इंडियन नेशन आ दस-बीस टा आर्यावर्त बिकाइत रहल होयतै। 1953-54 मे हमहुँ एक टा इंडियन नेशन कीनिक' पढ़' लागल रही, से मोन अछि। पाइ क्यो शुभचिन्तक देल करथि। मासिक चन्दा रहै एक टाका चौदह आना।

पुस्तकालय मे एक टा हिन्दी साप्ताहिक अबै। संभवत: 'योगी' नामक पत्रिका। समाचार विश्लेषण छपैत रहै। किछु कविता-कथा सेहो प्रकाशित करै।

साँझ मे हमहूँ जाक' बैसी। पढ़बाक योग्यता नइँ रहय। पाँच गोटे जे आपस मे गप करै, कोनो घटना पर गल-चौथौअलि करै, से सुनी आ से अद्‌भुत लागय।

दुर्गाविजय पुस्तकालय बहुत दिन चललै, हाइ स्कूल बनलाक बाद ओ क्रमश: मेटा गेल।

हाइ स्कूल डेओढ़ मे बनय, तकर पहिल

कल्पना प्राय: एही पुस्तकालयक पाठक-गोष्ठी मे बनल रहै। चर्चा बढ़ैत गेलै, आ ओ 1947 ई.क पहिल जनवरी कें साकार भेलै।

हरिनाथ मिश्र छलाह तत्कालीन (1946 ई.) एम.एल.ए.। प्राय: प्रान्त सभ मे एसेम्बली सीमित ढंग सँ काज करबा लेल चलैत रहै।

प्राय: तीन-चारि गामक आ घोगड़िया बजारक किछु लोक एक टा बैसार कयलक। डेओढ़ मे एक राइस मिल रहै। प्राय: दलसिंगसरायक मारवाड़ी काशीरामक मिल रहै। ओहि मिलक रमना पर एक महती सभा बैसल। प्रस्ताव आयल, गाम मे मिडिल स्कूल खोलल जाय।

हरीजी (पं. हरिनाथ मिश्र) प्रसन्न भेलाह जे स्कूल खोलबाक प्रस्ताव जनता दिस सँ आबि रहल अछि। ओ संशोधन करैत कहलथिन, ''मिडिल स्कूल नइँ, हाइ स्कूल खोलू।''

ओ कहलथिन, ''दाता के हेता? के अपन जमापूजी लगौताह?''

डेओढ़क बाबू भोला सिंह ठाढ़ भ' अपन सर्वस दानक घोषणा कयल। भोला सिंह कें अपन दस्तखतो कर' नइँ अबैत छलनि। कोदारि पारय मे ओ पिच्छड़ छलाह। दू-तीन बीघा खेत छलनि। हजार-दू हजार टाकाक सिक्का कोनो बटुआ-बगुली मे जोगने छलाह। सैह रहनि सर्वस। से धरि द' देलनि। जाधरि जीलाह, विद्यालय परिसर मे आवश्यकतानुसार कोदारि चलाक' संस्था कें पुष्पित-पल्लवित होइत देखैत रहलाह।

सभ गामक सभ लोक कें स्कूल मे किछु देबाक उत्साह भेलै। चन्दा-चिट्ठा भेलै। सभ क्यो निश्छल भावें अपन-अपन योगदान कयलक।

राज दरभंगा सर्कलक मनेजर छलाह भगवान सिंह। मधुबनी मे सबडिभीजनल अफसर रहथि भागवत सिंह।

लोक कहै, ''भोला, भगवत, भगवान। ई सभ तैयार छथि। स्कूल बनबे करतै। से स्कूल बनलै। जमीन दान मे भेटलै। किछु कीनहु पड़लै। बहुत सहयोग भेटलै। जन-जनक सहयोग।''

से स्कूल फूजल। हमरा सभ कें घर बैसल पढ़बा लेल स्कूल भेटल।

आजादीक वायु बहैत छलै। ओहि समय मे मधुबनी जिलाक कोन-कोन मे हाइ स्कूल खोलबाक प्रयत्न भेलै। हमरा अनुमानें 1946-47-48 मे एहि जिला (तत्कालीन सबडिभीजन) मे पचीस-पचास हाइ स्कूल फुजलै। जतय कतहु रेल रहै, बाजार रहै, थाना रहै, सभ ठाम नव-नव हाइ स्कूल फुजलै। ई अद्‌भुत नवजागरण छल जे देहात कें बदलि क' चकाचक क' देलक।

उत्साह आ सार्वजनिक सहयोगक वातावरण पराकाष्ठा पर रहै। जनवरी 1947 मे हमरा सभक उच्च विद्यालय (शुरू मे उच्चांगल विद्यालय कहल जाइक अर्थात ई स्कूल सभ हाइ इंग्लिश स्कूल रहै अर्थात इंगलिशक प्रधानता) फूजल। ओही बीच मे राजेन्द्र प्रसाद (जे बाद मे देशक राष्ट्रपति बनलाह) कोसी क्षेत्रक अनेक कांग्रेस कमिटीक निरीक्षण लेल घोघरडीहा रेलवे स्टेशन पर उतरि जीप सँ (कांग्रेसी जीप सँ) सड़क मार्ग सँ निकललाह।

लोक स्कूल (नव प्रस्तावित स्कूल)क सामने सड़क पर एकट्ठा भेल आ सड़क कें घेरलक।

हम छोट रही। मुदा ओहि भीड़ मे रही। स्कूलक स्थापनाक कथा सुनि राजेन्द्र बाबू मुस्काइत रहलाह। प्रसन्नता आ सफलताक मुस्की। फोटो सभ मे सभ ठाम ओ एहने-एहने मुस्कीक संग देखाइत छथि। आगन्तुक अथवा निरीक्षण रजिस्टर (भिजिटर्स बुक) नव-नव खोलले गेल रहै। लोकक निवेदन पर ओ एहि रजिस्टर पर अपन खुशी आ आशीर्वादककिछु शब्द लिखि हस्ताक्षर क' देल।

ओही जनवरी मे हम लोअरक प्रमाण पत्र कटाक' घोघरडीहाक बेसिक स्कूल मे भरती भेलहुँ। ओहि ठाम वर्ग-शिक्षकक चलनि रहै। चतुर्थ श्रेणी मे हमरा सभक वर्ग शिक्षक पं. सुरेश मिश्र आ पाँचम वर्ग मे छलाह संभवत: सिद्धिनाथ पंडितजी। मिश्रजीक घर रहनि पिण्डारुच। सिद्धिनाथ बाबूक घर भवानीपुर रहनि। चतुर्थ वर्ग मे अंकगणित मे बहुत अभ्यास कयल। चक्रवर्ती (यादवचन्द्र चक्रवर्ती) गणित सँ सवाल हल करबाक प्रयास करी। पाँचम मे हिन्दी व्याकरणक नियम, तकर अपवाद, तकर उदाहरण सभ घोखि गेलहुँ।

साझी लालटेम

देशक स्वतंत्रता दिवसक जोश आ कष्ट एखनो मोन पड़ैत अछि। कागज कें रंगिक' झंडा बनौने रही। बाँसक करचीक उपर तकरा खोंसने रही। स्कूल दिस सँ खादी भंडारवला झंडा किनायल रहै। भोर मे प्रभात-फेरी सँ शोभायात्रा शुरू भेल। स्कूल मे आबि झंडोत्तोलन भेल। गीत गबैत आ नारा लगबैत गरा लागि गेल।

अपर (बेसिक) स्कूलक बगले मे रेलवे स्टेशन छै। भेलै जे ट्रेन अयबाक समय शिक्षक आ छात्र सभ प्लेटफार्म पर ठाढ़ रहय आ गाड़ीक सामने नारा लगाबय।

गाड़ी आयल। गाड़ीक इंजिन फूल-पात सँ सजाओल छल। दू टा झंडा इंजिनक आगू मे खोंसल छल। अतिशय उमंग आ उल्लासक वातावरण रहै। हर नारा पर गाड़ियोक पसिंजर कंठ अलगाबय। कतोक लोक प्रत्येक नारा पर हाथ उठाक' देशक सम्मान करय।

गाड़ी कें अनेक स्टेशन पर घेरने हेतै। तें गाड़ी लेट आयल छल।

प्लेटफार्म पर हम सभ घंटाक घंटा एगारह-बारह बजेक भदबरिया रौद मे पकैत-जरैत ठाढ़, आ लाइन कें सोझ आ सुन्दर बनौने रही।

उपर आकाश मे आदित्य देवता धधकैत रहथि, नीचाँ प्लेटफार्मक पाथर आ अलकतरा धीपिक' तावा जकाँ गर्म भेल रहै।

देहात मे जूता पहिरबाक रेवाज नइँ रहै। सत्य ई जे लोक जूता पहिरत, से किनबाक पूजी बारह आना (75 प्रतिशत) अभिभावक कें नइँ रहै।

प्लेटफार्मक धरती पर तरवा पकैत रहै। मोन अछि, पयर रोपल नइँ होइ। लाइन तोड़िक' भगबाक बात मोन मे नइँ आबि रहल छलै। पयर उठाबी। जतबा काल उठा सकी उठौने रही। दुनू पयर रोपि ठाढ़ रहब कठिन छल। दुनू पयर उठाक' ठाढ़ रहब किन्नहु संभव नइँ छलै। तें हमरा सभ कदमतालवला खेल जकाँ पयर उठाबी आ रोपी।

स्वतंत्रता दिवस कें नेना सभ कें भूखें-प्यासें की दुर्गति भेल, से अनुमान सँ बूझल जा सकैत छै। ओकर वर्णन करब देशक आजादीक सम्मान मे बट्टा लगाओत।

छबे मासक भीतर महात्मा गांधीक हत्याक खबरि आयल। रेडियो बाजार मे आबि गेल रहै। कतहु एक-आध गोट रेडियोक एरियल वला तार दू टा बाँस पर तानिक' बान्हल देखाइ। जकरा दरबज्जा पर ई तार टाँगल रहय, से समाज मे सुभ्यस्त आ महत्त्वपूर्ण मानल जाय। बिजली मुदा शहरे टा मे चमकैत रहै।

रेडियो पर गांधीक बलिदानक समाचार जंगलक पसाही जकाँ पसरि गेल। बच्चा-बच्चा एहि सँ दुखी आ चिन्तित भेल। हमर अवस्था दस-एगारह रहल होयत। हम दसो गोटेक दरबज्जा पर जाक' गांधीक आ देशक चर्चा

सूनल। जतय चर्चा नइँ होइत रहै, तत' हमहीं चर्चा शुरू करी जे गांधी मरि गेलाह, आब देश नइँ चलत।

गांधीक देहावसानक तेरहम दिन देखल, दरिद्रनारायण केँ भोज देल गेल। बाजार मे ई भोज खाइत गरीब सभ केँ हम देखल। भ' सकैत अछि खादी भंडार सभ मे सेहो गांधीक श्राद्ध मे भोज भेल होयत।

देश सेहो दुर्गति मे गेल। नोन, मटिया तेल, खाद्यान्न, कपड़ा इत्यादि सभ वस्तु बिला गेल। ब्लैक मार्केटक नाम लोक सुनलक। राति मे सामान एक ठाम सँ दोसर ठाम जाय लागल। कोटाक नाम आ परमिटक नाम लोक सुन' लागल।

देश भ्रष्ट आ बैमानक पंजा मे छटपटाय लागल। सरकारी कर्मचारी आ लाइसेंस वला डीलर दिन भरि सूतय आ भरि राति गलत ढंग सँ नोट बनाबय। देशक पार्लियामेंट आ प्रान्तीय आ केन्द्रीय सरकार खाहे ध्वस्त भ' गेल, खाहे रतुका अन्हरिया नोटक धंधा मे लागि गेल।

आजादी भेटलाक साठि बर्खक बादो लाइसेंस आ परमिट चलैत अछि। जनप्रतिनिधि चुनाइत अछि जनताक मत सँ। निर्वाचित होइत अछि, की क्षण भरि मे ओकर गुण-धर्म बदलि जाइत छै। नोट ओकरा कीनिक' राखि लैत छै, ओ चोरक संरक्षक भ' जाइत अछि, आ गरीब निमूह जनताक आहार ओकरा मुँह सँ छिनबा मे सक्रिय भ' जाइत अछि।

हमरा सभक पुश्तैनी धंधा छल खेती। अपनहुँ सभ समाँग मारि-धूसि क' खेतीक काज मे लागल रहैत छलाह। जन खटैत छलै। हर जोतबा मे हरवाहे रहैत छलै। ओहि समय मे हरवाही धार्मिक रूपें वर्जित छलै। भूमिछेदन पाप छलै। गौदोहन पाप छलै। तेँ हमरा सभक घरक लोक महीस स्वयं दूहि दैत छलाह। गाय दुहबा लेल कोनो बोनिहार अबैत छलै। ओना हमरा परिवार मे दू गोट महीस पोसल जाइत छल। चारि गोट बड़द बहैत छल। चारि टा जन-हरवाहाक परिवार खटैत छल। दू गोट चरवाह माल पर रहैत छल। गाय आ बकरी हम कहियो खुट्टा पर बान्हल नइँ देखल।

बेरू पहर हमरा सभ केँ महीस आ बड़द चराब' लेल खोलय पड़ैत छल। कहियो महीसिक पाछाँ हे-हो करैत रही, कहियो बड़द केँ ककरो जजाति मे मुँह देबा सँ रोमि क' आनी। बेरू पहर चरवाह सभ केँ दोसर काज रहै। ओ सभ नारक टाल सँ दू-चारि बोझ नार घीचिक' आनय आ दरबज्जा पर कुट्टी काटिक' ढेर लगाबय। जे कुट्टी तीन बेर सानी लगाक' महीस-बड़द केँ खोआओल जाइ।

चारि बजे स्कूल सँ आबी, तँ बेरहट खाइ। बेसी काल दिनका भात-दालि रहै, सैह खाइ। से नइँ रहै, तँ चूड़ा अथवा चूड़ा-मूढ़ी फँकबा लेल भेटै। बेरहट खाउ आ तकर बाद माल-जाल केँ गाछी-बिरछी दिस सँ टहलाक' लाउ आ गोधूलि बेला मे खुट्टा पर बान्हि दिऔ।

हमरा सभ केँ अपनो किछु स'ख-मनोरथ रहय। भोरुका स्कूल मे बारह बजे गाम पर आबी, तँ पोखरिक धरि मे बंसी पाथि क' बैसि जाइ। बंसी पथने छी, आ तरेरा दिस तकै छी। तरेरा हिलै, की छीपू। कोनो बेर फोंक जाइ, कोनो बेर माछ पकड़ा जाइ। दू-चारि टा टेंगरा-पोठी पकड़ा जाइ, तँ तकरा गोइठीक आगि पर पकाबी, ओकरा नोन-तेल द' साना बनाबी आ भात संग खा जाइ।

एक टा आर काज मनलग्गू रहै। अगहनक धनकटनी मे खेत जाइ। आँटी लेल जाइ। लोढ़ा-नोचा लेल जाइ। धानक बोझ जन काटै आ ऊघै। से बोझ रहै महखर (साझी)। लोढ़ा आ आँटीक धान रहै कोसल अथवा कोसलिया (व्यक्तिगत)। जमीन आ उपजा साझी रहै। सामान्य आवश्यकताक खर्च, मूड़न, जनौ आ विवाह-दानक खर्च साझी रहै।

अपवादस्वरूप किछु आमद-खर्च निजी रहै। घर मे खयबा काल थोड़ दूध-दही परसल जाइक। से रहै सझिया। दुखित पड़ला पर गाइक दूध उठौना पर लेब' पड़ै, से भ' जाइ व्यक्तिगत।

आमदनी सेहो अधिकांश साझी आ समगर्दा रहै। किछु निजी रहै। चारि दियादिनी रहथि माइ सभ। सभक नैहर एक रंग नइँ रहनि। कोनो पितिआइन केँ नैहर सँ किछु उपहार आ विदाइ भेटि जाइनि, से अतिरिक्त पाइ सूदि पर लगा देथि।

साझी हमर परिवार रहय, तथापि कतहु-ने-कतहु ओहि मे विभेद आ भिन्नताक बीज जीवित आ सुरक्षित रहै। माइ लोकनि मे एकता सँ बेसी विभेद आ डाह रहनि। पित्ती सभ मे विभेद सँ बेसी अभिन्नता आ अनुराग रहनि।

माइ लोकनि भानस करथि, से पार लगाक'। सात दिनक पार लगै। ताहि मे जकर पार रहै, से सात दिन-राति खटैत-खटैत मरि सेराय। ओहि मे माइ लोकनिक उदासीनता आ हृदयहीनता देखार भ' जाइनि।

छोट-छोट बात ल'क' देयादिनी सभ लड़ि जाथि। गारागारी होनि। उतराचौरी सँ तँ झगड़ाक पेनी छानले जाइ। जतबा घृणा आ कटुता रहनि, से उकटिक' राखि देथि। क्यो पुरुख-पात दमसा देथि, तँ शान्ति भ' जाय। कहियो तँ गारि-सरापक मौखिक युद्ध अनन्त आ अनादि जेना बुझाइ। भिनौजी लेल ई सभ आरंभिक संकेत रहय।

हमर पिता सहोदर चारि भाइ। हम सभ सहोदर भाइ आ पितिऔत मिलाक' नओ भाइ आ पाँच बहीन एक हंडा मे रान्हल भात शान्तिपूर्वक आ आनन्दपूर्वक खाइ।

नओ भाइक भैयारी मे दू समूह रहय। जेठ भाइ सभक समूह मे हम सभ चारि गोटे। चारू पितिऔत। सभ सँ छोट रही हम। सभ सँ जेठ सनफुल भैया (बाद मे नेताजी) हमरा सँ चारि बर्ख जेठ रहथि। मोटा-मोटी एक-दोसरा सँ एक-दू बर्ख जेठ अथवा छोट।

दोसर समूह मे जेठ रहथि सुशील। ओ हमरा सँ सात-आठ बर्ख छोट। दू भाइ सहोदर आ बाँकी सभ पितिऔत।

दुनू समूह मे सभ भाइक एक बेटा सम्मिलित रहनि। हमरा सभक भैयारी मे कटुता नइँ। प्रतियोगिताक भाव किछु छल, से बहुत क्षीण आ अदृश्य छल। साँझ मे हम सभ चारि भाइ पढ़बा लेल बैसी। पढ़ी अथवा लिखी। सबक बनेबाक काज करी। सभ गोटे भिन्न-भिन्न वर्गक छात्र। पोथी आ सबक साझी नइँ।

साझी रहै लालटेम। एक लालटेम चारू कात चारि गोटे। कस्सामस्सी भ' जाइ। दू गोटेक पोथी पर लालटेमक स्टैंड (खम्हैल)क छाह आबि जाइ। से बर्दाश्त करय पड़ै।

दू तरहक लालटेम अबै। एक छोट शीशा वला, दोसर पैघ शीशा वला। दू तरहक बाती अबै। एक टा कम चाकर, एक टा बेसी चाकर। दू तरहक मटिया तेल अबै। एक टा रहै रानीमार तेल। धुआँ दै आ सस्त रहै। दोसर रहै सोनामार तेल। रंगहीन। धुआँ नइँ दै, महग रहै। लोक लाइट (पेट्रोमैक्स) आ बड़का लालटेम मे सोनामार जराबय। काज-परोजन मे ई तेल खर्च करय।

रानीमार तेल लाल होइ। असल मे ई डिबिया मे जरै। तेँ एखनो धरि देहात मे किरासन तेल केँ डिबिया तेल आ मटिया तेल (माटिक तर सँ बहार होइ छै, तेँ) कहैत छै।

कम खर्च होअय, तेँ हमरा दलान पर छोटका लालटेम, तकर टेमी-बाती कम चाकर,

n कविता : जीवकान्त

बस्ती मे पवन

बेसी काल सूतल रहैए पवन
अनठौने बिता दैए भोरक भोर साँझक साँझ
जगैए तँ हेमचाबए लगैए गाछक मोटका डारि
मुदा दूभि पर ओ
कले-बले ससरल जाइए
खेलेबाक होइ छै मोन
तँ जगैए समुद्र पर
उठबैए विकराल हिलकोर
मथैत रहैए जलक गहिरै केँ
नोतैए पनिकौआ सभ केँ
उनटा बसात मे उड़बा लेल
पवन ओकरा पाँखि मे भरि दैए वज्रता

नचबाक इच्छा भेला पर
वायु डेरा खसा दैए पहाड़क बर्फ पर
सनसनाइत रहैए
कोनो ताल पकड़ैए
आ पहाड़ केँ कयने रहैए जीवित

बस्ती पर आबिक' पवन
मिझबैत रहैए छोट-छोट दीप
छोट दीपो केँ
लड़बाक ओ दृढ़ संकल्प द' पबैए

गर्दा मे लेढ़ायल समीर देखबाक हो
तँ पवन केँ तकैत चल जाउ
गामक बाट पर
ओत' ओ अनुपस्थित आ अक्रिय होअय
तँ चल जाउ मरुस्थलक आँगन मे
धूरा उठाक' अन्हरा देत

ओकर जगबाक समय निर्धारित नइँ
आ ने सुतबेक छै कोनो टाइम टेबुल
ओ अपनहि निर्णय लैए
बहुत बहैत-बहैत सहसा खसि पड़ैए
तहिना बहुत गुमकीक बाद
शब्दित होयबा लेल
दौड़ि जाइए समुद्र दिस

जीवन बदलैत रहैए सुधा केँ माहुर मे
शरीरक कन-कन जतबा जीबैए
निघटबैत रहैए अमृत केँ
सिरजैत रहैए माहुर केँ
बसात अछि जे समेटि लैए जहर-माहुर
से ल'-ल' पड़ाइत अछि जंगल दिस झाँखुर दिस
गाछक पात-पात मे चोरानुक्की खेलाइए
खेला क' बनबैत रहैए अमृत

तकर तेल रानीमार। लगले शीशा कारी लेहर भ' जाइ। सबेर छुट्टी भ' जाय।

देहात मे एखनो लोक कम इजोत करैए। इजोत करबा मे खर्च छै। नगदी खर्च छै। घर मे बड़ आवश्यक, ताहि ठाम एक डिबिया जरैत छै। जाहि ठाम समय काटि सकी, ताहि ठाम लोक अन्हार मे बहुत समय बिता लैए। पचीस टा दलान मे पाँच ठाम इजोत बरैत छै। आब दलान नइँ छै। बहार मे इजोत करब फिजूलखर्ची बुझाइत छै। राति मे नओ बजे धरि लोक रतुका भोजन क' लैए। ईहो एक टा अन्तिम इजोत मिझाक' ओछाओन ध' लैए। नओ बजे रातुक बाद एखनो गाम अन्हार-गुज्ज भ' जाइए। पहिने एहि सँ (आइ सँ) बेसी अन्हार-गुज्ज राति मे गाम सुतैत छल।

हमरा मोन अछि। एक टा लालटेम। ओकर चारू कात चारि भाइ बैसल। अपन-अपन पोथी मे बाझल। ककरो प्रति उदासीनता आ वैमनस्य नइँ। सभ लेल सद्भाव आ सिनेह। आब से सभ बात दुर्लभ भेल अछि।

जाह रे खेती, जाह!

स्कूल तँ हम सहपाठी सभक संग चल गेलहुँ। गुरुजी अकचकाइत पुछने रहथिन—ई के थिक? हमर सहपाठी जे कहलकनि, ताहि सँ ओ संतुष्ट भेलाह। हमरा बाप-पित्ती केँ ओ चिन्हैत रहथि। गामेक शिक्षक छलाह। एक समय छल, गामक लोक सभ केँ सभ चिन्हैत छल। सभक खोज-पुछारि करैत छल। भेट भेला पर सभ केँ पूछि-पूछि हालचाल लैत छल। कहियो काल वैमनस्य होइ, मुदा से देखाइत नइँ छलै। देखाइत छलै मेल आ अपनत्व।

आब तँ गामक लोक एक-दोसरा केँ ने तँ चिन्हैत अछि आ ने तकर प्रयासे करैत अछि। एक टा आरो संकट छै। जकरा ठीक-ठाक नोकरी भेटि जाइत छै, से नोकरी करबा लेल निकलि जाइत अछि। बच्चा सभ बाहरे जन्म लैत अछि, बाहरे पढ़ैत अछि, बाहरे नेना सँ जुआन होइत अछि। ओ बच्चा गाम आबय नइँ चाहैत अछि। आबियो जाइत अछि, तँ समस्त गाम ओकरा अपरिचित लगैत छै। अपरिचयक घनघोर जंगल मे ढुकब ओकरा अथाह आ असंभव लगैत छै। तहिना गामोक लोक केँ बाहर सँ आयल अपने समाँग अपन नइँ बुझाइत छै, कतहु समानताक एकहु टा जमीन नइँ भेटैत छै, जतय ओकरा संग ठाढ़ भ' घाराजोड़ी कयल जा सकैए।

गुरुजी पूछ-ताछ करय लगलाह। ओहो हमरा चीन्हय लगलाह। हमहूँ हुनक स्वभाव, हुनक तामस आ अपनैती सँ परिचित होअय लगलहुँ।

एक दिन ओ कहलनि, ''एकर नाम दाखिला बही मे लिखबै। फीस लेने अबिहें।'' फीस रहै संभवत: एक आना। ओ कहलनि,

बनि जाइए अमृतक धार
से ल' बसात अबैए बस्ती दिस

बच्चाक कोमलता मे बदलबा लेल अबैए
युवा शरीरक मादकता मे घटित होइए
बस्ती केँ बनौने रहैए जीवनक उत्सव
ओकर मरघट बनयबा सँ
अक्षुण्ण रखैए

धरती चाहैए जीवनक अभिघात नइँ होउक
धरती पोसने अछि छोट-छोट कृमि केँ
जे जीवनक उच्छिष्ट केँ घोँटैए
निर्विष करैए धरातल केँ

जलो अमृत केँ जुटबै मे रहैए व्यस्त
बनैत रहैए भाफ
बनैत बर्फ
पिबैए जहर
आ दुनू हाथें ढारैए अमृत

पवन गतिशील अछि
अमृत लेल ओरिऔन मे रहैए दौड़ैत
ओ आनए जाइए ओस
अनैए वृष्टि धारासार
कहियो अनैए हिमपात
कहियो धूरा-धूरा अंधकार रचि दैए

पवन जंगले-जंगल बौआयब करैए पसिन्न
पात सभ केँ खेलबैए
पात मे बीछैए अमृत
मुदा कखनो बौराह भ' जाइए
तँ धधकि उठैए जंगल मे
समस्त हरियरी, सभ फूल केँ
डूबा दैए आगिक ज्वाल मे
धधरा मे नवका-पुरना गाछ पहिरैए आगिक मौर
माटि पर चतरल धासो
ठाढे-ठाढ़ पजरिक' होइए छाउर
उड़ि जाइए अकाश मे

एहिना बिक्ख दाना बिछैत
अमृतक दाना छिड़िअबैत
बस्ती मे भरैत रहैए प्राणक शक्ति
धरती केँ बनौने रहैए कौआक पोछल-पाछल पाँखि
बनौने रहैए कोइलीक गीत
आम आ लीची मे भरैए गुद्दा
भरैए गाढ़-गाढ़ रस
दैए अद्भुत-अद्भुत खाद्य
अम्ल-तिक्त द्रव
मिसरी-मिसरी रस।



''एक आना माँगि क' लेने आबिहें।'' सैह भेल। हम अपन दोकान वला पित्ती सँ एक आना पाइ माँगल। ठीक सँ सम्हारिक' ल' गेलहुँ आ गुरुजीक हाथ मे ध' देल।

गुरुजी हमर नाम, हमर पिताक नाम पूछिक' बही मे चढ़ा देल। हमर जन्मतिथि ओ नइँ पुछलनि। ओ अटकर कयलनि, जे दिमाग मे अयलनि, से ओ लिखि देलनि। आइ कहि सकैत छी जे ओ जन्मतिथि घटाक' लिखलनि। साल-दू साल कम क' देलनि। कदाचित ई परोपकारक भावना रहल हो, जे नोकरी मे एहि सँ दू वर्ष अधिक सेवाक लाभ होयतै।

आइ ओ स्थिति नइँ छै। लोक विद्यार्थी केँ पढ़ाब' चाहैत अछि। पढ़ाइ मे खर्चा बहुत छै। डराडोरिक हरिड़ा ढील भ' जाइत छै। नेना पढ़ैत अछि, से मानि संतोख होइत छै। मुदा जखन-जखन ओकर फीस आ दोसर खर्च जोड़' पड़ैत छै, तँ देहक रक्त सुखा जाइत छै।

पहिल स्कूलक गुरुजी जे जन्मतिथि ओहि बही मे अंकित क' देलनि, से ब्रह्माक लेख भ' गेल। सम्पूर्ण पढ़ाइ आ सेवाकालक अंत धरि वैह जन्मतिथि रहि गेल, प्रामाणिक जन्मतिथि भ' सभ बेगरता मे काज करैत गेल।

आइ सोचैत छी, हमर अभिभावक व्यवहार मे चारि भाइ हमर पित्ती लोकनि छलाह। क्यो ने गेलाह।

एकर एक अर्थ छल पढ़बाक-पढ़ेबाक कोनो महत्त्व नइँ छल। ओ आवश्यक नइँ बूझल जाइत छल।

पढ़ाइ माने लोक बुझैत छल, अक्षर-ज्ञान भ' गेलै, पढ़ाइ भ' गेलै। चिट्ठी-पुर्जी लिख'-पढ़' आबि गेलै, शिक्षा पूरा भ' गेलै।

गाम मे खेती रहै। खेती सँ साल लागि जाइ। लोक बहुत धन नइँ चाहैत छल। जीवन-यापनो मे बहुत धनक आवश्यकता नइँ छलै। जीवन छलै से सादा जीवन। कतहु देखौआ चालि नइँ। झाँपि-तोपि क' लोक अपन आ बाल-बच्चाक पालन क' लैत छल। कहैत छल, कोन इनार-पोखरि खुनेबाक अछि? कोन बान्ह-छहर दिऐबाक अछि?

पूजा-पाठ मे दू अच्छर मंत्र पढ़य पड़ैत छलै, ताहि लेल गाम-गाम मे पुरहित रहबे करै। कोर्ट-कचहरी जाए पड़ै, तँ ओहि ठाम ओकिल-मुख्तार भेटि जाय। खेत मे धान रोपबा मे आ पाकल धान काटिक' खरिहान आनि जमा करबा मे जीवन बीति जाइक। एहि मे पढ़बाक कोन जरूरति रहै?

पढ़बाक मतलब लोक अफसरी अथवा ओकालति करब नइँ बुझैत छल। एकर कारण जे शिक्षा पहिनहुँ बहुत महग रहै, आइ असाध्य मगह छै।

देहातक लोक गामक स्कूल धरि पढ़ए। लोअर-अपर धरि पढ़य। एहि मे छोट नोकरी होइ। छोट स्कूल मे गुरुजी भ' जाय, पढ़ौनीक

काज करय। शिक्षक सभ कैँ पहिनहुँ गरीब आ विपन्न बूझल जाइत रहै।

जकरा खेत रहय, से खेती करय, खेती करबा मे गौरव-बोधक अनुभव करय। स्वाधीन रहय। माथ उठाक' चलय।

खेत रहै, तँ नोकरी करबाक बात मोन मे नइँ अबै। नोकरी छोटहा काज बुझाइ। सेवा। सेवा कैँ घृणित बूझल जाइ। एक टा लोकोक्ति रहै—उत्तम खेती, मध्यम बान। निखिध चाकरी, भीख निदान।

नोकरी मे सभ सँ पैघ घाटा रहै, गाम छोड़य पड़ै। गामक सुखक वर्णन नइँ हो, अपना खेत मे अपना हाथेँ उपजाओल चाउर, अपन महीसिक दूध-दही, अपना पोखरिक माछ, अपना गाछीक कलमी-सरही आम। हाय रे गाम! वाह रे गाम!

परदेशी पूत वंश लेल अधलाह भेल। कहल जाइ—जे पुत्तर परदेशी भेल, देव पितर दुनू सँ गेल। परदेशी बेटा देवता आ पितरक पूजा नइँ करैए। दुनू ठाम सँ ओ बहिष्कृत भ' गेल।

खेती मे बहुत सुरक्षा छलै। नोकरी करय लोक बाहर चल जाइए, कखनो काल ओकर जीवन असहाय आ अधलाह भ' जाइत छै। जे अनकर सेवा मे जीवन लगा देने अछि, से पराधीनता आ परवशताक अनुभव करैत अछि।

शिक्षाक प्रचार भेला सँ, नोकरी मे गेला सँ पुरान गामक आचार-विचार, हँसी-खुशी, निश्चिन्तता आ सुरक्षा तहस-नहस भ' गेल अछि। गाम मे बूढ़ा-बूढ़ी, कमजोर आ परमुखापेक्षी। बेटा-पोता छनि, तँ हजार कोस दूर मे कतहु हाकिम छनि आ सम्पन्न छनि। विचारी, तँ नोकरीक प्रचलन भेला सँ परिवार टूटल अछि। दुखदायी समस्या सभ उत्पन्न भेल अछि। लोक बहुत उपेक्षा आ दुर्बलताक जीवन जीबि रहल अछि।

घरक मालिक रहथि दीनाबाबू। हमर जेठ पित्ती। छोट-खाँट मनुक्ख। कम बाजथि। बाजथि से अनमोल। लिखय नइँ अबनि। प्राय: पढ़हु नइँ अबनि। तुलसीदासक रामायणक बहुत प्रेमी रहथि। कदाचित रामायण अटकर सँ पढ़ि लेथि।

चारि भाइक भैयारी मे सभ सँ जेठ। छोट तीनू भाइ हुनक बहुत लेहाज करनि। गामक एक मुँहपुरुख छलाह। पाँच टोल रहै गाम मे। हर टोलक एक मुँहपुरुख होइ। गाम स्तरक पंचैती अथवा बैसार मे मुँहपुरुखे सभ बैसथि। फैसला जे होइ, से न्यायसंगत आ तर्कसंगत। तेँ ई फैसला सभ सर्वमान्य होइक।

हिनका हम सभ 'बाबू' कहियनि। हिनका सँ छोट हमर पिता रहथि। सभक लेल ओ 'लाल कका' छलाह। तेसर भाइक नाम करिया काका। सभ सँ छोट 'पढ़ुआ कका'—लोअर अपर धरि पढ़ने। छोट-सन दोकानक गद्दी पर बैसि किरानाक दोकनदार। क्यो एक पाइक कड़ू तेल लेब' अबनि। क्यो माछ मे पीसिक' देबा लेल एक पाइक जीर-मरीच लेब' आबय। दोकान मे मँगनी किछु देब' पड़ै। क्यो कहै, एक टूक सुपारी दैह, पढ़ुआ कका। क्यो कहै, एक ठोप तेल दैह, माथ मे लेब। ओ कड़ू तेलक टिन मे कोइया (लोहाक) डूबाबथि, आ ओकरा तरहत्थी पर आधा कोइया तेल खसा देथि। क्यो कहनि, एक टा बीड़ी पीबा लेल दहक गिरहथ।

बाबू कैँ टका रहनि, से नइँ पता। काठक बड़का सन्नुक रहै। ताहि मे बड़का ताला रहै, जे गामक लोहार बनाक' देने रहै। तकर एक टा कुंजी रहै, ओकरा बाबू डोरी सँ बान्हि डाँड़क डोराडोरि मे लटकौने फिरथि।

व्यापक आ आदरणीय लोक रहथि। बिना महादेवक पूजा कयने नइँ खाथि। दुपहरि मे क्यो परिचित-अपरिचित आगत-अभ्यागत आबि जाइक, तँ ओकरा खुऔलाक बादे खाथि।

लोअर स्कूल मे क्यो अनगौआ शिक्षक आबथि आ गाम मे डेरा करबाक चर्चा करथि, तँ बाबू ओहि शिक्षक कैँ अपना ओहि ठाम अरिआइत कैँ ल' आबथि। राति-बिराति कोनो जातिक अतिथि दरबज्जा पर आबि जाइ, आ ओ आश्रय माँगै, तँ ओकरा टारबाक बात नइँ करथि। ओकरा सादर भोजन करा देथि आ विश्राम करबाक जगह देखा देथि।

माछ खायब प्रिय रहनि बाबू कैँ। भातक संग माछ खायब आ से नित्य खायब आ ताहि लेल माछक जोगाड़ क' लेब हुनका हाथक बात रहनि। हमरो सभ हुनक एहि स्वभाव सँ लाभ मे रही। बेसी काल माछ-भात घर मे खयबा लेल भेटि जाइ। एहि भोजनक प्रशंसा मे एक लोकोक्ति कहिओ काल सुनिऐ—'माछ, भात, पाँच हाथ।' एकर अर्थ यैह लागय जे माछ भात सँ उत्कृष्ट भोजन आन नइँ। एक टा कोठी रहै। ओहि मे अगहने मे धान भरिक' राखल जाइ। माछवाली आबै, ओकर माछ तौला लेल जाइ, आ माछक बेच ओही कोठीक धान सँ देल जाइक। जहिया कहियो माछवाली नइँ आबै, तहिया एक टा जलिया बजाओल जाय। ओ पोखरि मे काते-कात जाल फेकि दू सेर माछ पकड़िक' द' दैनि। दरबज्जाक आगाँ अपन पोखरि रहनि, तेँ माछ खायब आ खयबा लेल माछ उपरायब संभव रहनि।

पोखरि छैके। माछो ओहि मे पोसाइ छै। पट्टीदारी बहुत भ' गेल छै। माछक व्यवस्था ठीकेदारक हाथ मे छै।

बाबूक मोन खराब भेलनि। एक बेर उठाक' हम हुनका लहेरियासराय ल' गेलहुँ। एक नीक डाक्टर सँ हुनका देखाओल। डाक्टर मना क' देलथिन जे माछ नइँ खाथि, आ जँ खाथि, तँ बिना तेल-मशालाक खाथि। बाबू डाक्टर कैँ जे कहलथिन, से हमरा एखनो मोन अछि। ओ कहलथिन, ''आर जे कहू, माछ नइँ खयबाक बात हम अहाँक नइँ मानब। हमरा वंश मे एक श्राप छै, जे माछ खायब छोड़ि दैए, से नइँ जीबए। हम मरि जाइ, से कबूल, मुदा हम माछ खायब नइँ छोड़ब।''

आ ओ सैह करबो कयलनि। जाधरि जीबैत रहलाह, माछ-भात खाइत रहलाह।

बहुत दीर्घजीवी भेलाह बाबू। देखबा मे कमजोर आ रोगाह लागथि, मुदा ओ सत्तरि बर्ख सँ बेसी जीवित रहलाह। हुनका सँ पहिनहि हुनका सँ छोट तीनू सहोदर भाइक देहान्त भ' गेल। तीनू गोटे आकस्मिक रोगक चपेट मे पड़ि प्राय: अल्पवय मे मरि गेलाह।

सभ सँ पहिने हमर पिताक मृत्यु भेलनि। असाध्य रोग आ तकर पीड़ा भोगिक' ओ मुइलाह। हुनकर मृत्युक पछाति भिनाउज आ बाँट-बखरा भेल। आँगन आ दलान जे फैल आ सोहाओन लगैत छल, सम्पन्नताक झलक देखबैत छल, से खण्ड-पखण्ड भ' गेल। एकाएक एक सम्राज ध्वस्त भ' गेल आ छोट-छोट कूड़ी ल'क' रहैत लोक गरिमा-विहीन भ' गेल।

बाबू पढ़बा-पढ़ेबाक विरोधी नइँ छलाह, खेतीक काज छोड़बाक विरोधी छलाह। तकर अनेक प्रमाण मे एक प्रमाण हम एहि ठाम देब' जा रहल छी।

सभ भाइ मे पहिने नोकरी करबा लेल हम बहरायल रही। ओहि मे बाबू हस्तक्षेप करैत कहलनि, ''नोकरी नइँ करह। नइँ जाह। हमरा कुल-खूट मे एखन धरि क्यो नोकरी नइँ कयलक अछि।''

हम चुप भेल रही। उत्तर देब' नइँ चाहैत रही, मुदा जयबा लेल डेग उठा देने रही।

ओ बहुत आशंकित भेल कहने रहथि,

''खेती नइँ छोड़ह। ई प्रतिष्ठा थिक। खेती छोड़िक' चल जेबह, तँ तोहर खेती कमजोर भ' जयतह, आ हमहूँ सभ कमजोर भ' जायब, हमरो सभक खेती कमजोर (नष्ट) भ'जायत।''

बापक मुइलाक बाद भिनाउज भेल। भिनाउजक बाद हमर खेती हमरा हाथ मे आयल, बाबूक हस्तक्षेप नइँ रहलनि। हम पढ़बा लेल गाम सँ बाहर एक कओलेज ध' लेल। एहि बीच हमर हीसाक खेत जन-हरवाह देख' लागल।

बाबू जे बात कहलनि से अक्षरश: मिलैत अछि। हम नओ भाइ मे नबो भाइ नोकरी-चाकरी ध' लेल, खेतक आरि पर जायब आ खेती लेल पसेना आ रक्त बहायब छोड़ि देल। आइ खेती दुखदायी आ संतापक कारण भेल अछि। हमरा नबो भाइ केँ पेंशन भेटैत अछि, तेँ कुरता मे नील-टिनोपाल पड़ैत अछि, अन्यथा जतबा जमीन सँ आय होइत अछि, सैह टा आमदनी रहैत, तँ हम सभ अन्न-अन्न क'मरि जइतहुँ।

ई बात हमरे घराएन (घरैन) मे भेल अछि, से नइँ। पूरा गामक जोतदार (एवं जोतहीन) किसान गामक स्कूल मे पुत्र-पौत्रादि केँ पढ़ा की देलक, जे सभक खेत-पथार जायब छूटि गेल। जे गामो मे नोकरी करैत अछि, अथवा छुट्टी पर मास-दू मास पर गाम अबैत अछि, ओहो सभ खेतक आरि दिस नइँ जाइत अछि।

अनेक धंधा (जीविका) एहेन अछि, जकरा संग दोसर धंधा नइँ चलाओल जा सकैत अछि, ताहि मे खेती प्रधान अछि। खेतीक संग नोकरी नइँ कयल जा सकैत अछि। नोकरीक संग अहाँ छोट-छोट (अर्थात पार्ट टाइम) काज क' सकैत छी, मुदा खेती नइँ क' सकैत छी।

खेती मे घाटा छै। आमदनी कम छै। गरीबी आ अभाव दबने रहैत छै, तथापि ओहि मे काज बहुत छै, एक दिनक छुट्टी नइँ छै, एक घंटाक छुट्टी नइँ छै।

मुदा, खेती मे गरिमा छै। अहाँ मालिक छी, अहाँ राजा छी।

खेती करैत अहाँ गाम मे रहैत छी। गामक एक आइडेंटिटी (अस्मिता) छै, तकर अहाँ रक्षा करैत छी।

एहि धंधा मे परिवार संयुक्त रहैत अछि। एक संग दू-तीन पीढ़ी (जेनरेशन)क लोक रहैत अछि। एक दोसराक संग जीबाक अवसर भेटैत छै, एक दोसराक सहायता-उपकारक अवसर रहैत छै। एहेन परिवार मे बच्चा सभ केँ बहुतो लोक अल्लो-मल्लो कयने रहैत छै, बूढ़ सभ केँ एकान्त आ अनाथ भ' जीबाक पीड़ा नइँ भोग' पड़ैत छै।

कहल जाइत अछि, जे नोकरी करैत अछि, ओ अनकर सेवा मे अछि। बेगरता पर एहनो होइत अछि जे छुट्टी पर जयबाक सुविधा नइँ भेटैत छै। एहने लोक जीविते मे मृत थिक। ओकर जीवन आन दृष्टिएँ कतबो झलकैत होऔ, ओकर पर-वशता ओकरा हीन कोटिक (जेना जीविते मे मृत) मनुक्ख बना दैत छै।

बाबूक दू बेटा। सभ सँ जेठ सनफुल भैया (उर्फ राजेन्द्र झा) नेता भ'गेलथिन। मैट्रिक धरि पढ़ियो नइँ सकलाह। सूरज नारायण सिंह आ देवनारायण गुरमैताक संग तत्कालीन समाजवादी (सोशलिस्ट) पार्टीक कार्यकर्ता भ' गेलाह। हमरा सभक चुनाओ क्षेत्र (फुलपरास) मे ई पार्टी बहुत सबल छल। कांग्रेसक वर्चस्व एहि ठाम आजादीक पाँच-सात बर्खक बादे समाप्त भ' गेल।

भैया (हिनका आदर सँ हम सभ एही नाम सँ संबोधित करैत रही) कहियो खेत नइँ गेलाह। सोशलिस्ट पार्टी केँ लोहियाजी ब्राह्मण-विरोधी बना देलनि। ओ पार्लियामेंट मे आ पार्लियामेंट सँ बाहर गैर-ब्राह्मणवादक लक्ष्य एहि पार्टी केँ देल आ ताही अनुसार पार्टी केँ चलाब' लगलाह।

उत्तर भारत मे लोहियावादक असरि बहुत छै। एहि भूभाग मे ब्राह्मण सभ राजनीतिक अक्षोप (अस्पृश्य) भेल अछि। लोहियाक गैर-ब्राह्मणवाद एहि ठाम गाम-गाम मे प्रभावी भ' गेल। हुनक दोसर सूत्र रहनि गैर-कांग्रेसवाद, सेहो सफल भेल। हिंदी पट्टी मे, समस्त उत्तर भारत मे कांग्रेस केँ जड़ि सँ उखाड़ि फेकबा मे ई गैर-कांग्रेसवाद सफल भेल आ एहि ठामक राजनीतिक मूलाधार भ' गेल।

कर्पूरी ठाकुर मुख्यमंत्री भेलाह। तकर बाद विधायक बनबाक रहनि, तँ ओ फुलपरासे सँ चुनाक' गेलाह। एहि ठामक दोसर एम.एल.ए. धनिकलाल मंडल जीतिक' गेलाह, तँ पटना मे विधानसभाध्यक्ष भेलाह, जीतिक' दिल्ली गेलाह, तँ केन्द्रीय मंत्री आ राज्यपाल भेलाह।

एहि सभक कारण भेल लोहियावाद।

जाति आधारित राजनीतिक बीजारोपण राममनोहर लोहिया कयलनि। जे एखनो झमटगर गाछ जकाँ जीवन्त आ चिरजीवी अछि।

ओना एहि ठाम सँ योगेन्द्र झा (जोगी बाबू), आ शिवचंद्र झा कांग्रेस केँ हराक' एम.पी. भेलाह।

तथापि सोशलिस्ट पार्टी टुटैत गेल। कहियो संसोपा, कहियो प्रसोपा, कहियो दमकिप्पा, कहियो जनता दल (जद), कहियो जदयू, कहियो राजद होइत रहल आ राजनीतिक लाभ मे अवसरवादी राजनीति करैत रहल।

भैया सभ केँ सोशलिस्ट पार्टी मे बहुत असौकर्य भेलनि। सूरज बाबूक संग यात्रा शुरू कयने रहथि, उत्कर्ष काल मे ओ अशोक मेहताक समर्थक भ' गेलाह। अशोक मेहताक जखन प्रसोपा मे प्राण अवग्रह मे पड़लनि, तँ ओ अंत मे कांग्रेस मे शरणापन्न भेलाह। हमर जेठ पितिऔत भाइ, नेताजी, अन्त मे कांग्रेसी भ'क' अपन केरियर (जीवनोपलब्धि) आ जीवनक अन्त कयलनि। हम हुनके जीवन मे देखल जे मिथिले मे नइँ, बिहारे मे नइँ, समस्त उत्तर भारत मे राजनीति धड़फड़ी मे, अवसरवादिता मे, कोन प्रकारेँ समाजक सामूहिकता केँ, सभ लेल अवसरक समानता केँ, नष्ट कयलक आ जातिक आधार पर प्रतिभा केँ उपेक्षित कयलक।

कोदारि पारबा मे फस्ट

बाबू (हमर जेठ पित्ती) सँ छोट छलाह हमर पिता। सभ, अर्थात हमर सभ पितिऔत भाइ बहिन हुनका कहनि, 'लाल कका।' हम सहोदर भाइ-बहिन सेहो सभक देखादेखी हुनका एही नाम सँ सम्बोधित करैत रहियनि। ई रूढ़ि गामक सभ संयुक्त परिवार मे एहिना आ एकरंगाह रहै। एहि मे आश्चर्यक बात नइँ रहै।

बाप हमरा कहियो बड़ दुलार कयलनि, अथवा बड़ कोड़ा-काँख लेलनि, अथवा गरदनि पर बैसाक' दुर्गापूजाक मेला देखाब'ल' गेलाह, से सभ स्मरण नइँ अछि। संयुक्त परिवार मे एहि प्रकारक लाड़-दुलार संभव नइँ छलै। जँ क्यो कोनो पिता अपन पुत्र केँ पीठ पर लादि 'बकझों, बकझों, बकझों, नून लेबए हइ' खेलइतथि, तँ हास्यास्पद भ' जइतथि। तेँ कोनो बाप अपन संतान केँ परिवारक समक्ष सिनेह-आवेश नइँ देखबैत छलाह। दोसर कारण रहै, हमरा बाप केँ कोदारि पारय अबनि, ताहि मे फस्ट छलाह। धानक बीया उपाड़य अबनि, धान रोपए अबनि, धानक बोझ उठाक' जनक माथ पर धराबए अबनि, ओ से सभ करैत छलाह। भोर सँ साँझ धरि खेतक आरि, खेतक माटि आ खेत मे लागल जजातिक सेवा आ ओगरबाही करैत ओ दिन बिता दैत छलाह। तेसर कारण रहै, हमरा

सभ भाइ बहिन प्राय: संख्या मे एक सोड़हि रही, ककरो एक टा लाइ कीनि क' देबै, से वांछनीय आ धर्म सम्मत नइँ रहै। जखन कहियो मूढ़ीवाली सहुआइन अबै, तँ ओकरा सँ एक पथिया मुढ़ी आ एक पथिया लाइ कीनल जाइ जाहि सँ सभ केँ एक समान आ एक रंग फक्का भेटि जाइ।

गाम मे हमर परिवार खेतिहर रहय। दर-दियाद, भर-भगिनमान मिलाक' बीस गोट कमासुत जुआन एक मरण-जीवन मे संग रहय। साल मे एक-दू बेर मारि बाझि जाइ। लाठी खटखटाबए पड़ै। हमरा सोझाँ मे जमीनक आरि-धूरक विवाद पर लाठी बहार भेलै आ दुनू दिस कपड़फोड़ी भेलै। एक पक्ष जँ थाना कचहरी गेल, दोसरो पक्ष केँ थाना कचहरी जाय पड़ैत छलै। साल-दू साल मोकदमा मे हाजरी देब' पड़ैत छलै। फेर सुलह-सुलहनामा लगा देल जाइ छलै। ई सामान्य बात छलै घर-घर मे विन्ध्याचली लाठी (विन्ध्याचल मे कीनल गेल लाठी), गड़ाँस, फरसा आ भाला जोगिक' राखल जाइत छलै।

गामक दलान मे दस-बीस गोटे सोंफ (बड़का पटिया) ओछाक' सुतैत छल। दस टा घैल राखल रहैत छलै। दलान मे तीन दिस टाट अथवा देबाल रहैत छलै। चारिम दिस फूजल। चोरक हल्ला भेल, राति-बिराति अगिलग्गीक हमला भेल, कतहु विवाद फँसि गेल, आ बढ़ि गेल, तँ बीसो गोटे छड़पि क' बाहर आबि गेल। अगिलग्गी रहै, तँ घैल ल'क' दौगल। मारि-दंगा, चोर-बदमाश रहलै, तँ डेढ़हत्थी ल'क' छूटल, आ कर्णवेधी ललकारा दैत बिढ़नीक दल जकाँ एक संग छूटल।

हमर बाप एहि सभ विद्या मे कुशल आ साहस मे आगू छलाह।

कहल जाइत छल जे ओ पाँच हाथक जवान छलाह। गोर-नार। सुन्दर। देखबा मे सुभग। मुदा अल्पजीवी भेलाह। अपन भैयारी मे सभ सँ पहिने दिवंगत भेलाह। हम चारि भाइ-बहीन। हम जेठ। हम जखन तेरहम-चौदहम बर्ख मे रही, सभ सँ छोट, हमर छोट भाइ तीन-चारि बर्खक रहय, तखन ओ अपन इहलीला समाप्त कयलनि। तँ हुनकर दुलार-मलार, सिनेह-उपेक्षा हमरा सभक भाग्य मे नइँ छल, आ जँ किछु छल, तँ से अल्प छल।

एतबा टा परिवार मे हमरा प्रति सभ केँ अतिरिक्त स्नेह छलै। सुनै छी, हमर जन्म सँ पूर्व हमर एक भाइ जनमल छल, जे डेढ़ बरखक छल, तखनहि टूटि गेल, तँ हमरा प्रति बाप आ पित्ती, आ कही तँ समस्त परिवार अतिरिक्त कृपालु छल। हमरा संग अतिरिक्त कोमलता देखाओल जाइत छल।

बहुत कम बात मोन अछि। एक टा बात मोन पड़ैत अछि, हमर बाप अपना कोरा मे उठोने टोले पर छला, दरबज्जा पर नइँ छला, तखने 'मार-मार, घेर-घेर, कही, फड़िछा ले'क हल्ला भेलै। ओ हमरा कोड़ा मे उठौनहि ओही ठाम सँ ललकारा देब' लगलाह, ''के थिकै, जाय ने दही, मार-मार।''

हम हुनक कोर मे हुनका बजैत देखी। अद्‌भुत आ अभूतपूर्व लागल। छातीक धड़कन तेज भ' गेल रहनि, तकर आवाज सुनी आ कम्पनक अनुभव करी। ओ कूदथि, तँ हम संग लागल कुदा जाइ।

हुनका संग रहबाक जे प्रखर आ भयानक अनुभव सभ अछि, से हुनक बीमारीक अछि, बीमारीक बढ़ैत जयबाक कथाक अछि, बीमारीक संग हुनक जीवनक पटाक्षेपक अछि। बहुत संतापदायक आ त्रासद अनुभव जे बहुत दिन धरि मोन रहल, हमरा भाइ-बहिनक जीवन केँ उदास आ भयावह क' देलक। ओ बहुत साफ मोन अछि, से मुदा वर्णनातीत अछि। हम जतबा भोगने-देखने छी, से क्यो कथी लेल सुनत, आ कथी ले' ओ ककरो सुनबा योग्य होयतै।

तीस-पैंतीस बर्खक वयस रहल होयतनि। एकाएक पेट मे दर्द उठलनि। गामे मे महराजी अस्पताल रहै। अस्पतालक डाक्टर परामर्श देलनि, लहेरियासराय अस्पताल ल' गेल जाथि।

घोगड़िया मे रेल स्टेशन पर हुनका गाड़ी चढ़ाओल गेल। पाँच-सात टा सेवक संग गेलनि। ओहि मे हमर ड्यूटी लागल। ढेरबा रही। तेरह बर्खक ढेरबा। स्कूल जाइत रही। आर सभ सेवक औंठाछाप। दरभंगा स्टेशन पर हुनका स्ट्रेचर पर उतारल गेल। दरभंगा स्टेशन मास्टरक फोन सँ अस्पतालक इमर्जेंसी केँ एम्बुलेंस पठाब' लेल कहल गेल।

एम्बुलेंस पर चढ़ि कारणी अस्पताल गेलाह। डाक्टर कहलकनि पेटक ऑपरेशन होयतनि। सर्जिकल (शल्यचिकित्सा) वार्ड मे बेड देलकनि। राति मे दस बजेक पहिनहि हुनक शल्य-क्रिया क' अस्पतालक लोहाक खाट पर ध' देलकनि।

कारणी राति भरि बेहोश। ताहि लेल दू गोट सेवक निर्देशानुसार खटैत। भोर मे होश अयलनि।

कहल गेल छल, पेट मे अँतड़ी ओझरा गेल छलनि। तँ प्राणान्तक पीड़ा होइत छलनि।

दोसर दिन मध्याह्न मे बड़ा सर्जन निरीक्षण मे अयलाह। रोगी केँ उनटाक' देखल गेल। पोन पर नीलवर्ण चाम भ' गेल रहनि।

डॉक्टर अपन सोझा मे हुनक पोन पर स्पिरिटक मालिश करबौलनि आ प्रभावित भाग पर टेल्कम पाउडर सन कोनो चीज प्राय: बोरिक एसिड रगड़बौलनि। रतुका आ भोरुका ड्यूटी पर रहल हाउसमैन आ नर्स पर ओ अपन अप्रसन्नता प्रकट कयलनि।

डॉक्टर अपन काज कयलनि। जकर जान सँ खेलबाड़ भ' गेल छलै, से अर्ध-जीवित पड़ल छलाह।

हमर आ हमर माय आ भाइ-बहिनक—सभ भविष्य संकटपूर्ण आ निराशाजनक भ' गेल। ओहि समय हम नइँ बुझैत रही, आ किछु बुझैतो रही, तँ अपन भाग्य केँ दोख देबाक अतिरिक्त आर की क' सकैत रही।

आठ-दस राति जागिक', अस्पतलाक भीतर रहिक' देखल। अस्पतालक भीषण गंधक अनुभव भेल। जीवन आ मरण तराजूक दू पलड़ा जकाँ झुलैत देखायल। कखनो जीवनक पलड़ा नीचाँ होइ, कखनो मरणक पलड़ा।

शल्य चिकित्सा विभाग मे हड्डी टूटल लोक सभक टाँग केँ लटकाओल, दोसर दिस पजेबाक टुकड़ी बान्हिक' लटकाओल देखल।

निद्रामग्न राति मे नर्सवला ड्यूटी रूम मे जाइ, काज भेला पर गर्म पानि माँगिक' आनी। नर्स सभ केँ ओंघाइत अथवा अलसाइत नइँ देखलिऐ। ओ चार्ट देखिक' इंजेक्शन देबा लेल रातुक पछिलो पहर मे रोगी धरि पहुँचि जाय। शरीर मे थर्मामीटर लगाक' टेम्प्रेचर चार्टपर तापमान अंकित क' बहरा जाय।

मृत्यु जकर होइत छै, तकर जे क्षति होइत छै, ओकर परिवारक जे अनिष्ट आ दुर्भाग्य होइत छै—अस्पतालक संपूर्ण तंत्र आ अस्पतालक सैकड़ो कार्यकर्ता एहि वेदना आ सम्वेदना सँ असंपृक्त छल।

ऑपरेशनक घाओ ठीक भ' गेल। पोन परक बेड-सोर (ओछाओन पर पड़ल रहने मांस सड़ला सँ भेल घाओ) बढ़ैत गेल। फेर ज्वर आब' लागल। अस्पताले मे अनुसंधान क' घोषित भेल जे रोगी राजयक्ष्मा सँ पीड़ित भ' गेल।

अस्पताल सँ बाहर एक टटघर किराया पर लेल गेल। ओहि ठाम हमर जेठ पितिआइन

दू बेर भातक हंडी उतारथि। पाँच-सात गोटे खाय। नहाय आ सूतय। खर्चा होइत गेल। बहुत खर्चा भेल। औकाति सँ बेसी खर्चा भेल।

अस्पताल सँ पुर्जी काटि देलक। बाहरक डेरा मे रोगी आबि गेल। दरभंगाक पैघ आ यशस्वी डाक्टर केँ बजा घाओ आ ज्वरक इलाज लेल निवेदन कयल गेल। आबथि, ड्रेसिंग क' जाथि। हुनक लिखल सुइ आ गोटी चलय लागल।

घाओ आ ज्वर मे सुधार नइँ भेल। दरभंगाक डाक्टर परामर्श देलनि, रोगी केँ गाम ल' जाउ। घर-आँगन सँ अलग स्थान मे हिनका राखब। जे दवाइ लिखल, से कीनिक' खोआयब। कोनो कंपाउण्डर सँ रोज घाओक पट्टी बदलबायब। इत्यादि।

रोगी आबि गेल। हमर पित्ती लोकनि हुनका मालक घर मे एक कात चौकी देलनि। ओहि घर मे हमरो एक टा खाट लागि गेल। राति-दिनक परिचर्याक भार हमरा देल गेल।

घाओक ड्रेसिंग होइत रहल, तथापि घाओ घटैत-घटैत बचल रहल। ज्वरक सुइ पड़ैत छल, तथापि ज्वर नइँ छूटल।

राति मे हमर ड्यूटी लागए। दिन मे थोड़बा काल लेल स्कूल जाइ। शेष समय हुनके दिनचर्या मे मदति लेल उपस्थित रही।

पढ़बाक आदति रहय। किताब माँगिक' आनी। एक टा सीनियर विद्यार्थी रोज एक टा उपन्यास देथि, घर मे बाप अथवा अन्य आदमी पढ़ैत रहनि। उपन्यास रहै चहटगर। लेखक होइ—कुशवाहा कान्त। लेखकक फोटो छपै। कारी चश्मा लगौने एक टा पुष्ट युवकक फोटो। तेहने पोथी रहै। जे, लगातार पढ़ैत जाइ, खतम होइ, तखने पढ़ब छूटय।

बाप बुझलनि रोग सँ ओ मुक्त नइँ होयताह, फेर ठाढ़ भ' सामान्य जीवन नइँ बीता पौताह। ओ हमरा कहलनि, अहाँ हमरा पढ़ब सिखाउ।

हम प्रयत्न कयल। बच्चावला पोथी आनिक' देखबैत गेलहुँ—अ सँ अनार, आ सँ आम...

हमरा कहलनि—सुन्दरकाण्ड रामायण आनि दिअ। हम आनल। आधा-छीधा रामायण हुनका कंठस्थ रहनि। पोथी सँ अभ्यास कयलाक बाद ओकर पाँती सभ पढ़ए लगलाह। पोथी पढ़थि आ कानय लागथि। नोर सँ गाल भीजि जाइनि। उच्चारण संग पढ़थि, तँ सुनाइ जेना क्यो विलाप करैए, कविता-पाठ नइँ करैए।

कानल रहय ई नेना

सत्तरि बर्खक उमेर मे हम एक दिन स्थानीय डाक्टर केँ कहल—राति मे लघी करबा लेल दू-तीन बेर उठए पड़ैए। ओछाओन पर सँ उतरू, की लघी वश सँ बाहर भ' जाइए। बाथरूम जाइत-जाइत आधा लघी बाटे मे भ' जाइए।

ओ पूछलनि—कतबा दिन सँ ई पराभव अछि?

हम कहलियनि—एखन बढ़ि गेल अछि। कतेक बर्ख सँ अछि, से कहब कठिन अछि। दस बर्ख पहिने शुरू भेल होयत। तखन ततबे रहय, जे बहुत कष्टकर नइँ। कष्ट होअय, तथापि ओकरा अँगेजने गेल रही।

स्थानीय डॉक्टर एके ठाम पालो पटकि देलनि। कहलनि, ''एहि ठाम नइँ ठीक हैत। बाहर जा देखाउ। जायब, तँ शीघ्र जाउ।''

समवयस्क सभ कहलनि, ''ऑपरेशन सँ ठीक होयत। फेर प्रोस्टेट ग्लैंड बढ़ि जायत, तँ फेर ऑपरेशन कराउ। एक टा लेखक मित्र कहलनि जे ऑपरेशन बेकार, ओ चारि बेर एकर ऑपरेशन करा चुकल रहथि। तथापि मुक्त नइँ भेल रहथि।''

ऑपरेशन नइँ कराबय चाहैत रही। डाइबिटीज दस बर्ख पहिने पकड़ा गेल रहय, तकर नियमित दवाइ खाइत रही।

अनेक लोक परामर्श देल जे होम्योपैथ सँ देखाबी।

पटना मे प्रसिद्ध होम्योपैथ भट्टाचार्य सँ देखाब' गेलहुँ। ओ हमरा देखिते हँसय लगलाह, पुछलनि, ''एना नाँगड़ किऐ छी?'' हम कहल, ''पन्द्रह बर्ख सँ ठेहुन धयने अछि, नइँ ठीक होइए। बढ़ले जाइए।''

ओ हमर अवस्था पुछलनि। हम कहलनि, ''सत्तरि बर्ख।'' एहि पर ओ आर हँसलाह। ओ कहलनि, ''देखू, हम अहाँ सँ तेरह-चौदह बर्ख जेठ छी। एखनो ठेहुन दुरुस्त अछि।''

हम हुनका दिस देखल। लाल रंगक बबाजी वला ढील कुरता। नीचाँ प्रायः लाल रंगक लुंगी पहिरने रहथि। निचला भाग टेबुलक पाछाँ रहनि, नइँ देखाइत रहनि।

ओ कह' लगलाह। बिहारी सभ अपन चालि नइँ छोड़ैए। (अर्थात आहार-विहार सँ रोग बेसाहैए।)

ओ कहलनि, ''इलाहाबाद मे कुंभ मेला लगलै। वातावरण साफ रहै, तँ मेला दिस सँ अस्थायी शौचालय सभ बना देलकै। बहुत लोक शौचालयक उपयोग करय। किछु लोक तकर उपयोग नइँ करय। ओकरा सभ केँ मेला प्रशासन धयलक। तीर्थयात्री सभ कहलकै, हम सभ देहाती छी, एहिना गामो मे खेत मे, खुला स्थान मे बैसिक' निवृत्त होइत छी। हुनका सभ पर कड़ाइ भेल। बाहर मे नइँ, शौचालय मे बैसू।''

ओ सभ बिहारी रहथि। ओहि समय देशक राष्ट्रपति रहथि देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद। हुनका लग तीर्थयात्री सभ अपन कष्ट कहल। राष्ट्रपति तुरत एकर निवारण करबा लेल मेला समिति सँ सम्पर्क क' कहल, ''बिहारी सभ शौचालयक उपयोग नइँ कयलक अछि। जे कहियो एकर उपयोग नइँ कयलक अछि, तकरा सभ केँ छूट देल जाय।''

डॉक्टर भट्टाचार्य वातावरण केँ एकदम हँसी-मजाक वला बना देलनि। अनौपचारिक बना देलनि।

हमरा नवका सर्दी भेल रहय। हम जेबी सँ रूमाल बहार कयल आ नाक पोछल।

ओ हमरा दिस तकैत अपनहि मोने कहय लगलाह—ई आदमी, चौदह बर्खक अवस्था मे कानल रहय, बड़ कानल रहय।

हमरा आश्चर्य लागल, ओ की कहि रहल छथि! ओ एकदम ठीक कहि रहल छथि। हमरा ई बात छूलक। भेल जे एक आदमी अछि, जे जनलक जे किशोरावस्था मे हम कतेक भयानक विपदा मे पड़ि गेल रही। बाप मुइला सँ हम स्तब्ध भ' गेल रही। नोर नइँ टघरल। विलाप नइँ कयल। चुपचाप घोंटने गेल रही। बाप केँ हम छओ मास धरि मृत्यु केँ भोगैत, असहाय भेल जाइत देखने रहियनि।

डॉक्टरक एतबा कहैत जे ई नेना मे, चौदहम बर्खक अवस्था मे बड़ कानल रहय, हमर धैर्य टुटि गेल, हुनक सहानुभूति सँ भावातिरेक मे हम आबि गेलहुँ। हम धीरे-धीरे कानय लगलहुँ, अधैर्य भ' गेलहुँ। आँखि सँ नाक सँ पानि खसय लागल, हम हिचुकय लगलहुँ। रूमाल हाथे मे रहय। आँखि-नाक पोछय लगलहुँ।

डाक्टर आश्चर्य सँ हमरा देखैत रहलाह।

हमरा संग आयल रहथि हमर पुत्र। ओ देखथि, आ अवाक् भेल रहथि। हमरा ओ कहियो कदाचित एहि तरहें नेना जकाँ कनैत नइँ देखने रहथि।

डॉ. भट्टाचार्य हमरा दिस तकैत रहथि। हमर अश्रुपात सँ जेना उदासीन होथि।

ओ आगाँ फेर कहलिन, ''ई एक बेर आर कानल रहय। दोसर बेर ई खूब कानल

रहय, तहिया एकर उमेर रहै—बाइस बर्ख।''

बाइस बर्ख सुनैत हमरा अपना जीवनक कोनो संताप, कोनो पराभव, कोनो असह्य आघात मोन पड़ि गेल। कनबाक दोसर झोंकी आबि गेल। हमर नोर-झोर आ हिचुकी जे घटल जाइत छल, से पुनः बढ़ि गेल।

एहि आदमीक सम्वेदना हमर भावना कें उत्तेजित क' देलक। हम भावावेग मे विह्वल भ' दोसर खेप हिचुक' लगलहुँ। दाबी, दाबल नहि जाय।

रूमाल सँ आँखि पोछी, आ आँखि भीजि जाय।

नाक बहय लागल, रूमाल सँ नाक पोछी। पोछलो सँ फेर नाक भीजि जाय। फेर पोछी।

बहुत अधैर्य भेल।

फेर डॉक्टर हमरा दिस तकैत बाजल रहथि—एकर संताप घटलै, जखन ई अठाइस बर्खक भ' गेल। तहिया सँ फेर ई नइँ कानल अछि।

एहि बात सँ जेना धैर्य घुरबा मे बल भेटल। हम भावावेश सँ मुक्त होबय लगलहुँ।

किछु क्षण मे अपन स्वाभाविक प्रकृति मे आबि गेलहुँ।

पढ़बाक खगता

हमर गाम अबैत देरी माइक प्राण मे प्राण अयलनि। ओ कनलीह नइँ, मुदा, कनैत काल जेहेन अकारण माइ सभ करैत अछि, से करैत रहलीह—लोक एहनो जगह जायत, कहू, जतय सरकार विद्यार्थी सभ कें गोली सँ मारि दैत छै! आब हम अहाँ कें (ओ हमरा तों, तोरा, तोहर कहैत रहथि) फेर ओहि ठाम जाय देब? किन्हु नइँ। किछु भ' जायत, हम अहाँ कें पटना नइँ जाय देब।

पटना मे गोली-काण्ड भेलै। गोली-काण्ड तँ भेलै। पटना मे सरकारी पुलिस गोली सँ विद्यार्थी कें मारि देलकै। मानलहुँ जे एक्के गोटे कें मारि देलकै, मारि तँ देलकै। माइ कें से बात बहुत हताश-निराश क' देलकनि।

गोली काण्डक बाद बाढ़ि सँ घेरल बाट मे, गाम अयबा मे एकक बदला तीन दिन लागि गेल। ई तीन दिन माइ सभ कोना कटने हेती? कष्ट मे कटने हेती। हमर माइ ई तीन दिन अपार, असीम कष्ट मे कटलनि। हुनक मोन कें ई कष्ट रुग्ण क' देलक। डर सँ हुनक प्राण एक मिसियाक भ' गेलनि। हुनक आत्मरक्षाक भाव हुनका ओहि शहर सँ, ओहि शासन सँ विमुख आ पढ़ाइ-लिखाइ लेल प्रवास सँ आतंकित क' देलकनि।

बाढ़ि आयल रहै। साधारण बाढ़ि दू-तीन दिन मे सटकि जाइ छै। से बाढ़ि सटकल हेतै। बाढ़िक कारणें बन्न बाट आ घाट पूर्ववत फूजि गेल हेतै।

छात्र सभक विरोध हिंसक भेल रहै। ओहि विरोधक दमन करबाक रहै। से भेलै। विद्यालय-महाविद्यालय सभ कें बन्न क' देला सँ विद्यार्थी सभक सामूहिक शक्ति खण्ड-खण्ड भ' गेलै। दू-चारि दिनक बाद फेर शहर मे विरोधक बसात खसलै। बन्न स्कूल-कॉलेज फूजल। सभ काज सामान्य रूपें चलय लागल।

जे छात्र सभ शहर आ छात्रावास छोड़ि पड़ायल छल, से घुरिक' अपन स्थान पर आबि गेल, अपन सामान्य आ स्वाभाविक दिनचर्या मे लागि गेल।

हम नइँ जा सकलहुँ।

जयबाक बात करी, तँ माइ एके ठाम कहि देथि—पटना नइँ जाय देब। किन्हु नइँ।

अगिला दिन फेर पुछियनि तँ कहथि—जान सँ पैघ की छै? जान बचत तँ बोनिक' खायब।

एक टा रटना ओ रटैत रहथि—जतय जान सँ मारि देत, तत' किऐ जायब, आ हम अपना जीबैत अहाँ कें कोना जाय देब? पढ़ि-लिखिक' की हेतै? जान रहतै, तखन ने पढ़नाइयो कोनो काज देतै।

ओ कहथि—जान बचाक' रहू। जान बचि जायत, तँ अढ़ाइ सेर बोइन क'क' खायब।

ओहि समय खेत मे काज करैत जनक बोइन रहै पाँच सेर धान। बेसी काल दुपहरिए धरि खटबै, ओतबे काल मे काज पूरा भ' जाइ, तँ आधा दिनक बोइन देल जाइ। आधा दिनक हिसाब होइ, अढ़ाइ सेर धान अथवा संक्षेप मे अढ़ाइ सेर।

हमर बापो जन सभक संग खटैत छलाह। ओहि आय-वर्गक लोक लेल ओ स्वाभाविक जीवन छलै। ई बात फूट जे ओ जनक संग खटैतो दू जनक काज करैत छलाह। तकर कारण स्पष्ट रहै—अपन खेत जानि मालिक अथवा बोनिहार बेसी उत्साह सँ खटैत छल, बोनि लेल खटैत जन आधा मोन सँ काज करैत छल।

तेँ जनक काज करब एहने परिवार सभ मे स्वाभाविक वृत्ति रहै। जे नइँ पढ़य, आर कोनो काज करबाक लूरि नइँ रहै, आर दोसर काजक अवसरक लाभ नइँ रहै, तँ ओ अपना खेत मे खटय। अनको खेत मे खटय जाइ, तँ ओकरा पैंचार कहै। लाभान्वित गृहस्थ बदला मे एहेन पैंचार बोइन सँ नइँ, खेत मे भरि दिन खटिक' सधा दैत रहै। ई प्रचलन मे रहै। एहि मे कोनो कलंक अथवा दोख नइँ रहै।

एहेन परिवार मे पढ़ाइक कोनो अभिलाषा अथवा मनोरथ नइँ रहै। पढ़ाइ लेल स्कूल-कॉलेज बड़का शहर सभ मे रहै। अंग्रेजी शासन स्वतंत्रता-युद्धक दमन कयलाक बाद एत्तेक टा देश मे तीन टा कॉलेज खोलिक' आधुनिक शिक्षाक आधार बनौलक। कलकत्ता मे कॉलेज खुललाक सत्तरि साल बाद पटना मे पहिल कॉलेज खुलल। शिक्षाक प्रचार तँ गाम मे स्कूल फुजलाक बाद भेल। देशक जनता आइयो ततेक निर्धन अछि जे साक्षरताक प्रतिशत बढ़ैत-बढ़ैत मात्र साठि-पैंसठि प्रतिशत धरि आयल अछि।

हमर बाप पढ़ल नइँ रहथि। एकर खगते ने भेलनि। जाहि प्रणाली मे बाप-दादा जीबैत आयल छलथिन, तकरे स्वीकृत कयलनि। ओहि मे संशोधन-परिवर्तनक इच्छा मोन मे नइँ जगलनि। ओ सभ एक तँ अपन पुरना पद्धति सँ जीवन खेपि लैत छलाह, दोसर जे नव प्रणालीक शुभारंभ लेल पूजी-पगहाक जरूरति रहनि, मार्ग-दर्शन कयनिहार आ चेतना जगौनिहार लोकक प्रतीक्षा रहनि, तकर अभाव रहनि, सर्वथा अभाव रहनि। तेँ जीवन जेना सय बर्ख सँ चलैत छल, से अँगेजल छल, आ सैह जीवन अपना संतान कें हलिस क' देब स्वाभाविक छल।

हमरा सभक पुरना पारिवारिक अँगना बड़का टा छल (आब ओकर चेन्ह ताकब कठिन अछि)। हमर पिता सहोदर चारि भाइ आ सभक परिवर आ हुनका सभक पितिऔत चारि भाइ आ तहिना हुनको सभक परिवार एक आँगन मे छल, आ दू टा हंडा मे दू ठाम भानस होइत छल। घर सभ तेना बनल छल जे अहाँ अपन कोठलीक केबाड़ खोलि अपन ओसार पर ठाढ़ होउ, तँ आठो-दसो कोठलीक केबाड़ देखाइत छल, आ स्पष्ट होइत छल जे कोन केबाड़ फूजल छै, आ कोन केबाड़ बन्न छै।

एतेक टा आँगन मे आठ दियादिनी। आठो लिख लोढ़ा पत्थर...निरक्षर भट्टाचार्य।

एहि मे हमरे माइ किऐ साक्षर रहितथि? ओहो छलि कारी अक्षर भैंस बरोबरि।

एम्हर आबि हमर एक भातिज पत्र देलनि, ताहि मे ओ अपन पितामही (हमरा सभक पितिआइन)क एक कथा कें उद्धृत कयलनि जे

ओ सभ किछु ने बुझैत छली, मुदा मलाढ़वाली (अर्थात हमर माइ) हुनका सभ सँ बेसी चेष्टगर रहथिन। ओ कहथिन जे हमर माइ केँ बूझय अबैनि जे एक एकादशीक पछाति दोसर एकादशी कतेक दिनक बाद अबैत छै।

हम तर्क करैत छी जे हमर माइ एतबा एहि कारणें बूझथि जे हमर नाना पुरहितिया रहथि, साक्षर रहथि, जजमान सभ केँ पुछला पर सकराँति आ पूर्णिमाक दिन बता देथिन। तकर प्रभाव हमरा माइ पर किछु पड़ल होइनि। आ तहिना हमर माइक प्रभाव हमरा पर किछु पड़ि गेल होअय।

आठो देयादिनी मे अधिकांश केँ एक सँ बीस धरि गनती नइँ अबैत रहनि। कोनो अंक केँ एहि तरहें बाजथि—हमरा हाथ मे एक बीस आ पाँच टका छल, ताहि मे आब दस टका बचल अछि। अहाँ जे गद्दरि बेचलहुँ, तकर दाम दू बीस टाका देने हैत।

बड़ थोड़ बात जनैत रहथि ई लोकनि। एतबा जानथि जे दूध मे जोड़न कखन देल जाइत छै—सेहो कोनो-कोनो महिला केँ बुढ़ारी धरि नइँ ठेकनायल होइन। दालि मे कतबा नोन आ हरदि पड़तै, अदहन मे कखन चाउर छोड़ल जेतै, एहेन बात सभ सीखिक' आबथि।

गीत गाबय आबनि। मूड़न-जनौ मे, विवाहक भिन्न-भिन्न विधि मे कोन गीत आ कोन भास उठाओल जाइत छै, से सीखल रहनि। बहुतो केँ गीतक पद मन नइँ पड़नि। बहुतो केँ गीत उठौलाक बाद गरा बाझि जाइनि। सामाक गीत गाबथि, छठिक गीत गाबथि। सत्यनारायण कथा मे कखनो देवताक गीत उठा देथि। कम गोटे रहथि जे साँझ गाबथि आ पराती गाबथि।

बच्चा केँ केहेन बोल कहल जाय, से सभ माय केँ अबैत छलनि। ककरो माय संतान केँ दुरदुरबैत नइँ छै, से गुण हमरो माय मे छल।

हम बहुत बेर दुखित भ' जाइ। धाह भ' जाय। बड़ सेवा करथि। राति-राति भरि जागल सिरमा मे बैसल रहथि, करोट फेरला पर पूछथि—पानि पीब? माथ बड़ दुखाइए? आवश्यकता बूझि पड़ैनि, तँ पयर-हाथ दबा देथि।

माय नइँ रहितथि, तँ एहि दुनिया मे दसो दिन नइँ जीवितहुँ। माइक कथा वास्तव मे अकथनीय-अनिवर्चनीय अछि। ई कहबाक हम साहस करी, से व्यर्थ।

बहुत कटलनि माय। हम तेरह-चौदहक रही, तँ बापक देहांत भेल। दस बर्खक बादे माइक महायात्रा भ' गेल। ओहो राजयक्ष्मा सँ मरि गेलीह। दवाइ थोड़-थाड़ होइनि, से बेकार भ' जाय। उचित इलाज नइँ भेलै। ताहि लेल साधन नइँ रहै। ताहि लेल परिचारक नइँ रहै। हुनक अंतिम समय मे हम खजौली मे नोकरी मे लागि गेल रही। दस दिन बाद गाम आबी। एक दिन रही आ फेर पन्द्रह दिन पर आबी। हमर आर भाइ-बहिन ताहि योग्य नइँ रहनि, छोट-छोट रहनि।

पढ़ाइ लेल पाइ

एहि स्कूलक (गामक स्कूलक) स्थापना सँ पूर्व सुभ्यस्त परिवार सभ सँ, पूरा गाम सँ एक-दू विद्यार्थी मैट्रिक मे पढ़बा लेल मधेपुर अथवा निर्मली हाइ स्कूल मे नाम लिखाक' होस्टल मे डेरा खसा क' पढ़ाइ करैत छल। खर्चा द्वारे लोक बच्चा केँ पढ़बा लेल हाइ स्कूल मे नइँ दैत छल। बी.ए., एम.ए. पढ़ब, तेँ असंभव अभिलाषा छल।

एखनो पढ़ाइ आ शिक्षा—उच्च शिक्षा मे आर्थिक स्थिति एक देखार आ जबर्दस्त (प्रमुख) कारण छै।

पाइ नइँ रहय। भविष्य मे क्यो खर्चाक पाइ मासे-मास पठाओत, तकर संभावना लग मे तँ नहिए देखाइत छल, हिआक' देखला पर दूर सँ दूर धरि कोनो आशा नइँ अभड़ैत छल।

ई हमरे कथा नइँ छल, गाम सँ मैट्रिक पास कयनिहार आधा सँ बेसी छात्रक यैह भाग्य-दुर्भाग्य छल। गरीबी छल, से घर-घर मे छल। असहायता छल, से पूरा जिला-जयबार मे अमावस्या रातुक अन्हार जकाँ पसरल छल।

आइ-काल्हि करैत विलंब सँ एक दिन रेल सँ मधुबनी गेलहुँ। कालेजक प्रिंसिपल देवता-स्वरूप छलाह। मेधावी छात्र सभ लेल परम उदार। एडमिशन बन्द भ' गेल रहै। हमर अंकपत्र देखलनि, तँ उत्फुल्ल भ' गेलाह। पुछलनि, विलम्ब सँ हम किऐ गेल रही। हम वैह रोदना गौने हैब जे पितृहीन छी, घर मे दस टका नइँ रहैत अछि। मासिक खर्च लेल पाइ जुटैबा मे असमर्थ छी।

प्राचार्य महोदय कहलनि सभ ठीक भ' जायत। हम नाम लिखा ली, फार्म भरिक' द' दिऐ, बाँकी ओ देखि लेताह।

से भेल। होस्टल मे सीट भेटि गेल। मेस मे बीस छात्र पर एक छात्र केँ फ्री (नि:शुल्क) भोजन देल जाइ। ताहि कोटा मे हमरा राखि लेल गेल। फीस-फास सभ माफ। एक साल बाद जखन छात्रवृत्तिक पाइ भेट' लागल, तखन कॉलेज कार्यालय फीस वला पाइ जोड़िक' काटि लेअय आ कटौती सँ उगरल पाइ दस्तखत कराक' देल करय। हस्ताक्षर धरि पूरा देय राशि पर करा लेअय।

वर्ग मे जाइ। नोट्स ली। छात्रावासो मे भोर-साँझ कागज-पेंसिल आ किताब ल'बैसी।

मुदा उदासी काटय। अनन्त आ अकथनीय उदासी। हमर रूममेट रहय एक टा छात्र—मल्लिक-मल्लिक कहिऐ। प्राय: मिथिलेसर नाम रहै। ओकरो आर्थिक स्थिति शून्य रहै। तेज रहय। हमरे जकाँ बहुत नम्बर अनने रहय। (हमरा सँ दस-बारह नंबर कम अनने छल।) अन्तर एक टा रहै, से महत्त्वपूर्ण रहै। ओ मधुबनी शहरक उच्च विद्यालयक छात्र रहय। मैट्रिको मे स्कूल प्रधानक अनुकम्पा सँ समय कटने रहय। हम गाम सँ आयल रही। अन्त मे एक-दू मास स्कूल मे छात्रावासक भोजनालय मे छात्रावास मे भेटैत फ्री छात्रक कोटा सँ खयने रही।

मल्लिको उदास रहय। दुनू गोटे मे टोका-टोकी कम होअय। एक दिन थोड़ेक गप भेल। एक दोसरा सँ जतबे सूचना भेल से लाभदायक भेल। ओकरो जेबी खाली रहैत छलै। हमरो जेबी खाली रहैत छल।

जेबी मे दू-चारि टका रहैत छै, से देखला-सुनला सँ बुझाइत छै जे कोनो बात नइँ थिकै। मुदा जकरा जेबी मे एक टा दूटकही नइँ रहैत छै, ओ से मासक मास नइँ रहैत छै, सैह टा बूझि सकैत अछि जे एहेन स्थिति मे जीवन कतेक कटु आ दयनीय भ' जाइत छै।

एक दिन मल्लिक कहलक—चल, कलक्टर सँ किछु पाइ ल' आनी।

हम कहलिऐ—हमरा देखल-सुनल नइँ। कतय जायब, आ ककरा की कहबै?

ओ कहलक—हम गेल छी। एक-आध बेर जाक' ओकरा सँ किछु अनुदान अननहु छी।

मधुबनी तहिया सबडिभीजन रहै। जिला रहै दरभंगा। कलक्टरक आफिस कतय रहै, ओकर डेरा कतय रहै, से पता हमरा किऐ रहैत?

ओ कहलक एक टा दरखास्त लिखबा लेल आ ओकरा कॉलेजक प्रिंसिपल सँ अग्रसारित करयबा लेल।

बहुत धखाइत हम आवेदन पत्र वला काज कयल। बहुत संकोच भेल रहय।

गृहस्थक बेटा रही। छओ बर्ख पूर्व

पितृहीन भ' गेल रही। बाप सँ लोक मँगैए, से प्रश्ने नइँ छल। माय सँ माँगि सकैत रही। माय केँ देखैत रहिऐ, जे ओकरा हाथ मे देबा लेल किछु छै, अथवा ओ हमरा सँ बेसी असहाय अछि। दुनू साँझ चूल्हि पजारय पड़ै। अभाव रहै। सभ वस्तुक अभाव रहै।

ककरा लग कनितहुँ, के नोर पोछितय? सहि जाइ। बात केँ भीतरे-भीतर पी जाइ। भूख सँ औनाइ, आ भूखल रहि जाइ। ककरो नइँ कहिऐ। ककरो कहबाक साहस नइँ रहय।

कहितिऐ, तँ ककरा कहितिऐ? चारू कात जे लोक छल, से हमरे जकाँ अभावग्रस्त आ पितमरू छल। जे समाज छल, से हित नइँ, मुद्दइ नइँ, उदासीन छल, तमशगीर छल। आँखि खोलि देखैत छल जे कोना मरैत अछि अथवा कोना जीबैत अछि।

एक दिन मल्लिक आ हम रेल सँ दरभंगा पहुँचलहुँ। ओ दनदनाइत कलेक्ट्रेट आ फेर कलक्टरक चैम्बर मे पहुँचि गेल। ओकर पाछाँ-पाछाँ हम। दरखास्त बड़ा बाबू लग गेल। बड़ा बाबू हमरा सभ केँ बाहर बैसबा लेल कहलक।

किछु कालक बाद फेर बड़ा बाबूक टेबुल पर ठाढ़ भेलहुँ। ओ आजुक किरानी नइँ रहय, थोड़ेक बेसी मनुक्ख रहय। कहलक—साहेबक दसखत हैब जरूरी छै। तकर बाद नाजिर लग जाय पड़त। अहाँ सभ छी विद्यार्थी। राति मे कतय रहब आ कतय खायब? दरखास्त पर हम टिप्पणी ध' देने छी, साहेबक डेरा पर चल जाउ। एखन ओ डेरे पर हेता।

हम दुनू गोटे दरखास्त उठा पयरे साहेबक डेरा दिस विदा भेलहुँ। हमरा संगी केँ डेरा देखल-गमल रहै।

पचासो बीघाक कलमबागक बीच मे जिलाधीशक डेरा। डेराक सीढ़ी धरि पक्की सड़क। चकाचक।

बाधा-व्यवधान टपैत कलक्टर साहेबक निवास पर पहुँचलहुँ। साहेब केँ सूचना देआओल। ओ भीतर बजा लेलनि।

दुनू गोटे दरखास्त बढ़ाओल। मल्लिक झोरा सँ एक टा शीशा लागल सर्टिफिकेट बहार क' देखौलकनि। बिहार प्रान्त मे आयोजित एक लेख-प्रतियोगिता मे ओकर लेख केँ प्रथम घोषित कयल गेल आ पुरस्कृत कयल गेल रहै।

मुड़ी झुकौने कलक्टर आदेश लिखलनि। दस्तखत क' देलनि।

तकर बाद साहेब मूड़ी उठाक' हमरा दिस तकलनि, एँड़ी सँ टिकासन धरि देखलनि। कहलनि—अहाँ सभ विद्यार्थी छी। आइ जे क्लास अहाँ सभक छूटल अछि, से पैघ क्षति भेल। आब ओहि पाठ केँ तैयार करब संभव नइँ हैत। एत' अयला सँ लाभ जे भेल अछि से तुच्छ अछि। क्लास छोड़ला सँ जे क्षति भेल, से अपूरणीय अछि।

कागज उठाक' हाथ मे दैत कहलनि—जल्दी भागू, राति आठ बजे धरि होस्टल पहुँचबाक कोशिश करू।

उपेक्षा थिक अस्त्र

हम इंटरक पहिल अथवा द्वितीय वर्ष मे पढ़ैत रही। गाम आबी, मुदा दू सप्ताह तीन सप्ताह पछाति आबी। एक दिन एहिना बेरू पहर मे स्टेशन सँ उतरिक' गाम अबैत रही। बीच बाट मे पुबरिया-दछिनबरिया बाध मे देखल, पचीस-पचास हाथक नमती टाट लागल। बाँस फाड़िक' बातीक बनल टाट। नव बनल रहै, से ई टाट उज्जर झलकै। एक गोटा केँ बाट मे पुछलियै—ई बड़का टाट के लगौलक अछि? जवाब भेटल—अहीं सभक टाट थिक, नव कलम रोपायल अछि।

हमरा आश्चर्य भेल। हम मधुबनी मे। हमर कलम रोपा गेल। घेराबा लेल बड़का टाट लगा देल गेल। हमरा पता नइँ।

एहने ओ समय छल। हमर बाप गत (दिवंगत) भेल छला, तीन टा पित्ती छलाह। ओ सभ एक टा भूखण्ड भजिऔलनि। उपाय ततबे रहनि जे बारह-पन्द्रह कट्ठाक कोला। कलम रोपबाक भेलनि, तँ हमरा कोना छोड़ि दितथि। अपयश होइतनि, ई लोकनि तीन भाइ खड़ेखाम्ह छला, एक पट्टी मे भातिज सब छलनि, कमजोर आ असमर्थ। तँ ओहि नव जमीन केँ चारि खण्ड मे बाँटि देलनि, अचकूर सँ हीसा फुटौलनि। तहिना सझिए सँ गाछ किनायल आ रोपायल। सझिए सँ बाँस कटायल आ टाट बुनायल।

गाम पर अयला पर ने हम ककरो पूछल आ ने क्यो हमरा एकर वृत्तान्त कहलक, हम एतबे बुझलहुँ जे नव कलम रोपल गेल अछि।

एना होइत छलै। हर पीढ़ीक समर्थ लोक गाछ-बिरिछ लगबैत अछि। गाछक हजार काज होइत छलै। जरयबा लेल जारनि आ खयबा लेल आम-जामुन इत्यादि भेटैत छलै।

कलम रोपि देला सँ नइँ भ' जाइत छलै। माल-जाल सँ, बकरी सँ, साँढ़-पाड़ा सँ बचाबय पड़ैत छलै। पानि सँ सींचय पड़ैत छलै। जमीनक जोत-कोड़ करय पड़ैत छलै।

बगीचा लगाउ, तँ खटू। भोर-साँझ खटू। खटबो करू आ अपराध आ उपद्रव सँ ओकरा बचाउ।

पछिला पीढ़ी धरि सामान्य लोक स्कूल आ पाठशाला नइँ धरैत छल। खेत छल। तकर काज सीखैत छल। ओहि मे खटिक' बेदरा सँ समर्थ होइत छल, समर्थ सँ बूढ़ होइत छल। एक दिन ओही माटि मे, कलम-गाछी मे ओकर अन्त्येष्टि क' देल जाइत छल।

स्कूल जायब शुरू भेल। नोकरी सँ किछु गोटे धनिक भेल, सुखी भेल। पढ़ाइ आ नोकरी गाम केँ उदास क' गेल। घर सभ मे, सुन्दर-सुन्दर घर सभ मे ताला लटकि गेल। खेत पर हजार टा फसाद आ झगड़ा। गाछी आ बिरछीक मालिक नइँ रहल, लोक देखाक' चोराक' गाछ काटि लैए, बाँसक बीटक बीट उपटा दैए। आरि-धूर तोड़ब आ घुसुकायब तँ बरिया सभक मनोरंजन थिकै, से अदौ सँ भेल करै छै।

लोक कहैए गाम बदलि गेल अछि। लोक हृदयहीन भ' गेल अछि। स्वार्थी भेल अछि। हिंसक भेल अछि।

गाम बदलल नइँ अछि। पुरना गाम मरि गेल अछि। नवका गाम जन्म ल' रहल अछि।

जहिए स्कूल फूजि गेल, एक परम्परागत संस्कृति आ जीवन-पद्धति मे आगि लागि गेल। शहर दिस पलायनक क्रम शुरू भ' गेल।

कृषि संस्कृति मे गरीबी छल, अभाव छल, अंधविश्वास छल, व्यर्थक पाबनि-तिहार आ भोज-भात छल, मुदा एहि संस्कृति मे एक अद्भुत आत्मविश्वास आ गरिमा छल, से गेल। भविष्य आजुक दिन मे अरक्षित अछि, खेती जुग मे जीवन सुरक्षित छल। लोक नोट नइँ गनैत छल। मुदा अपन समाँग गनै छल, तँ समाँगे-समाँग देखाइत छल, गनल पार नइँ लगैत छल।

एक दिन छुट्टी मे गाम आयल रही। नवका कलम दिस गेलहुँ। गाछ सभक ताक-हेर नइँ होइत छल। गाछ सभ अविकसित आ ठिठुरल। विकास ठमकि गेल रहै। जनाइत रहै, आब सुखायब शुरू क' देत। ठुट्ठ भ' जायत। बीच मे कलमी आमक गाछ रहै। किछु गाछ सुखाक' उपटि गेल रहै। जरनि-बिछनी सभ ओकर डाँट-पात उठाक' ल' गेल आ चूल्हि मे धधका देलक।

एक टा टोक। चारि पट्टीक चारि भाग गाछ। तीन भाग मे गाछ थोड़ेक नीक स्थिति

मे रहै। एक भाग दब रहै। थोड़ दब नइँ रहै। बहुत बेसी दब रहै।

एक ठाम आरि पर बैसिक' गाछो सभक स्थिति पर ध्यान देने रही। गाछीक पार गढ़ी महादेव मंदिर दिस जाय वला मार्ग देखाइत रहै। ओहि बाट पर क्यो जाइत-अबैत रहै। एहन गतिशील चीज पर सेहो ध्यान चल जाय।

एक टा रहथि बुच्चुन कका। बुच्चुन चौधरी। हमर पिताक समतूर। हमर मातृक अघुआढ़-मलाढ़। बुच्चुनो ककाक विवाह अघुआड़-मलाढ़। तँ दुनू गोटे मे अतिरिक्त स्नेह। हमरो प्रति गाढ़ स्नेह। एक बेर मातृके मे रही। मास, दू मास रहि गेल रही। नौ-दस बर्खक बटुक रही। ककरो संग गेल रही। एकसर जायवला नइँ भेल रही। कोनो संगबे भेटय, तँ लड़ैत-लड़ैत बाट टपि जाइ। अघुआड़ सँ निर्मली तीन-चारि कोस भरि दिन लरए पड़ै। कोसीक जंगल। कास-पटेड़क बन। हाथी ओहि मे जाइत, तँ झँपा जाइत। दस हाथ पूब-पच्छिम नइँ देखाइ। कोसीक धार मे घाट रहै। नाओ रहै। धार मे छुरी फनकैत पानि। घाट पर ऊँचका बाँस पर धुजा टाँगल रहै। तकरे हिआक' लोक बाट चलय। खुरुरबट्टी रहै। महीस रहै। किछु लोक छोट-छोट टोल बनाक' ओहि भयानक भूभाग मे डटल रहै। ओहि बेर बुच्चुन कका कतहुँ सँ अघुआड़ आबि गेला। बस, हमरा संगबेक बेगरता छल, से संगबे भगवान पठा देलनि (नानी सभ एहिना बात मिलाक' बाजथि, नानीक आ मामा सभक असरि हमरा पर बहुत अछि)। बुच्चुन कका गछि लेलनि जे ओ हमरा अपना संग टुघरौने जयताह। से एक खेप हम हुनका संग गाम आयल छी। बाट मे ओ हमर पूरा खियाल रखलनि। अधिक सँ अधिक सुविधा, लगातार नीक बोल-भरोस दैत अनलनि। एहि यात्राक बाद हुनका प्रति हमरा हृदय मे आदर आ ममत्व बढ़ि गेल।

अपन उजड़ैत आ कुहरैत गाछ सभक बीच हम बैसल रही, कतहुँ सँ बुच्चुन कका आबि गेलाह। संयोग सँ ओ अपन गाछी देखय आयल छला, हमरे कलम बाटे घुरैत छला। हमरा देखि कृपापूर्वक ओहि ठाम बैसि गेला।

नीक काज करै छी, अहाँ कलम देखय अबै छी। नीक करै छी। जरूरी काज करै छी। हमरा बड़ खुशी भेल। से ओ निष्कपट प्रसन्नताक संग कहलनि।

हम कहलियनि—हमरा बुते गाछक सेवा की कयल हैत? खाली हाथ आयल छी। ने पानि सँ पटाओल, ने खुरपी सँ ओकर खढ़-पात बीछल। किछु नइँ कयल। किछु नइँ।

किछु नइँ कयल, ताहि सँ की? अयलहुँ। गाछ केँ स्नेह सँ देखलहुँ। ओकर चिन्ता कयलहुँ। ओ कहलनि। तकर अर्थ लागय, तथापि हुनक अभिप्राय हम पूरा नइँ बूझि पाबी। ओ कतेक पैघ बात कहैत छलाह, से नइँ बूझी।

ओ कृषि-संस्कृति केँ बचयबाक बात कहैत छलाह। ओ पृथ्वी बचेबाक बात कहैत छलाह। ओ वनस्पतिक अराधनाक बात कहैत छलाह। कृषि संस्कृति मे आदमी स्वार्थी कम, समाजसेवक अधिक होइत अछि। ओ अपन आवश्यकता केँ सीमित रखैत स्वाभिमानी आ श्रेष्ठ नैतिक जीवन जीबैए। तकर बात प्राय: ओ कहैत छलाह।

हमरा चुप आ निरुत्तर देखि ओ कहलनि, ''गाछ लग नित्य आउ। भोर आ साँझ आउ। जे नइँ अबैत अछि, तकर गाछ हहरए लगैत छै। नष्ट होबय लगैत छै। आयब, तँ गाछ स्नेह सँ सिहरैत छै। वृद्धि करय लगैत छै। कलश देबए लगैत छै। फूल देबय लगैत छै।''

हम कहलियनि—हम आइ छी, काल्हि गाम सँ चल जायब। फेर आयब तँ पन्द्रह दिनुक बाद, अथवा पचीस दिनुक बाद।

बुच्चुन कका कहलनि—ताहि सँ की? जहिया आयब, तहिया अहू गाछ लग जायब। एकर पात, एकर डारि, एकर जड़िक चारू कातक जमीन केँ निहारब।

फेर ओ कहैत गेला—आन-जान रखबै, तँ स्नेह उत्पन्न हैत, ममता उत्पन्न हैत। लागत जे गाछो मे हमर प्राण अछि आ हमरो मे गाछक प्राण अछि। तखन एक दिन अहाँ समर्पित भ' एहि गाछक कल्याण मे लागि जायब, भोर-साँझ बसनी आ डाबा मे पानि भरि-भरि लायब, आ ओकरा पटायब। ओकर घेर-बेढ़ करब आ गाछ सभ विकसित हैत। पात-पात पर हरियरी चढ़तै। जेम्हरे देखबै, ओहि मे श्री-सौन्दर्य देखबै, ओकर रूप देखि आनन्दमग्न भ' जायब।

बुच्चुन ककाक बात मोन अछि। हुनक भावना मोन अछि। ओ सभ आमक गाछी केँ शोभाक भंडार बनौने छलाह, जलाशय सभ केँ निर्मल रखने छलाह। हुनका सभक हृदय पवित्र छलनि। हुनका हृदय मे गामक सभ मनुक्ख लेल अनुराग आ आदर भरल छलनि। ककरो मोन दब भ' जाइत छलै, तँ समस्त गाम प्रार्थना करैत छल जे ओकर नीक होइ। ओकर रोग आ कष्ट दूर होइ। सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।

जखन समर्थाइ रहय, तँ अंग्रेजी अनुवाद मे कामू पढ़ी, सार्त्र पढ़ी। रूसक टाल्सटाय आ दोस्तोएवस्की पढ़ी।

कामूक एक उक्ति कतहु पढ़ने छी, से एखन मोन पड़ैत अछि। ओ कहने छथि, जाहि वस्तु केँ हमरा सभ नष्ट करय चाहैत छी, तकर उपेक्षा करब शुरू क' दैत छी। उपेक्षा-दृष्टि, हमरा बुझने, एक हथियार थिक। एक घातक हथियार थिक, ओ परमाणु बम आ दूरमारक मिसाइल (प्रक्षेपास्त्र) सँ सेहो अधिक विनाशकारी हथियार थिक।

फ्रांसिसी भाषाक लेखक कामू बहुत भारी बात कहि गेल छथि। हमर पिता खेती केँ आदर आ अपनत्व सँ देखैत छला, तकर फल छल जे गामक थालो मे एक अपूर्व आनन्द छलै। लोक जौड़खट्टा पर बिना दरी आ तकियाक निश्चिन्त निन्न मे आनन्द पबैत छल।

हमरा सभ नोकरी मे गेलहुँ, तँ गाम लगैए कोनो मेला थिक। दिन भरि भागम-भाग, साँझ होइत उसरि जायत। अपना लेल कीनू, अपना लेल बेसाहू, आ बेङजकाँ फूलि जाउ से अघाक' खयलहुँ। पूरा मेला अनचिन्हार। जनायत जे मेला मे जे अछि, से चोर अछि, लम्पट अछि, जेबकट्टा अछि। बेर-बेर छाती पर हाथ जायत। कुरताक निचका जेबी पर एक बेर हाथ छुआक' देखि लेब, जे किछु अनहोनी तँ नइँ भ' गेल अछि।

एकाएक सभ जंगल उजड़ि गेल। सभ नदीक पानि जहर भ' गेल। सभ टा खान मे जन लागि गेल। वनवासी सभक खोता उजड़ि गेल। जे किरानी मे बहाल होइए, से मोट भ' जाइए। जे एम.एल.ए. मे चुनाक' जाइए, से सुखना बिलाड़ भ' जाइए। दिल्ली मे जकरा पठा दिऔ, से पुरना राजा आ महाराजा सँ बेसी झलक' लगैत अछि।

खेतीक उपेक्षा कयने नैतिक जीवनक बात, नैतिक आचरणक कथा नष्ट भेल अछि।

संसारक अधिकांश देशक प्रधान आधा व्यापारी थिक, आ आधा डाकू थिक।

साँप आ मूसक निवास

हमर विवाह भेल, संभवत: हम सोलह-सत्रह बरखक रही। खेल-खेल मे सभ किछु घटित भेल। गाड़ाटोल मे हमर जेठ पितिऔत बहीन छली। हमर बहिनोइ भेलाह घटक। डेओढ़ स्कूल मे गाड़ाटोलक दस-बीस विद्यार्थी पढ़ए

आबय। से सभ हमरा जनैत छल। ओ सभ हमरा विषय मे कहलकै जे हम पढ़ाइ मे नीक क' रहल छी।

छोट क्लास मे रही। बियाहक दू बर्ख बाद हम मैट्रिक परीक्षा मे फार्म भरल। घटक कन्यागतक पक्ष सँ दू-चारि मुँहगर लोक केँ ल' अनलनि। ओहि घर मे कैक टा कुटमैती छलै। तकर दबौट काज कयलक। हमर बाप दिवंगत भ' गेल रहथि। हमर माय केँ के पुछैत छल। हमरा क्यो पुछितय, तकर चलनि नइँ रहै। पित्ती लोकनि हरो-हरो क' क' विवाह स्थिर क' लेलनि। हम भीतर सँ विरोधी रही। विरोध करब एक नव घटना, एक नव चर्चाक विषय होइत, तेँ हम मूड़ी निहुड़ा देल। एहि विवाह केँ शिरोधार्य क' लेल।

ओहि समय मे विवाहक अनेक विधि-व्यवहार रहै। विवाह मे चतुर्थीक भार (आ विधि होइ) अबै। फेर सम्हारक भार। मधुश्रावणी कोजागरा सभक भारो दर्शनीय होइ आ विधियो बहुत उत्सवी आ समय नष्ट करयवला रहै। तीन बर्ख पर होइ दुरागमन। दुलहा केँ अधिक अवसर पर सासुर आबय पड़ै। आबि गेलौं, तँ अपना मोने। जायब, तँ से घरबैया (ससुर-सासु)क मोने। दस दिन, बीस दिन डेरा खसौने रहू। खाउ आ पड़ल रहू। विवाह सँ मधुश्रावणी धरि खयबो काल सौजनक गीत होइ। धीरे-धीरे खाउ आ गीत सुनू आ अर्थ करू। विवाहक यात्रा मे कोबरक गीत होइ। कोबर सँ वर आ कनियाँ छोट-छोट डेग देने गोसाउनिक घर जाथि, कुलदेवता केँ प्रणाम करथि। दस डेग बीस डेग देबा मे आध घंटा समय दिऔ। गीत गाइनि सभ विद्यापति गीत गाबि रहल छथि। चौमासा-बारहमासा गबैत छथि। मिलन आ वियोगक गीत गबैत छथि।

जाइ, तँ जेना घेरा जाइ। दस दिन, बीस दिन पहुनाइ करैत भ' जाय। तीन टा तरूआ, सात टा रसदार तरकारी। दालि मे घी। अन्त मे दूध-दही। बहुत रास भात साँठिक' परसल जाइ। आधा सँ बेसी अन्न छूति जाइ।

दू-चारि दिनक बाद हम भागिक' आबय चाही, अपन गाम, अपन स्कूल, अपन विद्यालयक कक्षा मे बैसबा लेल घुरय चाही। से नइँ चलय। तेँ कचकचा जाइ, तमसाइ आ हठ करी, कखनो काल दोसर पक्ष केँ अनसोहाँत लगै।

हमर पिता जीवित नइँ रहथि, ताहि लेल खिधांस होअय। हम बहुत दुब्बर-पातर रही, हमर दाँत ऊँच आ अभद्र रहय, तकर निंदा होअय। से सुनि दुखी होइ। एहि सभक की समाधान देल जा सकैत छलै।

विवाह भेल रहय, तखन हमर पिती सभ साझी रहथि, हमरो साझी रखने रहथि। दुरागमन भेल, ताहि सँ पहिनहि भिनाउज भ' गेल। हमरो भिन्न क' देल, अपनो तीनू भाइ तीन ठाम भ' गेलाह।

हमर गृहिणी सम्पन्न घर सँ आयल छली, ओहि सँ झूस घर मे आबि गेली।

हमरा सँ छोट एक बहीन बियाहि क' सासुर गेलीह।

हमर छोट बहीन, छोट भाइ आ माय गाम पर एक आश्रम मे। मैट्रिकक बाद हम कओलेज धयल। कओलेजक बाद हम नोकरी ध' लेल।

दुरागमनक छओ-सात बर्खक बाद हमर माइक देहान्त भ' गेलनि। असाध्य रोग काटिक' प्राण छुटलनि। दवाइ रहै। किछु भेबो कयलै। दवाइ धनक अभाव मे छोड़ि देल गेल।

पत्नी तकर बाद घर चलेबाक भार उठेबा लेल बाध्य भेलीह। खेत हरवाह-जन आबाद क' दैत छल। खरिहान मे धान तैयार क' दैत छल। शुरू मे खेत उपजै। आधा सँ बेसी धान बोइनि मे, बीहनि मे चल जाइ। आधा सँ कम जे धान होइ, ताहि सँ दुनू साँझक बुतात होइ। उगार नइँ होइ। जीवन रहै। कष्ट सँ भरल जीवन रहै। सौख-मनोरथ पुरेबाक जोग नइँ बनैत रहै। बर्ख लागि जाइ। पाबनि-तिहारक ओरिआन कोनहुना भ' जाइ, सैह बहुत रहै।

परिवार आ खेतीक भार छलनि। जन-हरवाहा केँ पनपियाइक रोटी आ पानि जनक हाथे खेत पहुँचाब' पड़ै। ओकर सभक बोइनिक धान तौलि क' देब' पड़ै। से सभ करय पड़लनि। हमर छोट बहिन आ भाइक लालन-पालन, विवाह-दानक व्यवस्था आ निर्वाह करय पड़लनि। से सभ कयलनि, बहुत धैर्य छनि। कष्ट सहबा मे कोनो निराशा आ उत्साह-हानि नइँ होइत छनि।

हम निश्चिन्त भ' गाम छोड़ि दू बर्ख पढ़ाइ कयल, चौबीस बर्ख बाहर रहि नोकरी कयल। कविता आ लेख लिखबाक काज कयल। शिक्षक-संघक देल आदेश केँ आदर करैत संघक सभा, धरना, प्रदर्शन सभ मे हाजरी देल।

प्राय: पैंतालिस बर्खक अवस्था मे बदलिक' हम नोकरी करबा लेल गामक स्कूल मे आबि गेलहुँ। तहिया सँ गामे मे, लगातार पचीस-तीस बर्ख सँ गाम ओगरने छी।

जन-बोनिहार हमरा नइँ पुछैए। खेत मे कोनो जूति-भाँति विचार करबाक प्रयोजन होइत छै, ओ सभ हिनके आदेश ल' काज बढ़बैत अछि। ओकरा सभ केँ रिन-पैंचक बेगरता होइत छै, तँ हुनके लग ठाढ़ होइत अछि। अन्नक काज भेलै, तँ ओ अपनहि से द' दैत छथिन। पाइक काज रहलै, तँ ओ ओकरा सभक पैरवी ल' हमरा लग अबैत छथि आ हम अनिच्छापूर्वक असहमति व्यक्त करैत किछु टका रिन-पैंच मे दैत छिऐ।

खेतीक क्षति भेल अछि। सौंसे गामक खेतीक क्षति कोनो एहने कारण सँ भेल अछि। खेती लेल एक समाँग चाही, अथवा दस-बीस समाँग चाही। खेतक मालिक केँ जनक संग स्वयं खटबाक चाही, तखन खेती लाभकारी होइत छै। तखन खेती मे उजाड़ि (क्षति, उपद्रव) कम होइत छै। से हम पढ़ाइ ओ नोकरीक कारणेँ नइँ क' सकलहुँ। एक टा होइ छै—एबसेंटी फार्मर अर्थात अनुपस्थित किसान—से हम भ' गेलहुँ। हमरा गामक साठि-सत्तरि प्रतिशत किसान ने रोपनीक समय मे खेतक आरि पर होइत छथि आ ने कटनीक समय मे—सभ काज प्रत्यक्ष भ' देखैत छथि। तकर फल भेलै जे खेत आ खेती नष्टप्राय अछि, अव्यवस्थित अछि, घाटाक व्यापार थिक, एक अभिशाप थिक जकर यातना भोगबा लेल ई अनुपस्थित कृषक आ ओकर संतान बाध्य अछि। सम्हारबाक क्षमता आ पलखति ओकरा नइँ छै आ ने ओ सम्हारि पाबि रहल अछि। ओकरा हटाओत तकर सम्मानजनक स्थिति नइँ छै। एक्के टा बाट छै, खेत केँ जाहि स्थिति मे अछि ताहि स्थिति मे छोड़ि दिऔ, आ अपने पड़ा जाउ, कोनो शहर मे दू कोठली भाड़ा पर ल' रहब शुरू करू। गामक चास-वास मे मूस आ साँपक निवास भ' गेल छै। अहाँ जतबे ओकरा नष्ट करए चाहैत छिऐ, ततबे ओ साँप बल-संचय क' आ सशक्त भ' अहाँ केँ नष्ट करबाक स्थिति मे आबि गेल अछि। खेतक वास्तविक अधिकारी जँ उपस्थित अछि, तँ असमर्थ अछि। जे अनधिकारी अछि, से ओकर उपभोग निर्विरोध भेल क' रहल अछि।

खेत-पथारक प्रबंध एक भारी मोटा छल। हिनका लेल असाध्य आ अप्रिय छल। एकरा ओ गराक घेघ जकाँ उघलनि, पचास साल उघलनि।

शारीरिक आ मानसिक यंत्रणा हमर पत्नी भोगैत अपन जीवन कटलनि। दुखित पड़ि जाथि। गाम आबी, तँ हिनका दरभंगा ल' जाइ। डाक्टर सँ परामर्श करी। दवाइ लिखाक' गाम पर राखि दियनि। हम अपन कर्तव्यक इतिश्री बूझी, आ गाम पर हिनका छोड़ि नोकरी मे आबि जाइ।

ई बेसी काल दवाइ मूसक बीहरि मे ढारि देथि। दवाइ नइँ खाथि। गोली (बरिया) सभक पात सभ मासक मास फाड़िक' नइँ खाथि। कोनो दिन बहारिक' फेकि देथि।

दसो बेर इलाज लेल हिनका बाहर ल' गेलहुँ। एक बेर एना होइ जे ई अनेरे बेहोश भ' जाथि। से स्पष्ट ने हमरा कहथि आ ने आने लोक केँ कहथि।

हिनका दिनका गाड़ी मे चढ़ाओल। सकरी जाइत-जाइत बेहोश भ' गेली। सकरी मे दरभंगाक गाड़ी छोड़ि देल। मधुबनीक गाड़ी धयल। हिनका मँगरौनीक तांत्रिक बाबाक मंदिर पर ल' गेलहुँ। ओ कहलनि—गायत्री मंत्रक जाप करौला सँ ई ठीक हेती। गायत्री जाप लेल हमरा ओ अयोग्य कहलनि। पुरश्चरण लेल कोनो नैष्ठिक ब्राह्मण केँ भार देबाक आदेश देलनि। हम ओतबा पाइ ल' क' नइँ चलल रही।

साँझ मे मधुबनी स्टेशन। दुनू दिसुका गाड़ी आबय लेल रहै। हम कहलियनि—दरभंगा चलब, की खजौली?

खजौली मे बीस बर्ख सँ हमर नोकरी छल, कहियो नइँ ल' गेल रहियनि।

ओ कहलनि—खजौली लग होइ, तँ चलू।

दस बजे राति मे खजौली आ स्टेशन सँ स्कूल छात्रावास पहुँचलहुँ। भोर मे हिनका ठाकुर धीरेन्द्र सिंहक डेरा मे राखि देल। तथापि विद्यार्थी सभ (प्राय: छात्रा सभ) हिनका देखबा लेल उत्सुक। देखए गेलनि।

स्कूलक बाद धीरेन्द्र बाबूक पत्नी कहलनि जे रोगी ठीक दस बजे बेहोश भेलीह, ठीक चारि बजे हिनका मूर्च्छा टुटलनि। हिनका ई शिकायति छनि से खजौली जाक' बुझबा योग्य भेल।

भिनसर मे एक शिक्षक श्रीदेव झाजी संग भेलाह आ विचार भेल जे हिनका दरभंगा अस्पताल मे भरती कराबी।

दरभंगा अस्पताल हिनक भर्ती लेलक। ओहू ठाम अस्पतालक खाट पर ई बेहोश। अठारह घंटाक बाद होश अयलनि। डाक्टर कहलनि आउटडोर मे ल' जाक' मनोचिकित्सक (साइकेट्रिक) सँ देखबाउ।

मनोचिकित्सक सँ सवाल-जवाब भेलनि। चिकित्सक हमरा बजाक' कहलनि—अहाँ हिनक पति थिकियनि? हमर स्वीकृतिक इशारा पर ओ हमरा धोपैत कहए लगलाह—अहाँ केँ ई पता अछि जे हिनका निन्न नइँ होइत छनि, ई पछिला सात बर्ख सँ नइँ सुतलीह अछि?

हम गछलियनि, हमरा ठीके एहि बातक पता नइँ छल।

चिकित्सक हमरा उचिते धोपलनि। ओ निन्नक दवाइ लिखल। निन्नक दवाइ देल गेल। सुतलीह, की पच्चीस-तीस घंटा गाढ़ निद्रा मे बिता देल। जगलीह, तँ कहलनि, भूख लागल अछि, कर लगाओल माछ खायब।

श्रीदेव बाबू अस्पताल आबि देखलिन, तँ कहलनि निन्न भेलाक बाद चेहरा परिवर्तित भ' गेल रहनि। नीरोग लागथि, संतुष्ट आ श्रीमती (कान्ति-युक्त) लागथि।

अस्पताल सँ गाम अयला पर ओ कहलनि—निन्नक गोली नइँ खायब, जहर रहै छै।

तकर बाद हम बदलीक कोशिश मे लागि गेलहुँ। हाइ स्कूलक सरकारीकरण अधिकांश भ' गेल रहै। बदली चालू नइँ भेल रहै। विशेष परिस्थिति मे एक-आध बदली भेल रहै। संयोग रहय, नीक संयोग जे हमर बदली गामक स्कूल मे भ' गेल।

गाम अयलहुँ। राति मे लैम्प जराक' लिखबाक आयोजन करय लगलहुँ। तमसा गेलीह। एक्के ठाम कहलनि—लैम्प मिझाउ। ईजोत मे हमरा निन्न नइँ हैत। ओ मना कयलनि—राति मे अलमारी खोलब, आ बन्न करब, से नइँ हैत। ई सब बन्न करू। राति मे एको रत्ती खट्ट-खुट्ट करब, तँ हमर निन्न टूटि जायत। से नइँ हेबाक चाही।



संपर्क : डेओढ़, पो. घोघरडीहा
जिला-मधुबनी-847402 (बिहार)
मोबाइल : 9472044551

गुण-कथा

शिवशंकर श्रीनिवास

जयपुर मे अंजनी देवी अपन बेटाक डेरा मे जाहिठाम रहैत छलीह ताहि ठाम सँ लगभग दू किलोमीटर उत्तर मजदूर सभक कॉलोनी छलै। ओत' कैक टा कम्पनी अपन मजदूरक लेल आवास बनौने छल, कैक टा कंपनी तँ ओत' सटले छल तेँ ओहि मुहल्लाक नामे भ' गेल छलै मजदूर कॉलोनी। अंजनी देवी दू वर्ष सँ ओहि कॉलोनी जाइत-अबैत छलीह। ई बात हुनक बेटा श्यामानन्द चौधरी वा पुतोहु मेनिका चौधरी नइँ जनैत छलीह। हुनका लोकनि केँ एहि बातक जनतब नइँ छलनि। जनै छल हुनक दरबान, भनसिया आर-आर लोक सभ जकरा सभक डेरा ओम्हरे मजदूर कॉलोनी दिस छलै। ओकरा सभक अंजनी देवी 'बड़ी माँ' छलीह।

सत्तरि वर्षक अंजनी देवीक देह मे एखनो बुता छलनि, उत्साह छलनि। ओ अपन जिनगी केँ बेटाक कोठली मे औनाइत नष्ट नइँ कर' चाहलनि। जहिया सँ ई बेटाक संग जयपुरक वसंतपुर कॉलोनी मे अयलीह, तहिया सँ एकमास तक बेटाक मकानक दोसर फ्लोर पर पूर्ण सुविधायुक्त कोठली मे रहितौ, लोक बिना औनाइत रहलीह। तखन, ई जे रस्ता तकलनि ओ रस्ता हिनका एहि मजदूर कॉलोनी अनलकनि।

एहि सभ बातक जनतब बेटा-पुतोहु केँ दू वर्षक बाद भेलनि। सेहो बात पहिने पुतोहु मेनिका चौधरी बुझलथिन। मेनिका महिला एसोसिएशनक अध्यक्षा छथि। जयपुर मे एहन कैक टा एसोसिएशन छै, ताहू मे जकर ई अध्यक्षा छथि ओ हाइ एलिट वर्गक छै। ओहि एसोसिएशनक एक टा सदस्या जे मेनिका जीक प्रतिद्वंद्वी छथि हुनक नाम छनि, गीता भटनागर। ओ मेनिका जी केँ कहलकनि, ''मेनिका जी, अहाँक सासु तँ बहुत समाजसेवी लोक छथि।''

''माने ?'' ई चौंकैत पुछलथिन।

''ओल्ड वुमनक चालिए सभ तेहन होइ छै जे अहाँ की बुझबै ?''

''मिसेज भटनागर, अहाँ की बाजि रहल छी ? हम अपन सासु केँ कोना रखने छियनि



से हमरा डेरा पर आबि देखू। कोनो सुखी सासु केँ जतेक सुविधा चाही से सभ टा हुनका भेटि रहलनि अछि। हम अनका जकाँ नइँ छी। हम देखै छिऐ जे ककरो सासु अहमदाबाद मे रहै छथि तँ ककरो दिल्ली, किन्तु हमर सासु हमरा लग छथि।''

गीता भटनागर बुझलनि जे मेनिका हुनके पर आक्षेप कयलथिन अछि, किऐ तँ हुनक सासु-ससुर दिल्ली मे रहै छथिन। गीता बहुत चतुरा छलीह ओ आक्षेपक उत्तर देब' जनै छलीह। ओ अप्पन स्वर केँ मधुर मुदा जिलेबी जकाँ झिल्लीगर बनबैत कहलथिन, ''से तँ मेनिका जी अहाँ भारतीय संस्कृति केँ महत्त्व दैत छी, ताहू मे अहाँ विदेह नगरी मिथिलाक बेटी छी, तेँ कहै छी अहाँ ई पेंटिंग देखियौ। मिथिलाक पेंटिंग छिऐ ने ?''

''हँ छिऐ।''

''हमरा जनैत ई अहाँ केँ नइँ बनब' अबैत हैत, किन्तु ई एक टा राजस्थानक बेटी बनौलक अछि। ओकर बाप सुलेमान हमर आयरन मील मे फीटर छै, ओ हमर पति केँ उपहार देलकनि। हम देखलिऐ तँ ओहि छौंड़ी केँ बजौलिऐ। हम अपन कैक टा कोठली मे ओकरे सँ पेंटिंग्स बनौलहुँ अछि, बहुतो पाइ देलियै। ओकर गुरु अंजनी देवी, एम.सी. रिअल स्टेटक मैनेजिंग डाइरेक्टर श्यामानन्द चौधरीक माता छथिन माने अहाँक सासु।''

गीता भटनागरक गप्प सँ आश्चर्य मे पड़ि गेलीह मेनिका चौधरी, किन्तु ओ क्रोध आ धैर्य केँ संयमित करैत पुछलथिन, ''से अहाँ कोना बुझलिऐ ?''

''हमरा वैह छौंड़ी जकर नाम जुबेदा छिऐ कहलक। ओकरा अहाँक भाषा मैथिली सेहो अबै छै। अहाँ देखबै जे प्रत्येक पेंटिंग में किछु एना कयल रहै छै जे पेंटिंगक कलाकारिता बुझायत मुदा ओहि मे मैथिली मे पेंटिंगक नाम लिखल रहै छै। देखू ई पेंटिंग, एहि मे लिखल छै, 'जीवन सागर मे फुलायल अछि कमल।' की अहाँक भाषा थिक ने ?''

''हँ थिक तँ...''

''एतबे नइँ अहाँक सासु दू वर्ष मे सय सँ बेसी स्त्रीगण लोकनि केँ साक्षर बनौलनि अछि। आब तँ हिनक पढ़ाओल स्त्रीगण सभ दोसर केँ पढ़बैए। किशोरी-युवती केँ मिथिलाक पेंटिंग सिखौलनि अछि। आब तँ ओहि कॉलोनी मे जे दुखित पड़ैए तँ सभ हिनके आश करैए। ई धिया-पुता सँ ल'क' बूढ़ धरिक बड़ी माँ छथिन। कैक बेर एहन समय अयलैए जे ई रोगीक सेवा मे तीन-तीन दिन कॉलोनिए मे रहि जाइ छथि।''

गीता भटनागरक गप्प सुनि मेनिका चौधरीक हृदय मे ज्वाला देब' लगलनि, किन्तु डेरा पर अयलीह। सभ सँ पहिने दरबान केँ पुछलथिन तँ ओ बहुत अह्लाद सँ कहलकनि, ''बड़ी माँ एखने अयली हें।''

दरबानक मुँह सँ बहरायल बड़ी माँ शब्द तँ आर हिनका हृदय मे आगि धधका देलकनि। मन मे भेलनि जे ईहो तँ मजदूरे कॉलोनीक थिक, एकरा सभ टा बुझल हेतै। ईहो गीता भटनागर जकाँ अपन बोल केँ मधुर बनबैत सासु द' पुछलथिन तँ ओ दरबान निश्छल भेल

बड़ी माँक दिनचर्याक गुण-कथा कहिल गेलनि। तकर बाद खेनाइ बनब' वाली सँ, पोछा लगब 'वाली सँ, आर-आर लोक सँ पुछलथिन। सभ केँ बड़ी माँ द' सभ टा बुझल छलै। मेनिका चौधरी मने-मन गमलनि जे ओ सभ बहुत आदर सँ हिनक सासु केँ अर्थात ओ सभ अपन बड़ी माँ केँ देखि रहलए। गीता भटनागर तँ हिनका कम कहलकनि ओहि सँ बेसी भ' गेल छलीह हिनक सासु। मन मे भेलनि जे हिनक सासु कोन लोक छथि। एहन सुख-सुविधा छोड़िक' ओ झुग्गी-झोपड़ी मे कोना रहि जाइत छथि? आखिर ओहन स्लम एरिया मे रहल कोना होइत छनि? सासु पर बहुत क्षोभ भेलनि मेनिका केँ। मन मे सोचलनि बिष्ठाक कीड़ा कतौ चानन पर बास करय! सभ टा सोचैत अपन सोच सँ पीड़ित होइत पतिक प्रतीक्षा कर' लगलीह।

साँझ मे अपन कार्यालय सँ घुमिक' पति अयलथिन। ओ हिनका सँ गप्प बुझि बहुत खिन्न भेलाह। माय पर भयंकर क्रोध भेलनि, किन्तु ओ अपन क्रोध केँ जँतलनि। कारण ओ जनै छलाह अपन माय केँ। हुनक माय झट द' झुकथिन नइँ, तर्क-वितर्क करथिन। विवाद बढ़ि सकै छनि तँ पत्नी केँ बुझौलनि जे एखन चुप्प रहथि। हिनक पत्नी सेहो चुप्प नइँ होइतथि किन्तु अपन बेटाक कारण चुप्प भ' रहलीह। हुनक बेटा केशव चौधरी बगलक कोठली मे छलाह। केशव चौधरी अमेरिका सँ एम.बी.ए. क'क' आयल छल। ओ अर्थशास्त्र मे ऊँच डिग्री लेलाक बाद अमेरिका गेल छल। ओकर लिखल अर्थशास्त्रक पोथी केँ अमेरिका मे बहुत महत्त्व देल गेल छलै। एखन ओ भारत सरकारक वाणिज्य मंत्रालय मे कोनो पद पर आयल छल। ओकरा सँ जयपुरक किछु पैघ व्यापारी समय लेने छलै, ओ सभ आठ बजे आबि रहल छलै, तँ मेनिका चौधरी पतिक बात मानि लेलनि किन्तु भरि राति दुनू बेकती खदकैत रहलीह।

आब पहिने बता दी जे अंजनी देवी मजदूर कॉलोनी कोना पहुँचली! अंजनी देवीक कथा ई छनि जे ओ अपन पतिक संग कोलकाता रहैत छलीह। हिनक पति भोलानाथ चौधरी ट्राम चलबैत छलाह। रिटायर कयलाक बादो ओ ओतहि रहलाह। तकर दू टा कारण छल, पहिल कारण जे ओ एक टा बंगाली सँ घर मोल लेने छलाह दोसर हुनकर पिता एक टा मंदिर मे छलथिन। पिताक मुइलाक बाद नोकरी रहितो भोलानाथ चौधरी मंदिरो केँ सम्हारथि। तखन अधिक काल मंदिरे पर रहथि। बढ़िया आमदनी रहनि। हुनका दू बालक श्याम आ बलराम। श्यामानन्द अपने संग रहलथिन किन्तु छोट बालक केँ भोलानाथ चौधरीक जेठ भाइ जागेश्वर चौधरी ल' गेलथिन। जागेश्वर चौधरी केँ अपना कोनो संतान नइँ रहनि तँ भाइ सँ छोटका बेटाक माँग कयलनि। भोलानाथ हिनका कहलथिन ई भैंसुर ओ देयादनीक दुख बुझि अपन स्वस्ति द' देलथिन किन्तु से आइ अंजनी देवी केँ पछतावा भ' रहलनि अछि। अपने ई मैट्रिक पास छथि किन्तु बलराम मैट्रिको ने क' सकलाह। पिती-पितिआइनक दुलार मे दूरि गेलाह बलराम। एकदम सँ ललबबुआ जकाँ कथुक चिन्ता नइँ। मरै सँ पहिने पिती-पितिआइन बहुतो सम्पत्ति देलथिन किन्तु बलराम सभ टा बोहा देलनि, किछु ने राखि सकलाह।

बाद मे पिता कहलथिन जे कोलकते आबह, मंदिर केँ सम्हारह। पिताक मोन मे रहनि जे मंदिर पर रहताह तँ स्वभाव सेहो नीक हेतनि आ ठीक सँ रहताह तँ गुजर सेहो चलतनि किन्तु बलराम हुनक गप्प नइँ सुनलथिन। बलराम केँ संतान मे मात्र एक टा बेटा, ओकरा अंजनी देवी अपने लग राखि पढ़ौलनि-लिखौलनि। ओ इंजीनियर भेल, एखन दुबई मे अछि। कहियो काल बाप केँ किछु पठबै छनि ताहि पर हुनकर छहरमहर चलिऐ।

अंजनी देवीक जेठ बालक इंजीनियर भेलाह। एखन ओ एम. सी. रिअल स्टेट जयपुरक मैनेजिंग डाइरेक्टर छथि। जयपुर मे अपन आलीशान घर छनि। लोक कहै छै जे ओहेन घर आइ दू करोड़ सँ कम मे नइँ बनतै। अंजनी देवी आइ ओही घरक दोसर मंजिल पर रहैत छथि।

ओना अंजनी देवी पतिक मृत्युक बादो बहुत दिन कोलकते छलीह किन्तु बलराम बेर-बेर कोलकाता आबि जोर देथिन माय एहिठामक घर बेचि चलू गाम। किन्तु, अंजनी देवीक मोन नइँ माननि। पति मृत्युक बाद मंदिर तँ छूटि गेल रहनि। किन्तु ओहिठाम अंजनी देवीक अपन समाज भ' गेल रहनि जकरा छोड़ै मे मोह होनि। खर्चा-वर्चा जोगर पाइ घरक किछु अंश भाड़ा पर लागल रहनि ताहि सँ आबिए जाइत रहनि। किन्तु एक बेर बलराम आबि बहुत जोर कयलथिन, बुझू एतेक भाभट पसारलनि जे अंजनी देवी पानि भ' गेलीह। जेठ बेटा श्यामानन्द केँ खबरि देलनि आ ओ अयलाह, दस लाख मे घर बिकेलै। घर तँ ओहेन नइँ रहै जे ओतेक दाम दैतै किन्तु ओहि जगहक एते महत्त्व रहै, तँ ओतेक दाम देलकै। घर बिका गेलाक बाद जेठ जन पुछलथिन, ''माय रुपया की करबै?'' ई कहलथिन, ''दुनू भाइ बाँटि लीअ।'' सैह भेलै।

अंजनी देवी छोट बेटा बलराम संग गाम अयलीह। एतै रहबाक विचार भेलनि। ओना श्याम कहने रहथिन अपना संग चलै लेल, किन्तु बलराम संग रहबाक विचार कयलनि।

गाम पर आबि अंजनी देवी बलरामक चालि-ढालि देखि चिन्ता मे पड़ि गेलीह। ओ नेतागिरीक चसका मे पड़ि भरि-भरि दिन बौआइत रहैत छलाह। ई ओहि चसका केँ तोड़बाक प्रयास कयलनि किन्तु सफल नइँ भ' सकलीह। पुतोहु केँ देखलनि दोसरे मोन-मेयाद। पाइ कत' सँ अबै छै तकर कोनो चिंता नइँ, भरि दिन पूजा-पाठ मे डूबलि, व्रत-उपवास मे मातलि, दान-दक्षिणा देबा मे मग्न। अंजनी देवी अपन पुतोहु केँ ओ सभ करैत अनुभव करथि जे हिनक छोटकी पुतोहु अंबिका मानै छथि जे हुनक बेटा दुबइ मे हिनके पूजा-पाठक प्रभाव सँ फलित-फुलित भ' रहलथिनहें। अंजनी देवी केँ पुतोहुक सोच पर हँसी लगनि। ओ मोने-मोन स्मरण करथि ओ समय जखन बलरामक बेटा कोलकाता मे हिनका संग रहैत पढ़ैत छल तखन कोना ई ओकरा संग भरि राति बैसलि रहैत छलीह आ पढ़ैत रहैत छल।

की करितथि अंजनी? ईहो अपन स्वभावक कार्य मे लागि गेलीह, वैह जे कोलकाता मे करै छलीह। छोट-छोट बच्चा केँ पढ़ायब, निरक्षर केँ साक्षर बनयबा मे बड़ मोन लगनि। कोलकाता मे कतेक एहन देशवाली छल जकर बूढ़ मे ई अक्षरक ज्ञान करौने हेतीह। कतेको केँ मिथिला पेंटिंग सिखौने हेतीह। कोलकाता मे कतेको बंगाली परिवार एहि लेल हिनक गुण गबैए। गाम मे एहि लेल ओ मुसहर आ मलाहक टोल सेहो जाय लगलीह। ओ सभ सेहो हिनक घर-आँगन आब' लागल।

छोटकी पुतोहु अम्बिका केँ ई बात सब नीक नइँ लगलनि। हुनका पूजा-पाठ मे एहि सभ सँ व्यवधान बुझाइन। ओ पति केँ एहि लेल कतेको बेर झिड़की देथि, ओ कहथि, अहूँ ओकरे सभ संग रहैत छी आ मायो तेहने छथि। माय केँ एत' रखबनि तँ हम नइँ रहब। बलराम पत्नीक गप्प सँ खिन्न भ' जाइत छथि। ई अपन जातिक विपरीत राजनीतिक धारा जे छलै ओहि धारा मे रमल छलाह। तकर कारण ओहि धारा मे बहुत कम, बुझू गोटपंगरा स्वजातीय रह'क कारणें बड़ मान-सम्मान छलनि। सांसद जी

बहुत आह्लाद सँ कोनो बैसकी मे अपना लग बैसबैत छलथिन। ई स्पष्टत: माय केँ वा ओकरे सब केँ कोना मना क' देथिन, मना कयला पर राजनीति पर पड़ितनि।

गामक लोक अंजनी देवीक प्रशंसा कर' लागल। जाहि मे ब्राह्मण सभ सँ आगू रहथि। पहिने ब्राह्मण लोकनि छोटकाक शिक्षा सँ डराइ छलाह आब आनन्दित भ'रहलाह, कारण एकरा लोकनि केँ शिक्षित भेला सँ ई सभ अपन सुरक्षा बुझब शुरू कयलनि अछि। बलराम ब्राह्मण लोकनिक प्रसन्नता सँ भीतरे-भीतरे डरेलाह। ई एहि सँ अपन राजनीतिक हानि बुझलनि। ओ पत्नी सँ एहि विषय मे गप्प कयलनि आ दुनू बेकती एहन बुद्धि रचलनि जाहि सँ साँपो मरय आ लाठीओ ने टूटय।

एक दिन पुतोहु कहलथिन, ''माय, बेटाक पाइ-कौड़ीक हालति बड़ खराब छनि, से ई नइँ बुझै छथिन।''

''किऐ, हम तँ तेहन कोनो खर्चा अहाँ सभ सँ नइँ करबै छी।'' अंजनी देवी पुतोहुक गप्प पर विस्मित होइत कहलथिन।

''जैह किछु खर्च तँ छै?''

''से हम की करब? हमरा पेंशन तँ नइँ भेटैए।'' अंजनी देवी आरो आश्चर्य सँ पुतोहु दिस तकलनि।

पुतोहु चुप्प भ' गेलथिन, किन्तु हिनक चुप्प भेल मुँहठान अंजनी देवी केँ भीतरे-भीतरे अस्थिर क'देलकनि। तथापि ई धीरे-धीरे अपन ओहि अस्थिरता सँ त्राण पयबाक प्रयास मे लागलि रहलीह। तकर किछु दिनक बाद जे भेलै से हिनका बहुत बेचैन क' देलकनि। बात भेलै जे एक दिन ई कतौ खाइत छलीह। तखने केम्हरो सँ बलराम अयलाह आ ओ हिनका लग ठाढ़ भ' पुछलथिन, ''माताराम, खेनाइ केहन भेलए?''

''नीक छै। तों कत' गेल छलह? हमरा भूख लागि गेल छल तेँ कनियाँ केँ कहलिऐ द' देबाक लेल।'' बेटा नइँ खयलनि अछि से बुझैत, ई लजायल सन कहलथिन।

''से ठीक कयलहुँ, मुदा ई बुझै छिऐ जे ई खेनाइ कत' सँ अबै छै? एना कोना चलत?''

बेटाक गप्प सन्न द' लेलकनि बुढ़ही केँ। ओ कहुना उत्तर देलथिन, ''से की कहै छह?''

''हम की कहब? जाहि बेटा केँ सभ दिन अपना लग रखलियनि ओ आइ बड़का लोक छथि, से अहाँ नइँ बुझै छी?''

''हँ बुझै छी, मुदा तोहर बेटा केँ सेहो अपने लग रखलियनि।''

''हँ से रखलियनि। ओ सलोकहि दुबइ मे रहैत छथि ओतहि जाउ।'' कहैत बलराम बड़बड़ाइत आँगन सँ बहरा गेलाह आ तकर बाद हिनका ओहि काल आरो खायब तँ गरगट बुझाइन। कतबो मोन केँ दाबथि नइँ, दाबल भेलनि। ओना बेटा केँ बहुत किछु कहि सकै छलीह, अपन अस्तित्व ओ बेटा सँ फूट बना सकै छलीह, मुदा ई बेटा सँ कोनो फसाद नइँ कर' चाहै छलीह। खाइ पर सँ उठि गेलीह। एकदम एकान्त मे चल गेलीह।

सोचय लगलीह की एहिठाम रहि अपन आगू जीवनक व्यवस्था करथि आकि जेठ बेटा लग जाथि? अपना केँ सक्षम बुझै छलीह, ककरो मुँह तकबाक विवशता हुनका नइँ छलनि, तथापि मोन मे भेलनि जेठे जन लग जाथि। जेठ बेटा केँ फोन कयलनि, ''अहाँ जेना-जत' छी आउ, हम अहाँ लग आब' चाहैत छी।''

श्याम गाम अयलाह आ माय केँ अपना संग जयपुर ल' अयलाह।

जयपुर मे जाइत देरी मेनिका (बड़की पुतोहु) ततेक आगत-भगत देखौलथिन जे ई गदगद भ' गेलीह। किन्तु कोनो क्षण मन मे होनि जे मेनिका सभ दिन एना क' सकतीह? कारण जतबे मेनिका केँ ई चिन्हैत छलथिन ताहि मे संदेह होनि। ओ संदेह दस-बारह दिनक बाद असली रूप मे समक्ष आब' लगलनि। मेनिकाक बोल करुआय लगलनि। बेटाक रंग-ढंग मे सेहो परिवर्तन अनुभव करथि।

एक दिन भोरे-भोर मेनिका हिनका कहलथिन, ''माय ई नीचा मे जे रहैत छथि से हिनका नइँ नीक लगैत हेतनि?''

''किऐ?''

''एत' बहुत लोक अबै छै ने।''

''लोक लग तँ लोक अयबे करतै। से नइँ ओतै तँ लोक जीयत कोना?''

''बुझलिऐ तँ ई साबिक जमानाक पढ़ल छथि। ई सभ मे सभ केँ समाजशास्त्र पढ़ब' लगै छथिन।''

''माने?''

''माने-ताने किछु नइँ। हिनक डेरा दोसर फ्लोर पर ठीक क' देलियनि अछि, चलथु-देखथु।''

बेटा सेहो जोर देलथिन। ई की करितथि? कठपुतरी जकाँ बेटा-पुतोहु संग दोसर मंजिल पर अयलीह। पुतोहु कोठली फोलैत भीतर अनलथिन आ कहलथिन, ''माय देखथु अपन कोठली।''

कोठली देखलनि। एकदम सजल-धजल। रंगीन टीवी, रेडियो, फोन, फ्रीज आ सुन्दर बेड। दोसर कात कुर्सी-टेबुल लागल। देबाल मे फिट आलमारी आ ओहि मे किताब सभ सजायल। आ सटले बाथरूम।

बेटा पुछलथिन, ''की माँ कोठली नीक लागल?''

''हँ, मुदा हमरा कोठलीक कोन? हम तँ अहाँ सभ लग आयल छी।''

''अवश्य आयल छी, मुदा हमरा सभ तँ व्यस्त रहै छी। हम कंपनीक काज मे आ अहाँक पुतोहु केँ सामाजिक काजक मेनियाँ छनि। अहाँ नीचा रहै छी तँ हिनका कैक तरहें बाधा होइ छनि। अहाँ समक्ष ककरो सँ खुजि क' गप्प नइँ कयल होइत छनि। आ अइ लेल, उपरे मे, एहिठाम बढ़िया हैत।'' बेटा कहि गेलथिन।

अंजनी देवी केँ लगलनि जेना कोनो चीड़ै केँ अंचोके केओ पकड़ि पिंजरा मे द' दै छै!... मुदा किछु बजलीह नइँ। श्याम मायक मन:स्थिति बुझलनि आ से बुझि ओ माय केँ सांत्वना दैत कहलनि, ''आइ संसार कीदन भ' गेलै, युग बदलि गेलैए। नव लोक अपना बीच कोनो बूढ़-सूढ़ केँ नइँ पसिन्न करैए। अहाँ नीचा रहै छी से कैक गोटे केँ नइँ नीक लगै छै। तेँ ऊपरे नीक रहत।'' पतिक गप्प केँ आर कने सम्हारबाक मोने मेनिका बजलीह, ''से हम सभ नीचा मे रहब। जखन जे इच्छा हेतनि हम सभ रही आ नइँ रही, नोकर पहुँचा देतनि।''

''हँ, हँ ताहि मे कहैक काज छै। तँ ठीक छै माय एतै रह आ आनंद सँ रह। जखन जे इच्छा होउ कहिहें। महाभारत, गीता, रामायण आ आरो-आरो पोथी सभ एहि आलमीरा मे राखि देने छियौ, जे मोन होउ पढ़िहें। ठीक छै तँ आराम कर।'' कहि श्याम दुनू बेकती नीचा उतरि गेलाह।

बेटा-पुतोहु नीचा उतरि गेलथिन आ ई दुनू केँ जाइत देखैत रहलीह, किछु ने बजलीह, की बजितथि? बजबाक कोनो स्थिति ओ सभ रह' कहाँ देलथिन।

एहि सँ पहिनो अंजनी श्यामक डेरा पर दू बेर आरो आयल रहथि मुदा तहिया पति रहथिन, आ ई लोकनि आयल रहथि। तहिया श्याम ई घर नइँ बनौने रहथि। ई सभ पहिल खेप दस दिन आ दोसर खेप आठ दिन मात्र रहल छथि। बाप लग श्याम केँ बहुत धाख होनि, कम बाजथि। पुतोहु सेहो कम बाजथि। ताहू सँ

बेसी ओहि दुनू बेर किछु-किछु दिन लेल आयल रहथि आ एहि बेर सभ दिन लेल आयलि छथि। तथापि ई पिछला दुनू खेप पुतोहुक मुँह-ठाम देखि अनुभव कयने रहथि जे हिनका लोकनिक रहब पुतोहु केँ नीक नइँ लागि रहलनि अछि। स्पष्ट लगलनि हिनका लोकनिक रहबाक कारणें हुनक स्वतंत्रता मे बाधा होइत छनि आ से नइँ नीक लगैत छनि। यैह सभ सोचैत अंजनी देवी पलंग पर बैसि गेलीह।

एक मास करीब बीतल हेतै, मुदा अंजनी देवी केँ होनि जेना साल सँ ऊपर भ' गेल एहि उपरका मंजिल पर अयना। बेर-बेर सोचै छलि जे किऐ अयलहुँ। ओना समय पर नोकर खेनाइ द' जाइत छलनि, चाह द' जाइ छलनि। कथुक दिक्कत नइँ छलनि।... मुदा बड़का दिक्कत छलनि! गप्प कयनिहारि केओ नइँ। पुतोहु सँ वा नोकरे-चाकर सँ गप्प करबाक लेल नीचा उतरै छलीह तँ पुतोहु तेना अकचकाइत पुछथिन, ''की लेतीह? की भेलनि।'' जे ई अकबका क' सोझे घुमि जाथि। ई की कहितथिन जे हिनका लोकक खगता छनि वस्तुक नइँ। हिनकर गप्प के बुझतथिन? से बुझतनि तँ हिनका ऊपर मे डेरा किऐ देतनि? एहना मे हिनका आब नीचा उतरै मे डर होब' लगनि आ ई नीचा नइँ उतरथि। किन्तु ऊपर मे लोक बिना अहुछिया काटथि। ई तँ बड़का जेल भ' गेलनि, तहिना सोचथि। असगर ने कोनो किताब पढ़थि आ टीवी देखथि, किछु मोने ने लगलनि। जेना प्यासल गाय खुट्टा पर बान्हल करैए। तहिना लोक बिना हिनकर मोन कर' लगलनि।

एक दिन ई खेला-पीलाक बाद नीचा उतरलीह। पाछू दिस एक टा पैसेज द'क' मकान सँ बाहर होअयक रस्ता बनायल छलै। अंजनी ओहि द'क' बहरेली आ घूमिक' गेट पर सँ बाहर आबि गेलीह। दरबान झुकिक' प्रणाम कयलकनि आ ई इशारा सँ आशीर्वाद दैत रस्ता पर आबि गेलीह। एक बेर ठीक सँ घर केँ देखलनि जे अयबा काल दोसर ठाम नइँ चल जाथि। पुन: रस्ता केँ ठेकनबैत आगू विदा भेलीह। बहुत दूर अयलाक बाद देखलनि जे फाँक छै आ ई जखन ओ फाँक टपलीह तँ देखलनि छोट-छोट घर शुरू भेलैए! ओत' देखलनि दू टा स्त्रीगण केँ मैथिली मे गप्प करैत। ओह! हिनका तँ जेना अपन लोक भेट गेलनि! जेना मुइल देह मे प्राण आबि गेने होइ छै तहिना हिनका मोन केँ भेलनि। ओत' ठाढ़ भेलीह जेना पानिक दू टा टघार जखन एक ठाम होइ छै तहिना ओकरा दुनू गोटे संग मिलि गेलीह। दुनू स्त्रीगण मे एक टा मन्दिरी गामक छल जे दरभंगा जिला मे पड़ै छै, दोसरक घर मधुबनी जिलाक पचही छलै आ हिनक घर सौराठ छलनि। दुनू गोटे संग कॉलोनी अयलीह।

बड़ी काल धरि कॉलोनी मे समय बीतलनि, तकर बाद डेरा घुमलीह। आ धीरे-धीरे कॉलोनी हिनकर अपन भ' गेलनि। ओहिठाम जतेक कॉलोनी रहै ओहि मे रहैत धीया-पुता सँ ल'क' बूढ़ धरिक 'बड़ी माँ' भ' गेलीह अंजनी देवी। ओहि कॉलोनी मे भारतक विभिन्न प्रान्तक लोक छल किन्तु सभ अंजनी देवीक संतानवत भ' गेलनि। ओहि कॉलोनी मे केओ बच्चा पढ़त तँ हिनके चिन्ता, ककरो विवाह हेतै तँ सभ हिनके सँ विचार पूछत। केओ दुखित हैत तँ ओकर सेवा मे अंजनी देवी अपन जान-प्राण लगा दैत छलीह। एहना मे कैक-कैक दिन पर डेरा घुमै छलीह। आ एहि सँ अतिरिक्त हिनक जे अपन प्रारंभिक रुचि छल। निरक्षर केँ अक्षर सिखायब। से सिखब' लगलीह। स्कूल जाइत धीया-पुता केँ सेहो पढ़ाबथि। से खास क'क' रवि केँ, जहिया स्कूल मे छुट्टी रहैत छलै। किशोरी ओ युवती सभ केँ मिथिला पेंटिंग सिखौलनि। से एक टा जे सीख लीअय ओ दोसरक गुरु भ' जाय। बाद मे ई तँ मात्र देख-रेख कर' लगलीह। एहि तरहें ई बात एक कॉलोनी सँ दोसर कॉलोनी गेल आ अंजनी देवी ओहि ठामक जतेक कॉलोनीक लोक छल तकर ई बड़ी माँ छलीह।

आब सुनू ई कथा, अर्थात मेनिका आ श्यामानन्द चौधरीक कथा!

भोर भेलै, अंजनी देवी बजाओल गेलीह।

श्याम पुछलथिन, ''माय, हम की सभ सुनै छी?''

''की?''

''यैह, जे अहाँ दू-दू दिन मजदूर सभक कॉलोनी मे रहि जाइ छी?''

''ठीक बात छै।''

''ठीक बात छै? अहाँ एकरा ठीक बात कहै छिऐ?''

''तँ अधलाहे की भेलै?''

''ओत' की लेब' गेलौं?''

''हम ओत' जीब' लेल गेलहुँ। एत' हम लोक बिना मरि जैतहुँ।''

''किऐ, एत' लोक नइँ छै?''

''हमरा लेल नइँ छै। मात्र नीक भोजन आ नीक सुविधा सँ मनुक्ख नइँ जीयत, मनुक्ख केँ मनुक्ख चाही।''

मायक गप्प सन्न द' लेलकनि श्यामानन्द केँ। ओ ततेक क्रोध मे आबि गेलाह जे बहुत बाजल नइँ भेलनि। एतबे बजलाह, ''ठीके जीवन मे ई हमर बहुत पैघ गलती छी जे हम अहाँ केँ एत' अनलहुँ।'' हुनक पत्नी मेनिका ओहि गप्प केँ आरो धधकबैत कहलथिन, ''हम तँ पहिने कहने रही, गामे मे कोनो इंतजाम क' दियौन। एत' आब'वाली ई नइँ छथि। एम.सी. रिअल स्टेटक मैनेजिंग डाइरेक्टरक माय स्लम एरिया मे दू-दू दिन रहि जाइए। जे सुनैए से हँसैए।''

पुतोहुक गप्प पर अंजनी देवी तमसेलीह नइँ! हँसलीह आ बजलीह, ''हँ कनियाँ, अहाँ जकाँ जे सोचत, से हँसत। ठीक छै, आब हम एहि ठाम नइँ रहब। एत' सँ हम जाइ छी। अहाँक स्टेटस पर नइँ पड़य सैह ने?'' कहि अंजनी देवी ओहि कोठली सँ विदा भेलीह जाहि मे रहैत छलीह।

तखनहि थोड़बे कालक बाद बगल सँ श्यामानंदक बेटा केशव बहरेलाह, बाप केँ पुछलनि, ''कत' गेली दादी माँ?''

''केशव, हुनका जाय दिऔन।''

''पापा कोना जाय दिऔन? हम स्वयं हुनका संग मजदूर कॉलोनी मे रहलहुँ अछि। पापा एतेक पैघ व्यापारी भ'क' अहाँ दादी माँ केँ नइँ चिन्हलियनि?''

''माने?''

''हम अहाँक गाम गेलहुँ, कलकत्ता गेलहुँ। जयपुर मे मजदूर कॉलोनी गेलहुँ। हम हिनका पर एक टा आलेख लिखलहुँ जे अमेरिका मे बहुत प्रिय भेल, हिनक फोटो संग भारतोक अखबार बहार कयलक अछि। हमरा एहि बातक प्रतिष्ठा भेटि रहल जे हम एहि महान महिलाक पोता छी। पापा, एखन सभ किछु बिकाइ छै। अहाँ हिनक बेटा छी, ताहि सँ अहाँक कम्पनीक मार्केट बढ़ि जायत। एहि दिशा मे थोड़े काज करू बस। बाजारवादक अर्थ प्राय: पूरा-पूरी अहाँ केँ नइँ लागलए।'' कहि विहुँसि रहल छलाह केशव चौधरी।

दुनू बापुत गप्प क' रहल छलाह ता देखलनि अंजनी देवी अपन वस्तु-जात ल' उतरि रहल छलीह।



संपर्क : **ग्राम-पो. लोहना, सरिसवपाही, मधुबनी-847410 (बिहार)**
मोबाइल : 9430447148

स्वप्निल उड़ान

रमेश रंजन

हवाइ जहाज मे ध्वनी अयलै। किछु क्षणक बाद लैण्ड हुअय जा रहल छै—दोहा हवाइ अड्डा पर। ओकर स्वप्न लोक आबि रहल छलै। रोमांचित छल ओ। सौंसे देह मे गुदगुदी छलै। पल-पल काटब कठिन भेल जा रहल छलै। होइ छलै कखन पयर टेकब कतारक धरती पर।

मोछक पमही संगे मोन फरफराइत रहै छै। ओ किछु देखैए, सुनैए, महसुस करैए, आ पैघ-पैघ उड़ान भरबाक कल्पना करैए। से राम भगत केँ राम भक्ति मे साफे मोन नइँ लगै छलै। धुरा, गर्दा पसेना यैह तँ छिऐ रामभक्ति। तइ सँ मुक्तिक जुगुत ओ खोजैत रहल।

से जखन गोंगियाइत हवाइ जहाज रुकलै तँ ई नीच्चा उतरबाक उपक्रम कयलक। रातुक समय मे कतार एयरवेजक विमान सँ उतरैत ओ स्वर्ग आगमनक अनुभूति कयलक। रंग-बिरंगी बिजुलीक ईजोत ओकरा आँखि केँ तिरमिरा देलकै। ओ आँखि मुनय आ खोलय। कतारक चमचमाइत जीवन शैलीक संभवत: अँखियास क' रहल रहय।

बाकी आदमी जिम्हर जाइक ओम्हरे ओ ससरि रहल रहै। दिन-रातिक अन्तर केँ समाप्त कर'वला अइ ईजोत मे ओकरा आँखि मे गामक कुप्प अन्हारक दृश्य नाचि रहल रहै। आँगन मे चूल्हि, चुल्हिक अगि सँ निकलैत ईजोत। ओसारक चक्का पर टिमटिमाइत दीप मोमरियायल, ओ ईजोत कम्म आ राइस बेसी फेकैत। ककरो कियो सद्य: रूप नइँ देखि पबै। सभ केँ सभ अनुमान सँ बजबै। मुदा कहियो भाय केँ बाप नइँ कहेलै। भाउज मे अप्पन कनियाँ नइँ देखेलै। माय केँ माय बुझलकै। खाय काल कौर कान आ नाक मे नइँ पैसले। मुँहे मे गेलै, सटा-सट्ट।

से ईजोत मे तँ डेग बढ़ैक रामभगतक, मुदा अन्हार बिसराइ नइँ। विदेश यात्राक सभ झर-झमेला मीलब' लेल म्यानपावर कम्पनीक लोक आयल हेतै। ने तँ ओकर नंगौटिया संगी मनोज आयले टा हेतै। अब कत' जायत? कोना जायत? काज केहन भेटतै? अइ सब बात मे ओझरायल छल।



जहिना सोचने छल तहिना भेलै। कतारक सड़क पर ओ तीव्र गति सँ चलैत गाड़ी पर जा रहल छल। आ रामभगत संगे चलि रहल छलै टुघरैत-टुघरैत टायर।

धानक कि राहड़िक बोझ लधने, बड़द केँ चाबुक मारैत, हहकारैत हाँकि रहल छै आ ओ ओही गति मे टायरक पाछू-पाछू जा रहल अछि। अनायासे ओकर हाथ कप्पार पर जाइ छै, पसेना काढ़िक' फेकैए—मुदा पसेनाक दरश नइँ छै ओकरा शरीर पर। मुस्की निकलै छै। सोचै अइ जे कतेक कष्ट छै गाम मे। कतेक सुख छै अइठाम। नान्हि टा झटका लगै छै—समान सहित गाड़ी सँ उतरैत अछि। आ अपना निवास मे पैसैत अछि।

रामभगत दलान देखने छल। जाहिठाम टोल भरिक लोक बैसल-उठल। खीस्सा-पिहानी चलल, खैनी-चीलम चलल। दिन भरि खेत मे कड़ा परिश्रमक बाद, साँझु पहर थकान दूर करै छल। राति मे किछु गोटे आराम करै छल। से ने ई दलान छै! तँ कि छै? जतय सयो लोक ओंघरायल छै। तह पर तह ट्रेनक डिब्बा जकाँ-एक तल्ला, दु तल्ला, तीन तल्ला। मनुक्ख केँ सुतक लेल बर्थ।

हॉल! एहन हॉल जे सिनेमा हॉलेक रूप मे देखने छल। एक टा नया संसार छलै ओहि हॉल भीतर मे। संसार भरिक श्रमिक। जे रामभगत जकाँ कियो सपना संजोक' आयल छल। कियो अवस्था सँ संघर्ष करैत आयल छल। कियो आवश्यकताक मारि सँ बचबाक लेल आयल छल। ओना ओहि हॉल मे अधिकांशत: नेपालक श्रमिक छलै। जे गरीबी आ अभाव सँ मुक्तिक लेल विदेशक माटि केँ मंत्र बूझैत छल।

से अप्पन बैग-बैगेज धरिते। एक टा ओछाइनो भेटिए गेलै। दू-चारि गोट गाम, टोल-परोसक परिचितो भेट गेलै। भेटिते कने आहे-माहे भेलै। फेर वैह।

जे कि होइ छै।

पड़ोसक गामक श्याम पुछलकै, ''की हालचाल छै गामघर के?''

''हालचाल बुझै लेल आदमी केँ कतार आब' पड़तै! गाम-गाम मे फोन-मोबाइल भ' गेलै। खढ़ खरखरायल तँ लोक बुझि गेल।''

''हौ फोनक बात फोने जकाँ होइ छै, आदमीक बात आदमी जकाँ। से कियो आयल तँ बुझाइए जे अपने बाप-भाय आयलए।''

रामभगत सोच' लागल, एहन खोन्ह मे रहै छै। हवाइ जहाज आ गाड़ी मे गरम-ठण्डी बुझाइते ने छलै। एतय कनकनी छूटै छै। कहै छै कतार बड़ गरम।

''अँय हौ एतय जाड़ लगै छै! विचित्र बात छै अइ जगह के। राति मे जाड़ से जाड़ सनक जाड़। दिन मे गर्मी से गर्मी सनक गर्मी। अपना सभ केँ तँ एना नइँ होइ छै।''

''हँ, अपना सभक आ अइ ठाँक अन्तर बुझैत जेबह, किछु दिन रुक'।''

बाकी सभ तँ रेहल-खेहल रहै। एकरा खाली अबुह-अथाह बुझाइ। ई तँ भ्रम नइँ रहै जे काज मेहनतिया हैत। मुदा केहन मेहनतिया से कल्हि मात्रे बुझि सकै छल ओ।

''हवाइ जहाजो के यात्रा मे थकाइ लगै छै। तहि सँ चल' खा ल' आ सूति रह'। ओहि ठाम किछु गोटे मीलिक' मेस चलबैत अछि। मुदा आइ आगन्तुक के रूप मे एकरा भोजन भेट जेतै। काल्हि सँ तँ फेर एहि ठाँक व्यवस्था मीलाबहि पड़तै।''

ओ भोजन करय। मुदा मोन ओकर कुदकि रहल रहै। कतेक शान सँ ओ आँगन अबैत छल। माय केँ एक-दू हाक पारै छल। भौजी-भौजी दू-चारि बेर चिचियाइत छल। आ फेर आदेश होइ छलै, ''खाय ल' दे बड़ भूख लागि गेल।''

माय बड़बड़ायल, भौजी धड़फड़ायल! आहा बौआ केँ भूख लागल छै। खेनाइ नहियो बनल रहै छलै, तँ चूल्हिक आँच केँ आओर धधकाओल जाइ छलै। कहै छलै, बैस' लए! बस्स भात पसेलै कि भफायल-भफायल भात थारी मे काढ़िक' ध' देलक।

खा क' निचैन सँ सूति रहल रामभगत। भोर सँ रामभगत लग विचित्र परिवर्तन अउतै। ओकर देह उघार देखिक' माय आकि बाबू देह पर चादरि नइँ ध' देतै। सूर्य चढ़ि जेतै तइयो घुसमोड़िक' सूतल नइँ रहि पाओत। काम सँ अन्हरायल ओकर बाबू सुतल मे ममता सँ मुँह देखिक' हर कान्ह पर उठौने खेत नइँ चलि जायत। आब जे किछु करतै, अपने करतै।

रतिगरे संगी सभ उठा देलकै। भोरे तैयार भ'क' चलि पड़ल, एक टा छोटका बस मे बैसक'। जत' उतरल तत'क दृश्य देखलक तँ देखिते रहि गेल।

छड़, ईटा आ सीमेन्टक पर्वत ठाढ़ कयल जा रहल छलै ओतय। सयक सय मजदूर आ दँतार सन मशीन सब लागल छलै। रामभगतक आँखि उपर उठलै तँ पपनी नीचा खसबै ने करै। लोक केँ काज करैत देखिक' एकरा भाडठ नइँ रहलै बुझ' मे जे हमरो यैह करबाक अछि। मुदा एकर तरबा गुदगुदाय लगलै, टाँग थरथराय लगलै। सौंसे देह काँप' लगलै। सभ अपन काजक बास्ते आगाँ बढ़ल। ओ ओहिठाम लुद्द द' बैसि गेल।

रोपनी समय मे जन केर बड़ अभाव भ' जाइ छै। रामभगत केँ बाबू कहलकै, ''रे चौकी नेने अबिहे।'' किछु ने बजलै। माय कहलकै, ''खेत मे जलखै द' अबही, हे बौआ ने द' अबियौ।'' ऊँह हमरा जनकपुर जाय के हय। कहिक' बात टारि देलकै।

''की बात, अइठाम बैस' अयलियै अइ। बैस'क छलह तखन तँ गामे छलह।''

ध्यान भंग भेलै। कहलकै, ''अइ पर हमारो चढ़' पड़तै?''

''तँ अहाँ नीच्चा मे बैसिक' की करबै? आदमी कत्ते एलै-गेलै से गनबै?''

''नइँ हम कहलिय जे।''

''अहाँ कहलिय' जे से छोड़ू आ हम जे कहै छी से करू।''

अनमने सँ विदाह भेल रामभगत। ऊपर आकाश जोड़ा रहल रहै। रामभगतक देह मे फुनफुनी छुटै। जेना सुइया सन किछु देह मे भोकि रहल हो कियो। कण्ठ क्षण-क्षण सुखै, सरसरायल हवा सँ बाउलक झोंका अबै आ सौंसे देह केँ दागि दै। ओ अपना केँ सम्हारबाक प्रयत्न करय। मुदा बेसम्हार भेल जा रहल रहय।

कहुना काटि लेलक ओहि दिनक समय। मुदा राति काटब रामभगतक लेल असंभव जकाँ भ' गेल छलै। गत्र-गत्र टूटैत बुझाइ छलै। गुड़-घाव जकाँ टभकि रहल छलै सौंसे देह।

''देह दुखाइ हउ? नइँ? तँ हाथ पैर कैला एना फेकै छै?'' मलिया ल'क' माय ठाढ़ ई बात पूछै, ''ला टाँग मे तेल औंस दै छियौ। छोड़ि दे ने।''

ई कहैत रहितै आ माय टाँग मे तेल लगाक' नीक जकाँ दबा देतै।... ''गे छोड़ि दे ने, छोड़ि दे ने।'' दू-तीन बेर ई आवाज निकललै रामभगतक मुँह सँ। बाकी संगी सभ गौर केलकै। ''की होइ हौ? ककरा कहै छही छोड़ि दिअ' ला।''

''नइँ कुच्छो, एहिना मुँह सँ निकलि गेलै।'' सरियाक' बैसल रामभगत आ पुछलकै, ''तोरो सभ केँ ओहे काम कर' पड़ै छो जे हमरा?''

सभ रामभगतक मुँह गौर सँ देख' लागल। जेना कोनो आश्चर्यजनक बात बाजल हुअय।

सभ स्वचालित मशीन जकाँ निर्धारित समय मे निर्धारित कार्य क' रहल छल। उठबाक समय, खयबाक समय, सुतबाक समय सँ दायाँ-बायाँ नइँ घुसकि सकै छल किओ।

पचीस आदमी सुतल ओहि हॉल मे रातुक स्तब्धता केँ चीर रहल छलै। ककरो साँसक तीव्रता, ककरो फोंफक ध्वनी आ किओ विचरण क' रहल छल स्वप्न लोक मे।

काठमाण्डु एयरपोर्ट पर रामभगतक माय कानि रहल छै। बापक आँखि नोरायल छै। ई चीड़ै जकाँ उड़ैत देखि रहल अछि—सीधे पहुँचैत अछि गाम। के नइँ भेटै छै ओइ गाम मे। सभ किछु अप्पन बुझाइ छै ओकरा। लोक काज करैत। अप्पन काज। सभ सँ सभ केँ सम्बन्ध छै। हँसैत अछि, गाबि रहल अछि। गाबिते-गाबिते ओकरा ल'क' उड़ि गेलै सात समुन्दर पार। एक टा बड़का सीमेन्ट, रड आ ईंट सँ बनि रहल घरक सीढ़ी पर लटका देलकै। ओकर हाथ सीढ़ी सँ छूटि रहल छै। ओ जोर-जोर सँ चिचियाइत अछि। ई कहू जे घेघियाइत अछि। नीन्न टूटै छै। ओ जीरो वाटक मद्धिम ईजोत मे हाथ सँ किछु हथोड़ैत अछि आ मुँह सँ बजैत अछि—माय छें...माय...माय छें!

जवाब कतौ सँ नइँ अबै छै। संभवत: भीतरक आतंक केँ मायक नाम ल'क' घटेबाक यत्न क' रहल रहय।



संपर्क : **नेपाल संगीत तथा नाट्य प्रज्ञा प्रतिष्ठान**
काठमाण्डौ-15, छाउनी, पो. बा. नं. 11730
ई-मेल : ranjanramesh@yahoo.com
मोबाइल : +977-9854024143

सुभाष चन्द्र यादवक कथा-संवेदना

तारानन्द वियोगी

सुभाष चन्द्र यादवक नवका कथा-संग्रह 'बनैत बिगड़ैत' हमरा हाथ आयल, ताहि सँ पहिनहि कैक दिस सँ एहि पर होइत टिका-टिप्पणी हमरा धरि पहुँचि चुकल छल। बेसी निगेटिव। किछु एहन जे एहि पुस्तक कें 'नइँ पढ़' जोग' पुस्तकक कोटि मे रखबाक आग्रह सँ भरल छल। अधिकतर तँ हम देखै छी जे मैथिली मे यैह होइ छै। हमरा लोकनि एही तरहें सार्थक लेखनक डाँड़ तोड़ै छिऐ।

कोनो संग्रह कें, चाहे ओ कथा-संग्रह हो वा कविता वा निबन्ध-संग्रह, एक नीक अथवा अधलाह संग्रह कोन आधार पर मानल जाय? अंग्रेजी सँ ल'क' मैथिली धरिक संग्रह कें देखैत हमर एक सामान्य मान्यता बनल अछि जे जाहि मे पाठक कें साठि प्रतिशत रचना, अपन पसंदक, अपन काजक भेटैत हो, तकरा एक नीक संग्रह मानल जेबाक चाही। एहि सँ बेसी प्रतिशतक निर्वाह कठिन छै आ ताहि मे प्रधान कारण अछि पाठकक रुचि-भिन्नता। जे से। हम तँ जखन पढ़लहुँ तँ बुझायल जे कोनो कारण नइँ छै जे सुभाषक एहि संग्रह कें अधलाह संग्रह मानल जाय।

चालीस बरख सँ ऊपर भेल जे सुभाष मैथिली मे कथा-लेखन शुरू केने छलाह। ओ शुरुहे सँ कने 'दोसर तरहें' लिखै छलाह। तकर तात्विक कारण छलै जे जीवन कें आ जगत कें कने दोसर तरहें देखै छलाह। 'दोसर तरहें' माने मैथिली मे जाहि तरहें देखबाक रेबाज रहलैए, ताहि सँ भिन्न तरहें। कोनो लेखक यदि जीनियस हैत आ ओरिजीनल लिखत तँ ई चीज हेबे करतै। से कैक गोटे मे भेलैए। सुभाषो मे भेलनि अछि। तँ हमरा लोकनि देखैत छी जे मैथिली मे जे गंभीर लोक सभ छलखिन, से सुभाष कें बहुत मान देलखिन। सुभाष मे, मैथिली साहित्य कें अपना लेल नैतिक समर्थन देखार पड़लै। प्रख्यात आलोचक कुलानन्द मिश्र कहलनि जे मैथिली कथाक क्षेत्र मे एक टा निश्चित सीमाक अतिक्रमण सुभाष चन्द्र यादवक बादे आरम्भ भेल।

कुलानन्द मिश्र 'बुधियार कें इशारा काफी' वला अंदाज मे अपन बात कहलखिन आ एहि बात कें नइँ साफ केलखिन जे मैथिलीक 'एक टा निश्चित सीमा' की छलै आ सुभाष कोन तरहें ओकर अतिक्रमण केलखिन। मुदा, हम पुछै छी जे मैथिली साहित्य अन्ततः थिक की? जीवन-जगत कें देखबाक एक टा ब्राह्मण-दृष्टि। अपना संतोषक लेल हमरा लोकनि कहि सकै छी जे एहि दृष्टि मे बहुत विविधता छै— अनेक वाद अछि, अनेक पीढ़ी अछि आदि-आदि। से बड़ बेस। मुदा, तैयो ई तँ एकर बड़ पैघ सीमा भेलै कि नइँ! मानै लेल तँ संसारक अधिकांश लोक आइयो यैह मानैत अछि जे मैथिली साहित्य आर.एस.एस.क एक टा सांस्कृतिक उपनिवेशक थिक, मुदा ई लोकनि दयनीय छथि कारण मैथिलीक सार्थक लेखनक यथार्थ हिनका लोकनि कें नइँ बुझल छनि। दोसर दिस हमरा लोकनि देखैत छी जे दृष्टिवान सम्पादक अशोक जखन समकालीन कथा पर 'संधान'क विशेषांक प्रकाशित करैत छथि तँ आयासपूर्वक सुभाषक कथा सँ आरंभ करैत आगामी विकासक आकलन करैत छथि। कुलानन्द मिश्रक मान्यताक सर्वजनीनीकरणक ई एक दृष्टान्त थिक।

सुभाष कने दोसर तरहें जीवन कें देखैत छथि। कोन तरहें? हुनक एक कथा 'एक टा अंत' मे आयल एक टा चित्रण हमरा एहिठाम मोन पड़ैत अछि। कथावाचक अपन बीमार ससुरक जिज्ञासा मे सासुर गेल अछि। ओतय ससुरक संग ओकर देखा-देखीक चित्रण कथाकार करैत छथि, 'जखन हुनका सँ विदा लेब' गेल रही तँ हुनकर आँखि मे ताकने छलियनि। ओहो हमर आँखि मे ताकने छलाह। आ हमरा दुनू कें बुझायल रहय जेना ई ताकब अंतिम ताकब थिक, जेना आब फेर कहियो भेट नइँ होयत।' देखल जाय। दुनू दुनूक आँखि मे ताकैए। दुनू दुनूक आँखिक भाषा बुझैए। एक दोसरक भावनाक आदान-प्रदान बहुत प्रामाणिकता संग भ' रहल अछि। अलग सँ एहि दुनू कें कोनो भाषाक प्रयोजन नइँ छै। कने अखियास कयल जाय जे एहि तरहक कम्यूनिकेशन मे संवेदनशीलताक कोन तल वांछित अछि, जीवनक मर्मक भीतर कतेक गहराइ धरि पैसब जरूरी अछि। ई सुभाष छथि! हुनकर सीमा छनि जे कलावादी ओ भ' नइँ सकै छथि, बहुत कलाकारी क' नइँ सकै छथि। ज्ञान छनि दुनिया भरिक। मुदा जखन रचबाक बेर अबै छनि तँ ततेक प्रकृत भ' जाइत छथि जे 'प्राइवेसी'क सर्वस्वीकृत मानक धरि टूटि जाइत अछि। अहाँ देखि सकै छी जे ई चित्रण मात्र एक चित्रण नइँ थिक। सुभाष दुनिया कें कोना देखै छथि तकर स्पष्टीकरण थिक। ई अपन पाठक सँ डिमांड सेहो थिक जे हुनका देखू तँ एहि ठाम सँ देखू, एतबा संवेदन-क्षमता राखिक', जीवन-मर्म मे एतबा डूबिक'। देखबाक प्रचलित रेबाज की अछि? ककरो वा कथू कें देखू तँ विचारक संग देखू जे कि देखै छी, कते देखै छी, कोन ठाम सँ देखै छी! आदि-आदि। आ जखन विचारक संग देखबै तँ चयन बुद्धि सक्रिय रहबे करत! देखल मे काँट-छाँट करब! जे प्रयोजनीय नइँ बुझायत तकरा छाँटि देबै। ततबें कें राखब जाहि सँ अहाँक अभिप्राय स्फुट भ' जाय। साहित्य मे आमतौर पर यैह रेबाज छै। परम्परित साहित्य शास्त्र सेहो एकरे कवि-प्रक्रिया कहैत छै। सुभाष कने दोसर तरहें देखैत छथि। देखबाक संकल्प टा खाली हुनकर होइ छनि, माने जे ककरा वा कथी कें देखबाक अछि। तकरा बाद, कोनो चयन-बुद्धि नइँ, कोनो विश्लेषण नइँ, कोनो सिंगार-पेटार नइँ, बस ओ खाली देखै छथि, जेना हुनकर कथावाचक अपन ससुरक आँखि मे देखने छल।

जीवन कें देखबाक दृष्टि अनिवार्य रूप सँ कथाक भाषा कें आ शैली कें आ रचना-विधान कें नियंत्रित करैत अछि। जेहन अहाँक

दृष्टि अछि तदनुरूप अहाँक शिल्प हैत। सुभाषक कथा मे हमरा लोकनि देखै छी जे व्यापक पसरल जीवनक कोनो एक टा क्षण सँ कथा शुरू होइ छै। आ जतय सँ शुरू होइ छै, तकर बाद एक-एक प्रक्रमक विवरण दैत आगू बढ़ै छै, बस विवरण दैत—बिना कोना विश्लेषणक आ तखन देखै छी जे कथाक ई क्रम आगू बढ़ैत-बढ़ैत कोनो एक ठाम आबिक' समाप्त भ' जाइ छै। कोनो पैघ कालखण्ड हुनका कथा मे नइँ भेटत, जेना हुनके समकालीन महाप्रकाशक कथा मे कमोबेश भेटैत अछि। तहिना, घटनावलिक अथवा विचार-सरणिक विश्लेषणो हुनका कथा मे नइँ भेटत, जेना हुनके समकालीन सुकांतक कथा मे भेटैत अछि। हम सभ तँ देखै छी जे अपन जाहि कथा मे सुभाष अपन प्रकृतिक विरुद्ध विश्लेषण करबाक प्रयास केलनि अछि, से कथा हुनकर कमजोर कथाक रूप मे चीन्हल गेल अछि। माने जे जे चीज ओ छथि, सैह बनल रहथु तँ ओ सुन्दर लगैत अछि।

हुनकर एक कथा छनि, 'अपन अपन दुख'। एक परिवारक माने पति-पत्नीक सात-आठ घंटा रातुक समय कोना बितलै, तकर विवरण एहि कथा मे देल गेल छै। पत्नीक मोन साँझे सँ किछु खराब छै जे कि परिवारक लेल एक रेहल-खेहल बात थिक। ओ बिनु भानस-भात केने खाट पर सूतलि अछि। पति देरी सँ घर घूरैत अछि। बच्चा सभक सहायता सँ कहुना भानस करैत अछि। खाइ लेल पत्नी केँ उठबैत अछि। ओ नइँ उठैत अछि। ओकर भोजन सुरक्षित राखि देल जाइछ। बाकी सभ लोक खाक' सूति रहैत अछि। पति कोनो आन कोठली मे सूतल अछि। राति मे तीन बेर आबिक' पत्नी पति केँ उठबैत अछि। पत्नी कर्कशा अछि। ओकरा मुँह सँ कुबोले बहराइत छै। पति केँ उठबैत अछि जे 'एना पाड़ा जकाँ डिकरय' नइँ। पति ठरर पाड़ैत अछि। मुदा चिन्तित अछि जे कण्ठ मे कफ फसने ओकरा घरघरी शुरू भ' गेल छै। भोर मे पता लगैत अछि जे पत्नी राति मे भोजन नइँ केलक। पति जँ उठौला पर उठि गेल रहितय, माने अपन बिछौना सँ बाहर, माने अपन सीमा सँ अपन घेराबंदी सँ तँ पत्नी भोजनो करितय, ओकर मोनो नीक होइतै आ 'ठरर आ घरघरी'क जाहि दुष्चक्र मे ई दुनू पड़ल अछि, सेहो टूटितय। ई सुखाड़क कथा थिक। एहि ठाम सभ कथू सूखि गेल छै—पति-पत्नीक संबंध, एक-दोसराक लेल राग, एक-दोसराक अस्तित्व केँ स्वीकारबाक लेल एक टा नमनीयता, एक टा 'स्पेस'—किछुओ बचल नइँ देखाइछ। जेहने एकर विषय छै, ठीक तेहने शिल्प आ तेहने कथा-भाषाक प्रयोग कयल गेल छै। दाम्पत्य-जीवनक जे आधारशिला छिऐ—प्रेम, से एहि ठाम कतहुँ नइँ अछि। आ, सुभाष एहि संग्रहक भूमिका मे कहैत छथि जे हम एहन मनुक्ख गढ़' चाहैत छी जे सब सँ प्रेम करय। ध्यान देल जाय। ओ दुनू पति-पत्नी तँ एक-दोसर सँ प्रेम नइँ क' पाबैए, कारण प्रेमक लेल एक टा शर्त छै, सेहो सुभाष भूमिके मे कहने छथि जे 'प्रेम वैह क' सकैत अछि जे सत्यक सर्वाधिक निकट हैत।' आ, अपन-अपन अहंकारक कारण जकरा सुभाष 'अपन-अपन दुख' कहैत छथि, आ व्यक्तित्वगत आन-आन मलिनताक कारण ई दुनू एक-दोसर सँ प्रेम नइँ क' पबैए। मुदा, जाहि तरहें सुभाष एहि विवरण केँ प्रस्तुत केने छथि, से पाठक मे प्रेमक जरूरत, प्रेम करबाक बेगरताक निशान छोड़ैए। (मोन पड़ैए हिन्दी-कवि अज्ञेयक एक टा कविता पंक्ति—दुख सबको माँजता है/और सबको मुक्त करना वह न जाने/किन्तु जिनको माँजता है/उन्हें यह सीख देता है कि सबको मुक्त रक्खे।) तँ सैह। एहना स्थिति मे जखन सुभाष कहै छथि जे प्रेम केनिहार मनुक्ख ओ गढ़' चाहै छथि तँ प्रश्न उठैत अछि जे एहन मनुक्ख ओ कत' गढ़' चाहै छथि—कथा मे आ कि पाठकक स्मृति-संस्कार मे? निश्चिते पाठकक स्मृति मे, ओकर संस्कार मे। प्रेम हुनक कथा-विषय नइँ थिक, कथा-विषयक प्रतिफलन थिक, से हमरा लगैत अछि।

मुदा, औपचारिक रूप सँ जकरा प्रेमक बारे मे लिखब कहल जाइ, ताहू तरहक कथा सुभाष लिखलनि अछि आ हमरा खुशी अछि ई कहैत जे एहन कथा मैथिली कथा-क्षेत्रक सीमाक सुनिश्चित अतिक्रमण करैत अछि। हुनक एक कथा थिक—'एक टा प्रेम कथा'। एहि कथा मे एक टा लड़की छै जे एक टा लड़का केँ बरोबरि फोन करैत अछि। फोनक मालिक कथावाचक थिकाह, जकरा लड़की अंकल कहैत छै आ लड़का जे कि कथावाचकक पड़ोसी थिक, के तँ ओ 'अंकल' छथिहे। एहि त्रिकोणक तेसर कोण—अंकलक—नजरिया सँ एहि कथाक रचना भेल छै। किछु पाँती सभ देखी—'आब ओ लड़की सीधे प्रेमी सँ सब तरहक गप्प करैत हैत। भरिसक यैह सोचिक' प्रेमी मोबाइल किनने हो। हमरा लागल जेना हमर किछु छिना गेल हो। आ, ईहो देखी—फोन राखि देलाक बादो हम ओत्तहि ठाढ़ रहि गेल रही। जेना किछु और कहबाक हो, किछु और सुनबाक हो। हमरा छगुन्ता भेल, ओहि लड़की लेल हम किए उदास भ' रहल छी?' आ एक टा परिस्थिति एहि तरहक—'साँझ केँ बेसी काल ओ किरानाक एक टा दोकान मे बैसल रहैत अछि। पहिने ओत्तहि देखबै। नइँ भेटल तँ ओकर घर जाय पड़त। लेकिन घर पर तँ ओकर माय-बाप छै। माय-बाप केँ लड़कीक फोन दिआ कहब ठीक नइँ हेतै।' आ अन्ततः निष्पत्ति किछु एहि तरहक, 'अपन छाहे जकाँ ओ लड़की हमर संग-संग चलि रहल छल, प्रेमी नामक रौद मे कखनो पैघ आ कखनो छोट होइत।' आब कहल जाउ जे एहि तरहक संबंध केँ कोन संबंध कहल जेतै? सुभाष कहै छथि, 'प्रेम कथा' माने ई अंकल महाशय सेहो प्रेम मे पड़ल छथि। एहि प्रेम मे जे ई दुनू लड़का-लड़की खूब जतन सँ एक-दोसर सँ प्रेम करय, तकरा निमाहय। 'प्रेम' जँ ई थिक तँ कहय पड़त जे भौतिक प्रेमक सब्लिमेशन (उदात्तीकरण) थिक। सोचिक' देखी तँ ई कथा, मात्र एक टा कथा नइँ थिक, मिथिलाक सामाजिक परिवेश मे आ मैथिली कथा मे एक टा नवीन पीढ़ीक आगमनक कथा थिक—एहन पीढ़ीक जे मानैत अछि जे धिया-पुता केँ एक-दोसरा सँ प्रेम करबाक चाही। तकरा निमाहबाक जतन करबाक चाही कारण ई दुनिया निर्बाध रहय ताहि लेल प्रेम जरूरी छै आ जीवन अपन लय मे आगू बढ़य, ताहू लेल प्रेम जरूरी छै। ई कथा तखन किछु आर पैघ देखार पड़त जँ हमरा लोकनि मैथिलीक संबंध-कथा सभक परिप्रेक्ष्य मे एकरा देखी। हमरा तँ मोन पड़ैत अछि—दू दशक पहिने मान्य साहित्यकार लोकनिक बीच 'मिथिला मिहिर' मे भेल तुमुल 'सम्मति-विमति' जाहि मे बात आयल रहै जे मैथिली कथाक संदर्भ लैत बात करी तँ मिथिलाक लोक प्रेम कइए नइँ सकैत अछि, जे ओ क' सकैए से थिक छिनरपन। जकरा प्रेमकथा कहल जाइछ से वस्तुतः छिनरपनक कथा थिक। प्रश्न अछि जे सुभाषक एहि कथा केँ छिनरपनक कोन कोटि मे राखल जाय।

अस्तु! हम सुभाषचन्द्र यादवक कथाक स्वभाव पर बात करैत रही। हुनकर कथाक स्वभाव एहन छै जे केन्द्र बिन्दुक थाह पेबा मे अक्सरहाँ मतांतरक गुंजाइश भ' सकै छै। एक मोड़ पर सँ कथा आरंभ भेल आ अगिला मोड़ अबैत-अबैत समाप्त भ' गेल। आब पाठक निर्णय करथु जे एतबा दूरक विवरणक निरन्तरता

मे केन्द्र बिन्दु कोन छल ? एहि मे पाठकक लेल 'बुढ़ारीक लाठी' बनै छै, सुभाषक देल शीर्षक। हुनकर कथा, एहि प्रकारक कथा सभ थिक जाहि मे शीर्षकक निर्णायक महत्त्व होइत छै। आ शीर्षक अन्ततः भेल की ? केन्द्र बिन्दुक संकेत। खतरा ई होइत छै जे जँ शीर्षक केन्द्र बिन्दुक ठीक-ठीक संकेत नइँ द' सकल वा संकेत अति दुरूह भ' गेल (कैनरी आइलैण्डक लॉरेल जकाँ) तँ सम्यक सम्प्रेषण कठिन भ' जाइ छै। एक टा दृष्टान्त ली। कथाक शीर्षक थिक, 'एक टा अन्त'। एहि कथा मे एक टा बुद्धिवादी युवक अछि जे कर्मकाण्डक विरोध मे ठाढ़ भेल अछि। अपन पक्षक स्थापनाक लेल ओ बहुत संघर्ष करैत अछि। मुदा ओकर बहुत दुर्गंजन होइत छै आ ओ अपनहुँ केँ अपना विचलित आ थाकल अनुभव करैत अछि। तकर डिटेल्स कथा मे आयल छै। शीर्षक देल गेल छै, 'एक टा अन्त'। प्रश्न अछि, कथीक अन्त ? जँ उत्तर हैत—कर्मकाण्डक अन्त, तँ मान' पड़त जे ई कथा नितान्त अधलाह आ असफल कथा थिक, कारण कथ्यक निर्वाह ने कथा-विवरण क' पायल अछि आ ने कथा-समय। मुदा, जँ एकर उत्तर होइ—'कर्मकाण्डक विरोध परम्पराक अन्त' तँ लगले देखब जे ई कथा खूब सुन्दर कथाक रूप मे मोन राख' जोग देखार पड़त, जे बहुत करुणा सँ भरल अछि आ एक टा संकल्प (संकल्प ई जे एहि युवक केँ संरक्षण भेटबाक चाही)क संग समाप्त होइत अछि। फेर वैह बात ! संकल्प कथा मे कथित नइँ भेल छै, ओ कथाक प्रतिफलनक रूप मे पाठकक मोन मे उचरैत छै।

ओना, गौर कयल जाय तँ सुभाषक कथा मे एक टा आर समस्या देखार पड़त। एकरा संतुलनक चूक कहल जा सकैए। जेना अहाँ कोनो फिल्म देखैत होइ आ पाबी जे कोनो एक टा दृश्य केँ जरूरत सँ बेसी काल धरि देखायल जा रहल हो, जकर कि डिमांड कथा मे नइँ छै। कहब आवश्यक नइँ जे एना एही दुआरे होइ छै जे दर्शक (वा पाठक)क डिमांड आ फिल्मकार (वा कथाकार)क डिमांड भिन्न-भिन्न भ' जाइत छै। से, हमरा लोकनि कैक टा कथा मे देखै छी जे विवरणक अनुपात-औचित्य टुटलै अछि आ किछु एहनो बात आबि गेल छै जकर आवश्यकता कथा मे नइँ छै। एक हद धरि सुभाषक कथा-दृष्टि एकरा लेल जिम्मेवार अछि आ एक हद धरि कथाक शीर्षक-चयन सेहो, जे कि एक खास फ्रेम मे राखिक' कथा केँ देखबाक आग्रह रखैत छै मुदा स्वयं कथे एहि आग्रहक रक्षा नइँ क' पबैत अछि। किछु ठाम तँ एहनो देखैत छी जे विवरण देबाक लेल जाहि शब्दावलीक प्रयोग सुभाष कयलनि अछि से उकड़ू बुझा पड़ैत छै आ सम्पूर्ण कथाक ताना-बाना मे पीयन जकाँ देखाइत छै। हुनकर एक बहुत सुन्दर कथा छनि, 'हमर गाम'। कोशी-परिसर मे बसल लोकक जीवन-संघर्षक ई अप्रतिम दस्तावेज थिक। एहि कथा मे बस एक ठाम, सेहो प्रसंगात एक टा स्त्री परमिलिया अबैत छै। एहि कथा मे पुरुखक जीवन-संघर्ष केँ ओ बहुत जीवन्त आ प्रामाणिक विवरण देलनि अछि, ताहि मे कतहुँ पुरुख-देहक अलग सँ कोनो वर्णन नइँ भेल छै। मुदा जखन स्त्री अबैत अछि, आ सेहो श्रम करैत स्त्री, गहूमक बोझ उठा-उठाक' थ्रेसर लग पहुँचबैत स्त्री, तँ कथाकारक नजरि ओकर श्रम पर नइँ, ओकर देह पर पड़ैत छनि आ हुनकर शब्दावली देखी, 'ओकर जोबनक उभार पुरुष-सम्पर्कक साक्षी छै।' लगे हाथ ओ ईहो बता जाइत छथि जे ई परमिलिया सूर्यास्तक बाद घास छील' जाइत अछि ! कारण संध्या-अभिसार के ओकरा खगता छै। किऐ ? एतेक 'सेन्शेसनल' ओ किऐ होइत छथि जखन कि कथा मे एहन कोनो माँग नइँ छै, उनटे कथाक समेकित प्रभाव केँ ओ खंडित करैत छै। 'कनियाँ पुतरा' कथा मे 'नेबो सन कोनो कड़गर चीज' कथावाचकक बाँहि सँ टकराइत छै जे कि 'लड़कीक छाती' छिऐ जकरा कथाकार 'फूटैत जोबन' कहलनि अछि। हम नोटिस कयलहुँ अछि जे कथाकार सुभाषक शब्दावली मे आयल ई नवीन प्रभाव थिकियनि। आनो-आन अनेक शब्द, मोहावरा, कथन-भंगिमा नव तरहें हुनका कथा मे आयल अछि। से सभ अधिकतर प्रामाणिक प्रभाव छोड़ैत अछि। मुदा गौरतलब थिक जे ओ 'भिजुअलाइजेशन' मे हाइपर सेन्सेबल भेलाह अछि।

एहि सभ बातक अछैत, कैक कारण सँ सुभाषक ई कथा-संग्रह सदैव स्मरण कयल जैत। एक तँ एहि कारणें जे मैथिलीक ई अप्रतिम कथाकार बीस बरख धरि लगातार चुप्प रहलाक बाद फेर कलम पकड़लक आ तकर परिणाम एहि संग्रह मे संग्रहित भेल अछि। एहि बीचक अवधि मे मैथिली कथा-साहित्यक परिदृश्य मे बहुत बदलाव आबि गेल अछि। कथा आइ ठीक ओत्तहि नइँ अछि जतय सुभाषक युग मे छल। बहुतो नव-नव चीज कथा मे आयल अछि। एक संवेदनशील सर्जकक रूप मे सुभाष एहि सभ कथूक प्रति ग्रहणशील सेहो छथि। ओ स्वयं कहने छथि जे हुनक एहि दोसर दौरक कथा सभ मे अपेक्षाकृत बेसी सावधानी आ सजगता छनि। हम पबैत छी जे नितान्त सजग रूप सँ सुभाषक साहित्य किछु एहन तथ्य ल'क' आयल अछि जे अक्सरहाँ समकालीन लेखन मे अनुपस्थित पाओल गेल अछि। जेना, एक यथार्थवादी कथा-भाषाक वितान, जकर मास्टर सुभाष छथि। जेना, कथा मे जीवन केँ देखबाक एक दार्शनिक दृष्टिकोण, जाहि मे ततबा गहराइ छै जे देखल जायवला वस्तु केँ अधिक पारदर्शी बना दैत छै। आ सभ सँ जबरदस्त मोन राखल जायवला चीज तँ छै—कोशी-प्रांगणक जीवन-संघर्ष पर केन्द्रित हुनकर तीन टा कथा एहि संग्रह मे संग्रहित छनि।

सुभाष कहियो कहने छला, ''जीवनक लेल जे नीक आ सुन्दर चीज अछि, हमर कथा तकरे आग्रही अछि। हमर कथाक प्रेरणा जीवन-प्रेम अछि। जे कोनो चीज जीवन-विरोधी अछि, हमर कथा तकरा प्रति वितृष्णा उत्पन्न करैत अछि।''

से ठीके। कम करय, बेसी करय, भाषा मे करय वा प्रतिफलन मे करय, सुभाषक कथा काज तँ जरूर सैह करैत अछि।

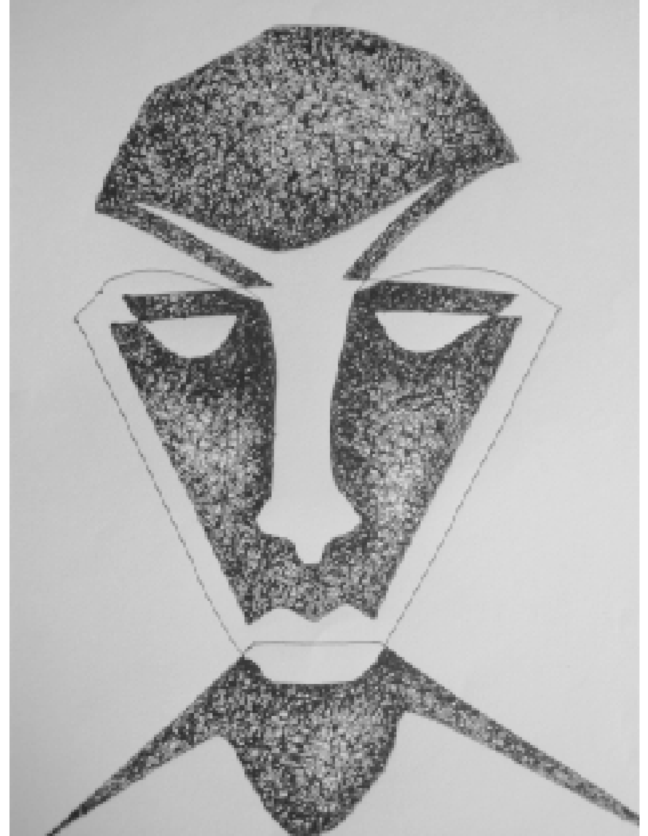


संपर्क : **शांति निकेतन**
सी.पी. ठाकुर पथ, शिवपुरी,
पटना-800023
मोबाइल : 9431413125

बर्टोल्ट ब्रेष्ट : रंगमंचक कविता-3

कुणाल

1938 मे ब्रेष्टक छ: टा कविताक एक टा फोल्डर प्रकाशित भेल। शीर्षक छलै, 'रंगमंच पर'। एहि मे सँ एक टा कविता डेनमार्कक सर्वहारा अभिनेता के 'पर्यवेक्षण कला' नाम सँ पछिला अंक मे आबि चुकल अछि जे ब्रेष्टक आब्जर्बेशन थ्योरी केँ सूत्रबद्ध करैत अछि। आब प्रस्तुत अछि 'प्रत्येक दिनक रंगमंच' जे हिनक निबंध 'द स्ट्रीट सीन'क आधार अछि। एहि मे ब्रेष्ट विस्तार सँ कहैत छथि जे केना गलीक नुक्कड़ पर स्वत: स्फूर्त डिमान्स्ट्रेशन एपिक थिएटरक आधार-प्रारूप अछि।



प्रत्येक दिनक रंगमंच

कलाकारगण!
अहाँ नाटक करैत छी
भव्य प्रेक्षागृहक सुसज्जित मंच पर
विद्युत सूर्यक इजोत मे
शांत समूहक सोझा। कहियो
ओत्तहु जाक' देखियौ। ओहि रंगमंच पर
जत' प्रत्येक दिन, हजारो नाम-यश विहीन
परंतु स्वाभाविक आ मानवीय संपर्क सँ पोषित
विराट नाटक प्रदर्शित होइत रहैत अछि निरंतर।
ओहि रंगमंच पर
जकर सेटिंग छै— सड़क

ओत' ओ महिला
टूटल नाली ठीक करेबाक सवाल पर
मकान-मालिकक धारा-प्रवाह भाषणक
नकल क' रहल अछि।
एत' एक टा छौंड़ा
पार्क मे ढहनाइत छौंड़ी सभक
नाज-नखराक संग वक्ष डोलेबाक भंगिमा केँ
देखा रहल अछि।
ओहि कोन मे, एक टा पियक्कड़
उपदेशकक भाना धरैत, गरीब लोक सब केँ
मरणोपरांत भेट'वला स्वर्गक वर्णन क' रहल अछि।
ओना
एक रंगमंचक रूप मे अजीब लगितो
कतेक उपयोगी, कतेक महिमावान आ गंभीर अछि ई रंगमंच
जत' कलाकार, सुग्गा आकि वनमानुष जकाँ
नकलक लेल नकल नइँ करैत अछि। ओ
ई नइँ देखबैत अछि जे ओ
नकल क' सकैत अछि। ओ तँ
किछु कह' चाहैत अछि। ओहि रंगमंच पर
जकर सेटिंग छै— सड़क।

हे सिद्धहस्त नकलची, महान कलाकारगण!
एहि परिप्रेक्ष्य मे, अहाँ लोकनि
ओकरा सब सँ
मिसियो भरि कम नइँ छी। तैयो
अपन कलाक पूर्णता आ उत्कर्षक लेल
अपना केँ जोड़िक' राखू
प्रतिदिनक ओहि रंगमंच सँ
जकर सेटिंग छै— सड़क।

आब, मोड़ पर ठाढ़
ओहि लोक केँ देखू जे

एक टा सद्य: घटल दुर्घटनाक वर्णन करैत
एक्कहि संग, गाड़ी चलौनिहार ड्राइवर
गाड़ीक ठोकर सँ घायल भेल वृद्ध आ
आसपास जुटि आयल भीड़क अभिनय करैत अछि।

ओकर प्रदर्शन मे, ओ सब किछु अछि
जाहि सँ दुर्घटना स्पष्ट भ' उठैत छै
एहि तरहें, जेना दुर्घटना
अवश्यंभावी छलै, परंतु संगहि
ओ स्पष्ट करैत अछि, जे बात
दोसरो तरहक भ' सकैत छलै, जखन ओ
देखाब' लगैत अछि जे की केला सँ दुर्घटना केँ
टारल जा सकैत छलै।
देखबाक बात छै
एहि प्रत्यक्षदर्शीक प्रदर्शन मे— जे घटना केँ
एहि तरहें देखबैत अछि जे लोक
भाग्यक नइँ
अपन गलतीक शिकार होइत अछि।
एकरा पर ध्यान दियौ
रंगकर्मीगण।
देखेबाक ओकर व्यग्रता आ लगन केँ
प्रदर्शनक सुन्दरता आ सम्पूर्णता केँ
दुर्घटना मे घायल भेल वृद्धक बारे मे
ओकर जानकारी केँ नोट करू
ओ वृद्ध बँचि गेल ने?
ओकर समुचित इलाज भेलै की नइँ?
ओकरा कोनो मुआवजा भेटलै की नइँ?
एहि सब जानकारी केँ नोट करू आ तखन
अहाँ ओकरा दोहराउ
ओहि रंगमंच पर प्रदर्शित अभिनय केँ
जकर सेटिंग छै— सड़क।

कलाकारगण!
देखू जे ई आदमी, नकल करैत-करैत
हेरा नइँ जाइत अछि। ओ कखनो
ओहि आदमी मे परिवर्तित नइँ होइत अछि
जकर ओ नकल करैत अछि। हरदम
दुर्घटनाक प्रत्यक्षदर्शी बनल ओ
स्वयं आ घायल वृद्ध केँ एक ठाम रखैत अछि— जत'
एक टा हृदय धड़कैत छै— आ
एक टा दिमाग सोचैत छै। ओ मात्र प्रदर्शक बनल
ओत' ठाढ़ अछि आ हमरा सब केँ देखबैत अछि
एक टा नाटक, ओहि रंगमंच पर
जकर सेटिंग छै— सड़क!

रंगकर्मीगण!
अहाँक प्रदर्शन मे
ड्रेसिंग रूम आ मंचक बीच
अद्‌भुत रूपांतरण सब होइत अछि।
अभिनेताक रूप मे ड्रेसिंग रूम छोड़'वला
मंच पर, राजाक रूप मे प्रवेश करैत अछि।
ई जादू
अहाँ लोकनि केँ प्रशंसा आ सम्मान दैत अछि
हाथ मे बीयरक बोतल आ
ठोर पर मधुर मुस्कान दैत अछि।
प्रतिदिनक रंगमंच सँ अहाँ
एत्तहि फराक छी कलाकारगण!
एहि गलीक प्रदर्शक
नींद मे चलनिहार नइँ
अपन काज केँ स्वर्गिक आदेश कहनिहार धर्मोपदेशक नइँ
जकरा टोकल नइँ जा सकैए
एहि गलीक प्रदर्शक केँ
प्रदर्शनक बीचक कोनो क्षण मे
अहाँ टोकि सकैत छी, ओ अहाँ केँ जवाब देत
आ तखन निर्विकार भाव सँ
अपन प्रदर्शन केँ आगू बढ़ाओत
एहि मंचक कलाकार
जकर सेटिंग छै— सड़क।

रंगकर्मीगण!
अहाँ ओकरा सब केँ कलाकार नइँ मानब?
नइँ, एना जुनि करू अहाँ
तखन अपना आ विश्वक बीच
एहन परिस्थितिक निर्माण करब, जाहि सँ
अहीं बारल जैब।
अहाँ ओकरा कलाकार नइँ बूझबै, तखन ओ
अहाँ केँ आदमी नइँ बूझत।

ओ कलाकार अछि, किऐ तँ ओ
मनुष्य अछि।
सत्य छै, जे अहाँ, ओकरा सँ बेसी
उत्तमतापूर्वक अभिनय क' सकैत छी। ईहो
सत्य छै जे ओ सेहो, अहीं सनक
सार्वभौम आ मानवीय अभ्यास
निरंतर करैत अछि, खेनाइ, सूतनाइ आ
साँस लेनाइ जकाँ, प्रतिदिनक रंगमंच पर
जकर सेटिंग छै— सड़क।

सड़क जत' प्रदर्शन मे मात्र
व्यावहारिक बात सब होइत छै। हमरा सभक मुखौटा
मुखौटा मात्र अछि। अहाँ
ओहि स्कार्फ बेचनिहार केँ देखू
ओ हैट पहिरि, बाँहि सँ एक टा बेत लटका
नाकक नीचा एक टा मोंछ साटि लैए आ

एक डेग आगू, एक डेग पाछू करैत
किछु कहैत-कहैत देखबैत अछि— जे
हैट, मोंछ आ स्कार्फ
मनुष्य मे कतेक परिवर्तन अनैत अछि। हमरा सभक संवाद
असाधारण नइँ लागत, जखन अहाँ
अखबार बेचैत हॉकर केँ देखब आ सुनब। ओ
लोक केँ शीर्षक सुनबैत अछि
जाहि मे सुनेबाक प्रभाव तँ छै, परंतु
बेर-बेर दोहरेबाक यातना नइँ छै। हमरा लोकनि
अनकर लीखल संवाद केँ दोहरबैत छी। परंतु
प्रेमी-युगल आकि सेल्समैन सेहो
अनके बात सब बजैत अछि। बेसीकाल
जगजनित सुक्ति सब केँ दोहरबैत अछि।

कलाकारगण!
मुखौटा, संवाद आ सुक्ति, साधारण बात थिक
असाधारण होइत अछि
सुरुचिपूर्वक निर्मित मुखौटा
सुन्दरतापूर्वक बाजल संवाद आ
समुचित सुक्ति।

रंगकर्मीगण!
ओहि रंगमंच सँ
हरदम जूड़ल रहू। अहाँक प्रदर्शन केँ
समस्त आवेश, संपूर्ण प्रभाव आ
असाधारण तीव्रता चाही। अहाँ
ओहि रंगमंचक ल'ग रहू
जकर सेटिंग छै— सड़क!
(रचनाकाल : 1938, अंग्रेजी सँ अनुवाद)

ब्रेष्टक ई कविता 'द स्ट्रीट सीन' नामक निबंधक आधार अछि आ शहरी प्रोसेनियम थिएटर-एक्टर केँ संबोधित अछि। एक बेर फेर एकर विषय छै, देखनाइ अपन आस-पासक जीवन केँ। बूझैत-गूनैत देखनाइ जाहि सँ एक सम्यक निष्कर्ष तक पहुँचल जा सकए। एक टा एक्टर जखन एहि तरहें जीवनक कोनो घटना केँ देखत तँ ओकर 'कला' माने अभिनय सकारात्मक रूप सँ प्रभावित हेतै। तखन जीवन कलाक स्रोत बनि जेतै। यैह उचित छै। किऐ तँ जीवन कला सँ बड़ पैघ अछि, विराट अछि। तेँ ब्रेष्ट कहैत छथि, 'अपन कलाक उत्कर्ष आ पूर्णताक लेल/अपना केँ जोड़िक' राखू, ओहि प्रतिदिनक रंगमंच सँ। जकर सेटिंग छै— सड़क।'

कविता मे ब्रेष्ट कतिपय उदाहरण दैत स्पष्ट करैत छथि जे सामान्य जीवन मे लोक सायास-अनायास नकल करैत रहैत अछि। जेना छौंड़ा, छौंड़ीक नाज-नखराक नकल करैए, पियक्कड़, धर्मोपदेशकक नकल करैए, किराएदार मालिक-मकानक नकल करैए...सब केँ सब अपना-आप मे स्पष्ट, खास आ सुन्दर छै। परंतु ओ जोर दैत छथि दुर्घटनाक नकल केनिहारक प्रदर्शन पर। ओकर नकल मे खास छै ओकर निष्कर्ष। एहि तरहें देखबैत अछि जे लोक भाग्यक नइँ/अपन गलतीक शिकार होइत अछि। अर्थात घटना केँ देखबाक आ विश्लेषित करबाक ढंग एहन हो जे निष्कर्ष केँ तर्कसंगत बनाबय, अतार्किक भाग्यवादी कथमपि नइँ।

राजकमल चौधरीक एक टा अल्पज्ञात नाटक छनि, 'भग्न स्तुप का एक अक्षत स्तंभ'। एहि मे एक ठाम कहल जाइत छै जे ...मंच पर ऋषि-मुनिक अभिनय कर'वला लोक नेपथ्य मे आबि हाथ मे शराबक बोतल ल'क' एलेन गिन्सवर्गक कविता पढ़' लगैए...। एत' ब्रेष्ट कहैत छथि, '...अभिनेताक रूप मे ड्रेसिंग रूम छोड़'वला/ मंच पर राजाक रूप मे अवतरित होइत अछि।' ई रूपांतरण अभिनेताक सम्मान, प्रसिद्धि आ संपन्नताक आधार बनैत छै। परंतु रूपांतरणक सफलताक अर्थ चरित्र मे हेरा जेबाक नइँ छै। जेना राजकमल चौधरीक अभिनेता ऋषि-मुनिक चरित्र मे नइँ हेराइत अछि। तहिना गलीक 'अभिनेता', '...नकल करबा मे/नइँ हेराइत अछि/कखनो ओ/ओहि आदमी मे/परिवर्तित नइँ होइत अछि/जकर ओ नकल करैत अछि...।' नकल करितो ओ नकली नइँ होइत अछि। अपन मूल व्यक्तित्व संग ओ मात्र प्रदर्शक अछि आ घटनाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण प्रस्तुत करैत अछि। तेँ ओकरा बेसी सजग कलाकार मानैत ब्रेष्ट कहैत छथि। ''एहि गलीक प्रदर्शक/नींद मे चलनिहार नइँ जकरा टोकल नइँ जा सकैए...।'' मंच पर होइत अभिनय मे दर्शक मात्र अपन उद्वेग व्यक्त करैत अछि। थपड़ी पीटैत अछि, हँसैत अछि आ कनैत अछि। परंतु ओ मंच परहक अभिनेता सँ प्रश्न नइँ पूछैत अछि। जँ से होइ तँ प्रदर्शन केँ बाधित हेबा सँ नइँ रोकल जा सकैए! परंतु गलीक ओहि प्रदर्शक केँ...प्रदर्शनक बीच मे कोनो क्षण/अहाँ ओकरा टोकि सकैत छी, ओ अहाँ केँ जवाब देत/आ तखन निर्विकार भाव सँ अपन प्रदर्शन केँ आगू बढ़ा लेत...। अर्थात प्रदर्शन करितो वैह रहैत अछि जे ओ अछि। एक टा आमजन जे कोनो घटना विशेषक प्रत्यक्षदर्शी अछि, ओकरा बारे मे अपन स्पष्ट मंतव्य रखैत अछि। ब्रेष्ट ओकरा कलाकार मानैत छथि किऐ तँ ओ मनुष्य अछि। अभिनेता लोकनि केँ सेहो यैह सलाह दैत चेतबैत छथि...''अहाँ ओकरा कलाकार नइँ बूझबै, तखन ओ/अहाँ केँ आदमी नइँ बूझत।'' फलत: एक अभिनेताक रूप मे अहाँ मनुक्खक जाति सँ बारल नइँ जैब। एहि सँ बेसी अधलाह की भ' सकै छै?

मंच पर अभिनय कर'मे संवाद, वेशभूषा, मुखौटा प्रभृति कलाकारक सहयोगी होइत छै। यैह बात गलीक अभिनेताक लेल सेहो लागू छै। एत' ब्रेष्ट हॉकर सभक उदाहरण दैत छथि। अखबार बेचनिहार हेडलाइन सब केँ चिकरि-चिकरिक' सुनबैत रहैए। हैट-स्कार्फ बेचनिहार, नाकक नीचा एक टा नकली मोंछ साटि, स्कार्फ आ हैट लगाक' आगू-पाछू चलिक' देखबैत ई प्रदर्शित करैए जे मोंछ, हैट आ स्कार्फ 'मनुष्यक व्यक्तित्व मे कतेक परिवर्तन आनि दैत अछि।' एहन क्रिया ओ लोकनि अनेकानेक बेर करैए। आ आकर्षण बनौने रखैए। ई संभव होइत छै किऐ तँ एहि मे देखेबाक सभ टा प्रभाव छै। परंतु, दोहरेबाक यातना बिल्कुल नइँ छै। ई छै एक टा खास बात जे समस्त अभिनेता केँ नोट कर'क चाही।

जीवनक प्रत्येक क्षण देखबाक आ गुनबाक योग्य अछि। एहि सँ जतेक बेसी संपृक्तता होयत, प्रभाव ततबे पूर्णता दिस अग्रसर होयत।

(क्रमश:...)



संपर्क : **सविता सदन (भारत प्रेस के सामने)**
पहला तल, रोड नं. 19, श्रीकृष्णनगर, पटना-800001
मोबाइल : 9334339348

n कविता : रामलोचन ठाकुर

नव-बर्खक मरसिया

किछु नइँ होइ छै
मात्र देवाल सँ झुलैत एक टा
कलेण्डर केँ बदलि गेनाइ

कोन तुक छै
एक विकलांग शिशुक जन्म पर
उत्सव मनओनाइ
जकर भविष्य
पहिनहि बन्धक राखि देल गेल होइ

मुदा तैयो
महानगर केँ सजाओल गेल छै

असल मे लोक
एहि धर्मप्राण महान देशक लोक
प्रत्यक्ष नइँ परोक्ष मे
जीवन नइँ मोक्ष मे
विश्वास कयनिहार लोक
उत्सव मनबैत अछि
जन्म सँ मृत्यु पर्यन्त
कारण ओ यैह टा जनैत अछि

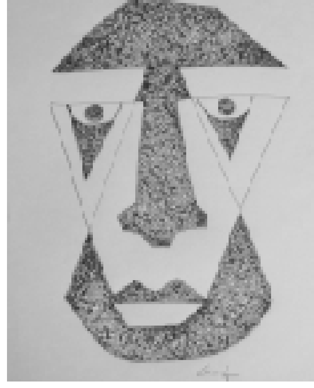
किन्तु आर विलम्ब नइँ
बन्धु हे !
आउ हमरा लोकनि लिखी किछु मरसिया
पहिने एहि नव बर्खक नाम
कम सँ कम
आरंभ तँ कयल जाय!

हरेक दिन

हरेक राति स्वप्न
स्वप्न मे मृत्युक उपस्थिति हरेक राति
हरेक राति मृत्युक आतंक
पाँजर लागल पत्नी निन्न भेर हरेक राति

हरेक दिन फोन, एसएमएस
समाँग सभक शुभकामना नव वर्षक हरेक दिन

हरेक दिन
विस्तृत भेल जाइत जड़शीलताक हरेक दिन
हरेक दिन जेठ-श्रेष्ठक याद
आइ, वर्ष दू हजार एगारहक
सातम दिन!



धन्य हमर ई देश

धन्य हमर ई देश
धन्य धन्य गणतंत्र
धन्य जाति धर्मक पयोधरा गाय
नाँगड़ि जकर पकड़ि उतरैत अछि पार
सहजहि केहनो अपरोजक पपियाह
ख्यात चुनावक नामे
वैतरणी के धार!

घर : पाँच चित्र

1.
अन्नक पश्चात घर
मनुक्खक दोसर आवश्यकता थिक
सुरक्षाक पहिल व्यवस्था थिक।

2.
घर बनबैत केओ अछि
ओइ मे रहैत केओ अछि
जे घर मे रहैत अछि
से घर बनबैत नइँ अछि
आ जे घर बनबैत अछि
से बिनु घरेक रहि जाइत अछि।

3.
आइ-काल्हि लोक
घरो नइँ मकान बनबैत अछि
शान्ति-सुरक्षा नइँ
शान तकैत अछि।

4.
आइ-काल्हि
घरक छाती पर
मकान बनैत अछि
सभ्यताक बोझतर
मानवता कनैत अछि।

5.
अपन घर बनेबाक लेल
उजाड़ब आनक घर
आइ-कालिह साधारण बात थिक
आश्चर्य नइँ
जकर घर उजड़ैत छै
तकरा केओ ने पुछैत छै
जे घर उजाड़ैत छै
तकरा सभ पूजैत छै।

स्वप्न : चारि चित्र

1.
स्वप्न सत्य भनहि नइँ हो
सुन्दर होइत छै
आ
जीबाक लेल कखनो काल
आवश्यक होइत छै
देखब स्वप्न
किछु नइँ केनाइ सँ
जीबिते पल-पल मरनाइ सँ।

2.
स्वप्न
केओ दिन मे देखैत अछि
केओ राति मे
केओ सूतल मे देखैत अछि
केओ जागल मे
देखबाक तँ ई थिक
जे के की देखैत अछि।

3.
स्वप्न
बहुतो लोक देखैत अछि
मन कतेक लोक रखैत अछि।

4.
स्वप्न
ने तँ सत्य होइत अछि
आ ने फूसि
सत्य अथवा फूसि होइत अछि लोक
लोक
स्वप्न देखनिहार।

संपर्क : **चिराग अपार्टमेंट, 4, ईटालगाचा रोड, कोलकाता-28**
मोबाइल : 9433303716

n सत्येन्द्र कुमार झा

प्रश्न

1.
गाम मे
कत' सँ खुएबै सँ
पैघ प्रश्न छै
ककरा खुएबै?

2.
शहर मे
कत' सँ खुऐबै सँ
पैघ प्रश्न छै
किऐ खुऐबै?

3.
ककरा आ किऐ खुऐबै
एहि नव प्रश्नक बीच
एखनो जीवित छै
ई प्रश्न
कत' सँ खुऐबै?

ओ

1.
ओ छूटि गेल छथि
जेना टिकट नेने यात्री
कने अबेर सँ प्लेटफार्म पर पहुँचैत अछि
आ गाड़ी फुजि जाइत छै
छूटि जाइत अछि ओ।

2.
ओकरा घेर नेने छै
जेना घेर लैत छै
माय आ पत्नीक मध्य पसरल झंझटि
कोनो व्यक्ति केँ।

3.
ओ अप्रासंगिक भेल छथि
जेना प्रवासी पुत्रक परिवार मे
अप्रासंगिक भ' जाइत अछि पिता।



4.
ओ अछोप बनल छथि
जेना श्राद्धकर्मक बाद अछोप बनि जाइछ
पुरहित।

5.
ओ ठमकि गेल छथि
जेना बिलाड़िक रस्ता कटलाक बाद
ठमकि जाइत अछि लोक
करैत अछि प्रतीक्षा
दोसर केँ आगाँ बढ़बाक।

6.
ओ सृजन करै छथि
जेना सृजन करैत अछि अनेको
अपन आ अपन वंशक लेल
आ अइना केँ उनटाक' ध' दैत अछि।



संपर्क : **आकाशवाणी, दरभंगा (बिहार)**
मोबाइल : 9835684869

'यात्री' संसार

अतुल कुमार ठाकुर

वैद्यनाथ मिश्र जे कालांतर मे अपन स्वच्छंद आ बौद्धिक विलक्षणताक कारणें 'यात्री', 'नागार्जुन' आ सब सँ खास 'जनकवि' उपमा पौलनि—सहजहि आधुनिक मैथिली आ भारतीय साहित्यक युग प्रवर्तक रहल छथि। मिथिलाक तात्कालिक पारंपरिकताक हिसाबें हिनक जन्म अपन मातृक (सतलखा गाम, मधुबनी) मे 30 जून, 1911 केँ भेलनि। मुदा तीन बर्खक अवस्था मे माताक निधन आ पिताक घुमक्कड़ स्वभाव एहि युग पुरुषक सोच आ बौद्धिक दिशा सहजहि आंदोलित कयलक जे अंत धरि बनल रहल। मैथिली, हिन्दी, बांग्ला, संस्कृत, पालि आ प्राकृतक उद्भट विद्वान वैद्यनाथ मिश्रक आरंभिक पढ़ाइ-लिखाइ सतलखा आ आगूक काशी मे भेलनि। शेष विपरीत परिस्थिति आ ग्रहणशील मनोबुद्धि जे ज्ञानक स्तर पर हिनका परिमार्जित करैत संवेदनशील बनौने रहलनि। वृहत ज्ञान, कार्यक्षेत्र आ यात्राक प्रवृत्ति होइतो यात्री जी पारिवारिक जीवनक प्रति तेना साकांक्ष नइँ रहलथि। हिनक विवाह अपराजिता देवी संग भेलनि, जे गृहस्थी आ छ टा संतानक निर्वाह अपार उतार-चढ़ावक बीच कयलनि। आ ई साहित्यक प्रवाह अक्षुण्ण बनौने यात्री बनल रहलथि।

1930क दशक मे वैद्यनाथ मिश्रक लेखन प्रस्फुटित भेनाइ शुरू भेलनि आ बाकी इतिहास सामने अछि। हिनक व्यापक सोच आ तकर भाषाइ रुपांतरणक। एक टा संक्षिप्त शैक्षणिक (सहारनपुर, उत्तर प्रदेश) कार्यकालक छोड़ि कहियो ओ पूर्णकालिक संबद्धता नइँ रखलनि कोनो संस्थान सँ। टैगोर आ यात्री दुनू लोकक मानवीय स्वभाविक गुणक स्थान सर्वोपरि मानलनि, कोनो कृत्रिम संबद्धता सँ। सोच मे बेसी जनाकांक्षी होइतो यात्री कतहु ने कतहु टैगोर जकाँ स्वाभाविकवादी (Naturalist) छलाह मुदा यात्री हिनका जकाँ संस्थानिक नइँ रहथि। संभवत: तकर एक टा प्रमुख कारण छल ब्रिटिश उपनिवेश आ उत्तर उपनिवेशि काल मे आयल अंतर जे बंगाल मे परंपराक आधुनिकीकरणक दिशा मे समावेश कयलक मुदा मिथिला मे तेहन कोनो आधुनिक जनजागरण नइँ हेबाक कारणें स्वकेन्द्रित आ स्वपोषित भ' गेल। यात्री मैथिलीक पहिल लेखक छलथि जिनक छवि राष्ट्रीय आ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात भेल। मुदा मिथिलाक स्थिति-परिस्थितिक कारणें हुनका आधुनिक मिथिलाक टैगोर होअय मे बाधक रहल। तकर बादो ओ युग परिवर्तक नइँ तँ युग सचेतकक भूमिकाक निर्वहन प्रभावशाली रूपें कयलनि आ अपन प्रगतिशील लेखन सँ तत्कालिक कुरीति—जेना सामंतवाद, जाति-व्यवस्था, बेमेल-ब्याह आदि पर पर्याप्त चोट करैत एक टा नव आदर्श अपन लेखन सँ प्रदान कयलनि।

ज्ञानक संग प्रयोग हिनका यात्री बनेलक आ एहि क्रमक एक टा छोट अध्याय बौद्ध अनुयायी रूप मे सोझा आयल। तिब्बत, मध्य एशियाक यात्रा सहित केलनिया (श्रीलंका) मे आबि ओ बौद्ध भिक्षुक भेलाह, 'नागार्जुन' नाम तकरे प्रतिफल। अपन समकालीन साहित्यकार राहुल सांकृत्यायन जकाँ बौद्ध नाम हिनको सँ जुड़ल रहलनि। 1930क उत्तरार्द्ध ओ कम्युनिस्टक विचारधारा सँ प्रभावित होइत सोवियत संघक यात्रा कयलनि आ जीवन पर्यंत एक टा स्वाभाविक प्रगतिशीलताक निर्वाह कयलनि। ई अवश्य जे पार्टी लाइन पर हुनका भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी सब सँ बेसीकाल मतभेद रहलनि। तकर बादो ओ वामपंथी रहलथि जे हुनक लेखन आ सामाजिक संकल्पना सँ सामने अबैत अछि। यात्री स्वाभाविक कार्यकर्ता छलथि तकर प्रमाण सोवियत संघ सँ भारत आगमनक तुरत बाद 1938 मे स्वामी सहजानंद सरस्वती (संस्थापक, किसान सभा) संग किसान आंदोलन मे हिनक सक्रियता सँ भेटैत अछि। लेखन आ क्रियान्वयनक स्तर पर सेहो।

जन संस्कृतिक निर्वाहक यात्री भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आ ओकर बाद भेल राजनीतिक आंदोलन मे सेहो सक्रिय रहलथि। 1939-42क मध्य, ब्रिटिश कोर्ट द्वारा हुनका सजायाफ्ता कयल गेल। स्वतंत्रताक बादो ओ बिहार मे भेल महत्त्वपूर्ण किसान आंदोलनक नेतृत्व करैत रहलथि। संगहि अबाध रूपें लेखन सेहो। जे.पी. मूवमेंट मे खूब मूखर होइत तत्कालिक असंवैधानिक प्रक्रियाक प्रति अपन लेखन आ क्रियाशीलता सँ विरोध दर्ज करैत रहलथि। आपातकाल मे ओ एगारह महीना जेल मे रहलथि...जनोन्मुखी प्रतिबद्धता यात्री जीक सब सँ पैघ अस्त्र छल जे हुनका भीड़ सँ हटा नेतृत्वक जगह दैत छल। सहज अभिव्यक्ति आ व्यक्तिगत जीवन मे तकर अनुपालन हुनक प्रसिद्धि केँ आगू कयलक। ई तथ्यपूर्ण अछि जे यात्री पर बंगालक भूखल नवपीढ़ीक कवि सभक असर छलनि, एहि क्रम मे ओ कंचन कुमार संग मिलि मलय राय चौधरीक दीर्घ कविता 'जख्म'क हिन्दी अनुवाद कयलनि। यात्री सोचक स्तर पर भौगोलिक परिधि सँ बहुत आगू रहथि। मिथिलाक संदर्भ मे हुनक लेखन मे हरदम नव अर्थ दैत रहल। अपन भू-भागक विलक्षणता आ अभाव सहजहि हुनक कविता, उपन्यास, लेख आ एत' धरि जे पत्र सभ मे अभिव्यक्त पबैत रहल।

जँ यात्री मैथिलीक स्थान राष्ट्रीय मानचित्र पर ल' गेलथि तँ हिन्दीक संस्थापना कार्यकारी भाषा सँ आगू करबा मे प्रमुख योगदान देलनि। वरिष्ठ कथाकार काशीनाथ सिंहक शब्द मे, "हिन्दी की हमारी पीढ़ी, बाबा की रोपी हुई फसल काट रही है।" विशिष्टताक बोध एक संग दू पैघ भाषा मे करौलनि से बहुत खास छल। आलोचकक एक टा महत्त्वपूर्ण पीढ़ी हिन्दी आ मैथिली मे यात्री/नागार्जुनक बनाओल छल जे अपन विवेचना कथ्यक हिसाब सँ कयलक ने कि पूर्व नियोजित भ'। रेणु पर हिन्दीक प्रख्यात आलोचक नामवर सिंहक विचार एखनो धरि खटकैत अछि... जीवनक स्थानीयकरण अवश्यंभावी होइत छै मुदा विश्व दृष्टि रहैत—से यात्री आ रेणु दुनू महापुरुष मे छल। समस्त विचरणक बादो ग्राम तरौनी, स्टेशन-तारसराय मुड़िया (पूर्व उत्तर रेल), शहर दरभंगा, मिथिलाक व्यथा आ सुंदरता यात्रीक संग रहलनि।



ई-मेल : summertickets@gmail.com
मोबाइल : 9873160118

उगरबाद नइँ छल ओ

कुमार मनीष अरविन्द

हजारीबाग मे ओहि दिन भोरे पाँच बजे मोबाइलक घंटी बाजल छल तँ वन्यप्राणी प्रमण्डलक डी.एफ.ओ. विवेक जी केँ भेल छलनि जे लकड़ी काट'वला चोर सभक बैलगाड़ी जंगल मे जयबाक सूचना देनिहार कोनो सूचनादाता होयत। मुदा फोनक लाइन लगाक' 'हलो' कहलखिन आ ओम्हर सँ जखन चिन्हार स्वर मे 'परनाम सर' कहल गेलनि तँ बूझि गेल छलखिन जे ई जोधा महतो अछि। मुदा ओहि परनाम-पातीक बाद फोनक लाइन कटि गेल छलै...आगू किछु गप्प नइँ भ' सकल छलनि विवेक जी केँ।

जोधा महतोक उमर पचास बरखक लगधग मे छै। पढ़ल-लिखल बेसी नइँ अछि। हँ साक्षर अछि। अपना भरि हिसाब-किताब क'लैत अछि। डेढ़-दू बीघा मरौसी छै जंगलक बीच मे। ओकरे अपन उपजाबैए आ निफिकिर भ'क' रहैए। बेटी दुनू सासुर बसै छै। सभ सँ छोट बेटा पछिला साल मैट्रिक पास कयने रहै। ओकरा हजारीबाग मे पढ़बैए ओ।

जिला हजारीबाग मे अठाइस घरक बस्ती खैराक अघोषित मुखिया अछि जोधा महतो। ओना कहियो एक बेर खेराक 'इको विकास समिति'क अध्यक्ष सेहो चुनल गेल छल। मुदा तकरा बाद सँ कोनो पद लेल ओकरा लौल नइँ बचल अछि। बिना कोनो पद धयने ओ गामक नब्ज केँ एना क'ने धयने अछि जे बिना ओकर सहमति केर एक टा पातो कहाँ हिलैत छै खैराक!

ओहि दिन भोर मे फोन कटि गेला सँ आगू गप्प नइँ भ' सकलनि, मुदा ऑफिस मे ठीक साढ़े दस बजे जोधा महतोक पुरजी विवेकजीक टेबुल पर छल।

'परनाम सर।' कक्ष मे ढुकिते जोधा अपन विशिष्ट शैली मे हाथ जोड़िक' प्रणाम कयने छलनि।

'क्या जी, जोधा महतो! बैठो। क्या हाल-चाल है?'

'ठीक हैं न सर।' जोधा महतो सकुचाक' कुर्सी पर बैसैत बाजल छल।



किछु लोक जोधा महतो केँ उग्रवादी कहैत छै। पुलिस कैक बेर पूछताछ करबाक लेल पकड़नहुँ छै ओकरा। ओ छाती तनने थाना तक चलि जाइत अछि। फेर सबूतक अभाव मे सभ बेर छूटैत रहल अछि। विवेक जीक नजरि मे तँ किन्नहुँ नइँ अछि उग्रवादी, जोधा महतो। हँ, नीक केँ नीक, आ अधलाह केँ अधलाह मुँहे पर कहि देबाक हिम्मत रखैत अछि ओ। मर्द जकाँ ठाँठि-पठाँहि ककरो मुँह पर सत्य बाजि सकैत अछि। स्वभावक कने उग्र अछि, मुदा तेँ ओ राष्ट्रद्रोही आ उग्रवादी भ' गेल, ई बात विवेक जी केँ नइँ अरघैत छनि।

विवेक जी अपन कक्ष सँ कम्प्यूटर ऑपरेटर केँ बहरा जयबाक इशारा करैत छथि। ओ बाहर भ' जाइत अछि। हुनका लोकनिक गप्प शुरू भ' जाइत अछि...

'सर, कुमरी मे पुलिस का छापा पड़ गया।' कक्ष मे एकान्त भ' गेलाक बाद जोधा बाजल छल।

'कब?'

'कल्हे रात मे तो।'

'अच्छा!... क्या हुआ?'

'ले गइस सुखिया को पकैड़ के।'

'सुक्खू को?' विवेक जी चौंकल रहथि।

'जी।'

'काहे?'

'का तो बोल रहा था दरोगा जी, जे उगरबाद लोग से साँठ-गाँठ करता है।'

'तब कैसे चलेगा अब जंगल बचाओ अभियान?' विवेक जी चिन्तित भेल रहथि।

'ई तो आप ही न बतलाइएगा सर। इसी से तो हम भोरे-भोर फोन किए। सोचे जो डी.एफ.ओ. साहेब को बोल देते हैं पहले। फोने नइँ लगा...' जोधा महतो हुनका मुँह दिस ताक' लागल छल। विवेक जी चिन्ता मे डूबि गेल रहथि।...

जोधा महतो आ सुक्खू गंझू—ई दुनू गोटे मिलिक' खैरा आ कुमरी, एहि दू जंगल मे गाछक कटाइ केँ लगभग बन्न क' देने छल पछिला डेढ़-दू बर्ख सँ। राति-बिराति गामक युवक सभ केँ संगठित क' वन-सुरक्षाक लेल पहरा ओकरा सभक जीवनक एक टा हिस्सा भ' गेल छलै जेना। उद्देश्य भ' गेल छलै जीवनक—जंगलक सुरक्षा!

...एहि स्थितिक निर्माण मे समय लागल छलै। पहिने कहाँदन यैह लोकनि गाछ कटबा क' खुटरा गामक आरा मिल पर पठबाबैत छल।...जखन विवेक जी प्रभार लेने छलाह हजारीबागक ओहि प्रमण्डलक तँ किछुए दिनक बाद बैसार आयोजित कयने रहथि। सभ इको विकास समितिक अध्यक्ष सभक बैसार रजडेरवा मे भेल छलै। रजडेरवा सँ सभ सँ ल'गक गाम खैरा आ कुमरी सँ तँ स्त्री-पुरुष, बाले-बच्चे उनटि आयल छल। दिनका भोजनक इन्तजाम छलै सभक। ओहि बैसार मे बहुत-रास तिखगर प्रश्नक उत्तर सेहो देब' पड़ल छलनि विवेक जी अर्थात नवका डी.एफ.ओ. साहेब केँ। मुदा ओहि पहिल बैसारक तैयारी ओहो कयने रहथि नीक जकाँ। वनरक्षक टीम आ गामक चुनौटा युवक सभ मिलिक' गीत प्रस्तुत कयने छल—

हम वन बचाते हैं
जीवन बचाते हैं
हम वन बचा खुशहाली लाते हैं
हो-हो-
वनरक्षक गण हैं
जीवनरक्षक गण हैं
हम जीवन का अस्तित्व बचाते हैं...

गीत समाप्त भेलै तँ नारा लगौलक ओ सभ जोर-जोर सँ—

एक दल कहै: एक वृक्ष का वध होना है

दोसर दल उतारा दैक : हत्या सौ मानव शिशुओं की।

पहिल दल फेर कहै : बिन वन कैसे मनुज बचेगा?

दोसर दल बड़का प्रश्न रखै : कैसे वंश रहेगा बाकी?

एहि नारा सभक कैक आवृत्तिक बाद पर्चा बाँटल गेल छलै—अपने बच्चों के लिए जंगल बचाइए। आ हुनक ई नारा क्लिक क' गेल छलनि। लोकक पेट मे चलि गेल छलै गप्प। आ तहिए सँ विवेक जी सुक्खू उर्फ सुखिया गंझू केँ चिन्हैत छलखिन।

बैसारक तेसर दिन ओ साँझ मे हजारीबाग आयल छल डी.एफ.ओ. साहेबक सरकारी आवास पर। बहुत रास जानकारी भेटल छलनि ओहि दिन विवेक जी केँ इलाकाक सम्बन्ध मे। बहुत रास गप्प कयने छलनि सुक्खू।

'साहेब, रौर बात मे कोनो जादू बुझात हय। परसू देने सबिन रौरे बात करत हय।... ई साला सब मिलके खतम करै दै हय जंगल के। उजाड़ि दय है सर...।'

'तुम गाँव के लोग नहीं बचाओगे, तो पाँच-दस साल मे समाप्त हो जाएगा सब...' विवेक जी कहने रहथिन।

'बचाब हौ, सर। हमिन रौरे संग हइ।'

'कैसे बचेगा सुक्खू? हमारे पास तो वन विभाग के केवल तेरह वनकर्मी और पाँच दैनिक मजदूर हैं जंगल बचाने के लिए, और...उजाड़ने वाले हैं सैकड़ों-हजारों लोग।'

'हमिन सौंसे गाँव पहरा करब हुजुर। ओइसने, जैसन रौर मिटिंग मे कहत रही।'

'कितने दिनों तक करोगे?' विवेक जी ओकर संकल्पक परीक्षा लेब' लागल रहथिन।

'जेतना दिन बचब, ओतना दिन बचाब हौ सर आपन बन देवता-मैन के।'

'हम विभाग की ओर से इसके एवज में कुछ भी देने की स्थिति में नहीं हैं।'

'रौर पोस्टरवा हम साइट दै ही सर आपन घर के देवार पे—का जे लिखल हय—आपन छौआमैन के खातिर जंगल बचाब'।'

विवेक जी चुपचाप सुनैत रहल छलाह। ओ फेर बाजल छलै—सबके बहुत नीमन लागल सर। छौआ के माय कहत रहे के ई साहेब बहुत नीमन बात कहत हँय।

आ ओही दिन सँ सुक्खूक संग विवेक जी मित्र-भाव सँ जुड़ि गेल रहथि। ओ जंगल सुरक्षाक लेल विभिन्न गामक ईको विकास समितिक क्रियाशील सदस्य सभक अगुआ भ' गेल छल।

...बहुत जंगल बचलै ओकरा सभक प्रयासें। कैक टा अपराधी पकड़ल गेल आ जेल पठाओल गेल। कैक टा ट्रैक्टर बैलगाड़ी जप्त भेलै। मुदा एहि प्रयास मे कैक टा दुश्मन ठाढ़ भ' गेलै सुक्खूक ओही समाज मे, जकर प्राकृतिक संसाधन आ जैव-विविधताक रक्षाक, ओ वन विभाग संग मिलक' प्रयास क' रहल छल। मुदा सुक्खू ताहि सँ घबड़ायल नइँ छल। हँ, एकाध बेर एहि बातक चर्च कयने छल अवश्य। कहने छलनि डी.एफ.ओ. साहेब केँ जे सभ टा खाँटी लकड़ी-चोर सभ ओकर दुश्मन भ' गेल अछि। ओ सभ मिलिक' ओकर किछु अपकार करबाक प्रयास क' सकैत छै।

सुक्खूक घर मे दू टा छोट-छोट बच्चा आ झुलझुल बूढ़ बाप छलै। एकर सभक चिन्ता ओकर घरवाली उठा लेने छलै। सुक्खूक चिन्ता छलै जंगल! गाछ-विरीछ, जानवर, चिड़ै-चुनमुनी, नदी-नाला सभक रक्षाक चिन्ता। ओकर बाबूक मोन खराप रहैत छलै। दम्मा त्रस्त कयने रहैत छलै बुढ़बा केँ। विवेक जी कैक बेर ओकरा बापक इलाज लेल किछु पाइ देने छलखिन। मुदा ओ पाइ ओकर सहायताक रूप मे छलै। इन्फार्मर सभ केँ देबाक लेल थोड़ेक राशि विवेक जी केँ हाथ मे रहैत छलनि। ओहि मद सँ सुक्खू केँ अपन हिस्सा भेटैत छलै।...

'का सोच रहे हैं सर?'

बड़ीकाल धरि डी.एफ.ओ. साहेब केँ चुपचाप सोचैत देखि, जोधा टोकने छलनि। विवेक जीक तंद्रा भंग भेल छलनि जेना। घंटी बजा चपरासी सँ एक गिलास पानि मँगाक' पीलनि आ ओकरा कहलखिन—'अपने सुक्खू के ही बारे में सोच रहा था जी।'

'सर, हमरा मन मे एगो बात आता है।' जोधा बाजल।

'क्या? बोलो...' पुछलखिन ओकरा सँ विवेक जी।

'सर, आप एस.पी. साहेब से बतियाते...'

'इससे क्या होगा?'

'दरोगा जी गलतफहमी मे पकैड़ लिया है सर। सुक्खू कहाँ है उगरबाद?'

विवेक जी गुम्म भ' सोच' लागल रहथि।...

एक बेर कुमरी जंगल दिस भ्रमण करैत छलाह तँ सुक्खूक घर पर गेल रहथि विवेक जी। ओ बड़ आपकता सँ चटाइ बिछाक' बैस' लेल आग्रह कयने छलनि। विवेक जी ओकर बाबू सँ भेट करबाक अपन इच्छा ओकरा कहने छलखिन। ओ कने सकुचायल छल, मुदा तुरंते हुनका अपना घरक भीतर आँगन मे ल' गेल छलनि। पुरान चटाइ पर बुढ़बा फाटल-चीटल कपड़ा पहिरने पड़ल छल। सुक्खू ओकरा मुँह लग जाक' कहने छलै, 'देख बाबू, डी.एफ.ओ. साहेब आयल हथुन।'

बुढ़बा कनेक चौंकल छल, मुदा अशक्तताक कारणें उठि नइँ भेल छलै ओकरा।

विवेक जी ओकर चटाइक बगल मे बैसि गेल रहथि। हाथ जोड़िक' नमस्कार कयने छलखिन ओकरा आ कहने छलखिन जे 'चाचा जी, रौर बेटा नीमन काम मे मोर मदैत कैर रहै हय। जंगल बचाय रहै हय। एकर से सभिन के भला होबी। हमरे मैन के असिरबाद देउ।'

बुढ़बा आँखिक नोर सँ देने छलनि आशीर्वाद। ओहि बहुत रास आशीर्वादक सम्बल सँ सम्पन्न भेल आपस भेल रहथि डी.एफ.ओ. साहेब ओहि दिन कुमरी सँ।

तीन मासक बाद फेर कुमरी जेबाक मौका लागल छलनि। मुदा एहि बेर परिप्रेक्ष्य बदलल छलै। कान्हा राष्ट्रीय उद्यानक तीन दिनक कार्यशाला सँ आपस भेल रहथि। विवेक जी तँ भनसीया बैजू देने छलनि ई समाचार जे सुक्खूक बाबूक स्वर्गवास भ' भेल छलै। बहुत प्रयास सँ ओहि दिन फोन सँ सुक्खू सँ सम्पर्क कयने रहथि। पुछने छलखिन।

'बाबू के काम मे कुछ सहायता चाहिए, तो कहो?'

'हाँ, चाही जुन।' ओकर भीजल स्वर।

'क्या? बोलो।'

'पानी के बहुत दिक्कत हय सर। रौर बाटे एगो चापाकल हो ले, सुविधा होइ।'

सुक्खूक ओहि आग्रह केँ विवेक जी कोना नकारि सकैत छलखिन। ओकरा घरक आगू मे चापाकल गड़ि गेलै तेसर दिन। ओहि सँ अगिला दिन विवेक जी कुमरी गेल रहथि। जोधा महतो सेहो गेल छलनि संगे। सुक्खूक आँखि सँ बहुत रास कृतज्ञता टघरल छलै ओहि दिन! ओ डी.एफ.ओ. साहेबक आर बेसी आत्मीय भ' गेल छल।

जोधा महतो ओकर बापक काज मे जेठ भाय बनिक' ठाढ़ भेल छलै। एकर चर्चा कैक गोटे विवेक जी लग कयने छलनि।

आ से, सुक्खू केँ पुलिस पकड़ि क' ल' गेल अछि, जोधा महतोक ई सूचना विवेक जी केँ भीतर तक झकझोरि देने छलनि!...

'सर, आप एस.पी. साहेब को बोल देते तो छूट जाता सुखिया।' जोधा महतो विवेक जीक चुप्पी सँ असहज भ' रहल छल।

'इतना आसान नहीं है जोधा महतो।' विवेक जीक मोन खराप जकाँ भ' गेल छलनि।

'काहे सर, का गलती है ओकर?' जोधाक स्वर तिक्ख छलै।

जोधा सँ बहस करबाक मन:स्थिति मे नइँ छलाह विवेक जी। एतबे कहलखिन, 'घबड़ाओ मत, देखता हूँ, क्या हो सकता है।'

वास्तव मे असहाय महसूस क' रहल छलाह विवेक जी अपना केँ। जोधा केँ हुनका पर विश्वास छलै जे हुनका कहि देला सँ सुक्खू बरी भ' सकैत अछि। मुदा डी.एफ.ओ. साहेब केँ बूझल छलनि जे उग्रवादी वला मामिला मे ई सम्भव नइँ छलै।

जोधा केँ बहुत रास बोल-भरोस द'क' विदा कयने रहथि विवेक जी ओहि दिन। मुदा भरि दिन हुनकर मोन भरिआयल रहल छलनि। की सुखिया गंझू उग्रवादी अछि? हुनक एहि प्रश्नक कोनो समाधान नइँ भ' सकलनि। मोन बेर-बेर कहैत छलनि जे ई बात असत्य छै। मुदा मोनक एहि गवाहीक बादो एहि बिन्दु पर एस.पी. सँ गप्प करबाक हिम्मत ओ नइँ जुटा सकल छलाह। होइत छलनि जे ई समय भावुकता मे बहिक' अपना केँ पुलिसिया मकड़जाल मे फँसा देबाक नइँ छै। सुनने छलखिन जे विजिलेंस डिपार्टमेंट कहाँदन ओहि सरकारी पदाधिकारी सभक सूची तैयार क' रहल छल जकर साँठ-गाँठ उग्रवादी सभ सँ रहबाक आशंका छलै। तेँ सुक्खूक घरवाली आ धिया-पूता केँ बोल-भरोस देब' लेल कुमरी जेबाक तीव्र इच्छा होइतहुँ ओ मोन मारिक' कुमरी दिस नइँ गेलाह।

जोधा महतो हफ्ता-दू हफ्ता पर फोन सँ आकि भेट क'क' सूचना दैत रहैत छलनि। सुक्खूक बेल पिटीशन खारिज भ' गेल छलै। ओकरा पर आई.पी.सी.क भरिगर धारा सभ लादि देल गेल छलै। बिलटि रहल छलै ओकर परिवार।

चारि मासक बाद विवेक जीक स्थानान्तरण भ' गेल छलनि राँची। मुख्यालय मे आबि आन-आन प्राकृतिक काज सभ मे बाझि गेलाह। मुदा पछिला तीन बर्खक जीवनक चित्रसभ सोझाँ अबैत रहैत छलनि रहि-रहिक'... आ ओ ओहि काल-खण्डक धार मे उब-डुब करैत रहैत छलाह...

जुलाइ, 2008क गप्प कहै छी। ओइ दिन भोरे सँ झिस्सी लधने छलै। विवेक जी ऑफिस मे बैसल फाइल सभक निष्पादन मे लागल छलाह कि चपरासी आबिक' सोझा मे एक टा पुरजी राखि गेलनि। लिखल छलै—जोधा महतो, साकिन खैरा।

तुरत जोधा महतो केँ भीतर बजा पठौलखिन। ओ ढुकिते 'परनाम' कयलकनि। जोधा करीब छओ मासक बाद हुनकर भेट कर' आयल छलनि। ओकरा बैस' लेल कहलखिन। हाल-चाल पुछलखिन गाम-घरक। जंगलक मादे सेहो पुछलखिन। जोधा महतो संक्षिप्त जवाब दैत रहलनि। पहिने जकाँ प्रफुल्लित नइँ छल आइ ओ। चेहरा उतरल छलै ओकर। आँखि मे मुदा आगि छलै। बेसी काल गुम्मे रहल। जरूरते भरि बाजल...आ फेर एकाएक कहि गेल—

'सर, सुखिया को सजा हो गया है, पाँच साल।'

'विवेकजी निर्वाक भेल जोधाक मुँह दिस तकैत रहलाह।'

'ऊ उगरबाद नहीं है सर।' ओ कसमसाइत स्वर मे बाजल।

'जानता हूँ।' निसाँस लैत विवेक जी सहज होयबाक प्रयास कयलनि।

जोधा महतो आगू किछु नइँ बाजल। ओ दू-चारि मिनट तक गुम्म रहल। आ फेर उठि गेल कुर्सी पर सँ...विवेक जी अंदाजि रहल छलाह जे एक टा विकट बेचैनी भरल छलै ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व मे आइ। भयानक अंतर्द्वंद्व चलि रहल छलै ओकरा मन मे जेना... जाइत-जाइत केवाड़ लग जाक' जोधा ठमकि गेल, पाछू घूमिक' विवेक जी दिस तकलक। नजरि ओकर फाइलक गैट पर छलै।

'मगर हम सर, ई अन्याय बरदास नइँ करेंगे।... भेट किए हैं सर उगरबाद लोग के। बन गए हैं हमहूँ अब उगरबाद। आपसे झूठ नइँ कहेंगे सर।...बदला तो लेंगे सुखिया का...' आ जोधा झटकैत विवेक जीक कक्ष सँ बहरा गेल।

ओ फेर फाइल मे लगबाक चेष्टा कयलनि। मुदा टेबुल पर मूड़ी गोतने जोधा आ सुक्खूक संग हजारीबागक जंगल मे बिताओल तीन बर्खक ओहि समयक खण्ड सभक फ्लैशबैक मे डूबैत रहलाह बेर-बेर...आ विचार करैत रहलाह ओहि प्रक्रिया आ समीकरण सभ पर जे उग्रवादी बना दैत छै लोक केँ...चाहे ओ कोनो सुक्खू हो आकि कोनो जोधा महतो!



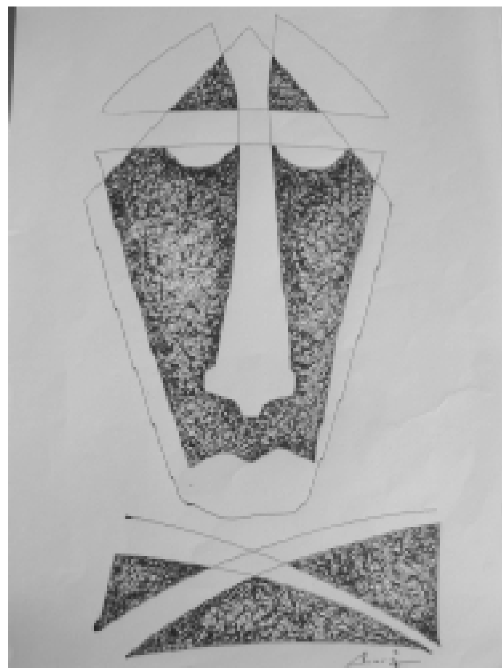
संपर्क : 301-आश्रेया, साईं विहार अपार्टमेंट
अशोक आश्रम, डिबडीह
राँची-834002 (झारखण्ड)
मोबाइल : 9431929837, 9470590965

भीजल इजोत

कुसुमावती देशपाण्डे
अनुवाद : **अरविन्द ठाकुर**

समाप्तप्राय मानसूनक पतरायल मेघ बाहर मे झिसिआइत रहय। मेहीं बुन्नक समूह, निपट असहायतावस्था मे लटकल सतभइयाँ तारा-समूह जकाँ, हवाक तोर पर बहैत भुइयाँ पर घोलटि रहल छलै, एकदम निस्तब्ध। चारि मास सँ झहरैत बरखाक प्रवाह थाकि गेल छलै, मुदा नियति द्वारा थोपल केँ ओ अनिच्छा सँ, बेमन सँ कयने चलि जाय रहल छल। शीतल-मंद हवा जे बहैत रहय, से जेना ओहि बहब केँ नकारैत बुझाइ; गाछक फूटैत हरियर पात सभ जेना ओकरा गुदानिते नइँ रहय। लागय जेना सभ टा सजीव वस्तु ठहिआयल आ उदासीनता सँ भरल होअय। चारूभर विराग पसरल रहय। मुदा की एहि विराग आकि जड़ता-विशेषक माध्यमे एक खास अपेक्षाक अतिसूक्ष्म अभिज्ञान अपना आप केँ अभिव्यक्त क' रहल छल?

कम सँ कम शांताक प्रकृति प्रेमी मोन केँ तँ एहने सन बुझेलै। चेत मे नइँ, मुदा जखन ओ खिड़की लग ठाढ़ि छलि, शून्य मे तकैत, एहने सन व्यग्र ध्वनि हल्लुके सँ ओकर मस्तिष्क मे गुँजलै। एक घंटी खाली छलै, ओ आने दिन जकाँ शिक्षिका कक्ष मे आयलि छलि आ खिड़की कातक बाँहिवला कुर्सी मे सान्हिआए गेल छलि। ओ पछिला घंटी मे अपन इतिहासक पढ़ौनी आ लड़की सभ द्वारा ताबड़तोड़ प्रश्न सँ ओकरा घेरबाक प्रयास केँ बिसरि जयबाक जीतोड़ प्रयास कयलक। मुदा कक्षा मे जाहि निराशा केँ ओ आश्वस्तिदायक शांतिक तर दाबि देने छलि, से कोठली मे ओकर एसगर बैसितहि उमड़ल चलि आयल। की ओ कहियो इतिहासक परबाहि कयने छलि? जखन ओ विद्यालय मे छलि तँ ओ एहि मे उत्तीर्ण-मात्र होयबाक भाँज क'लैत छलि। जहिना-जहिना ओकर वयस बढ़लै, गंभीरता सँ सोचैत, ओ मानव-गवेषणा लेल इतिहासक महत्त केँ बूझय लागल छलि विनित मुदा ओ कहियो एहि विषयक प्रति जीवन्त उत्कंठाक अनुभव नइँ कयलक। आ तेँ एकर मोजर नइँ जे ओ कतेक प्रयास कयलक, ओ कहियो एहि विषय पर ध्यान केन्द्रित करबा मे सक्षम नइँ भ' सकलि। ओहुना, जखन कखनो ई ओकरा पढ़ायल गेलै, दोसर तेसर कि चारिम क्रम सँ, अत्यन्त क्लान्त भाव सँ पढ़ायल गेलै। ओकर शिक्षक सभ तकर परबाहि नइँ कयने छलै। ओहो सभ एकरा घर पर रटि लैत छलि, थोपल-अढ़ायल जकाँ, आ तखन कक्षा मे एकरा दोहरा दैत छलि। प्राय: ओकरो सभ केँ ई ओहिना पढ़ायल गेल छलै आ प्राय: तेँ ओहो सभ ओहिना पढ़बैत छलि... तेँ की एक पीढ़ीक कयल पाप अबैत पीढ़ी सभक माथ पर बिसाइत गेलै?



किछु दिन धरि ओ इतिहास सम्बन्धी एहि जटिलता सँ लड़ल छलि। के छलीह ओ ग्रीक सभक इतिहासक सरस्वती? क्यो छलीह ने? कोना केओ ओकरा तुष्ट क' सकैत छल? ओ प्रसन्न होयबाक कोनो आभास नइँ देने छलीह, ने ओ ओकरा त्राण देतीह। आ एखन हुनके संग तारतम्य बनला पर शांताक शैक्षणिक कीर्ति निर्भर भेल अछि। कीर्ति की कखनो कीर्तिक छाँहो धरि ओकर बाट केँ छुलकै? इतिहासक पढ़ौनी पर ओकर जीवन निर्भर छलै। ओहि मे ओकर प्रगति पर ओकर जीविकाक निरन्तरता निर्भर रहय। ओकर जीवन...

की छलै ओकर जीवन?...खिन्नता सँ शांता उठलि आ खिड़की लग ठाढ़ भ' गेलि। अलक्षित भेल ओकर विचारक झिस्सी बरखाक झिस्सी मे मिझराय गेल। ओकर क्लान्ति बरखाक क्लांतिक संग एकमएक भ' गेलै—बाहरी संसार आ भीतरी संसार पर निपट उदासीनता व्यापि गेलै। शांता अपन दृष्टि केँ दूर धरि जाय देलकै। हरियरीक विराट पसार। ओहि सँ फराक ठाम-कुठाम पानि जमा भ' गेल छलै। किछु महींस पोखरि मे खेलौड़ क' रहल छलै। कखनो ओ सभ अपन मूड़ी उपर दिस फेकय, जेना बरखाक फुलझड़ीक मजा लैत होअय आ कखनो विनीत भावें ठाढ़ भ' पागुर कर' लगैत छलि। की ओकरा सभ केँ किछुओ परबाहि छै? की कोनो वस्तु ओकरा सभ केँ पीड़ाए सकैत अछि? ...केहन वैरागी जीव अछि ओ सभ? एक टा मुस्कीक किरिन शांताक चेहरा पर छिड़िआब' लागल छलै। ओकर मोन गतिमान भेलै। इतिहासक फंदा सँ बाहर गतिमान भेलै बरखाक संगीत मे विलीन भेलै, लगलै, महींस सभक संग, जीवंत होअय, अंततः एक टा क्षीण उदासीनताक संग। तेँ की, प्राय: एहि जड़ता सँ एक टा उमीद बहरेलै?

घुरती मानसून शीतकाल मे प्रवेश करैछ। भादबक मेघाच्छादित अकास शुद्ध आश्विनी नीलवर्ण मे रूपान्तरित भ' जाइछ। मानसूनक श्लथ, क्लान्त आ आर्द्र हवा सँ प्रारंभिक शरद ऋतुक स्वच्छ, तीव्र आ कनकन हवा अभरि अबैछ। क्षण-विशेषक उदासीक बीया मे ई

सभ टा आनन्द स्थापित रहैछ, से एहि मे अंतर्भूत छलै। शांता एकरा अनुभव कयलक, आ प्राकृतिक अंकुरन-संगीतक संग ओकर मोन सेहो एक टा चमचमाइत निष्कर्ष दिस पहुँचलै। की ओकर जीवन ठीके एहन सन सुख, एहन सन प्राकट्य देखि पाओत? आकि ई सभ जीवनक अदम्य मानवीय द्विखंडनक एक टा रूप मात्र थिक?

विचार मे डूबलि शांता ठाढ़े छलि कि नटगर-मोटगर स्कूल-चपरासी अपन जनेउक दोसर दिस लटकल कान्हक पट्टा सम्हारैत उताहुल भेल ओकरा दिस आयल। ओ शांता केँ सलाम करैत बाजल, ''बड़की बाइ साहिब अहाँ केँ बजबैत छथि।''

''बड़की बाइ साहिब हमरा बजबैत छथि?'' शांता मनेमन बाजलि। ओ किऐ बजाओल गेलि अछि? शांता अंतत: वार्षिक परीक्षा सभक चाँगुर सँ छूटि चुकल छलि, किन्तु वार्षिक निरीक्षण सँ 'बड़की बाइ साहिबा'क बजाहटि धरि विद्यालयी यांत्रिकताक सभ टा रूप ओकरा कोनो भारी परीक्षे जकाँ अबूह बुझाइत छलै। ओकर भँवर मे फँसि गेला सँ उपजल घुरमीक अनुभूति सँ ओ कहियो ने उबरि सकलि। एक छात्राक रूप मे ओ एहि कारखानाक पहिल पौदान पर छलि, आब जखन कि ओ अपन उपाधि (डिग्री) ल' चुकलि आ शिक्षण-कर्म सँ जुड़ि गेलि, ओ दोसर पौदान पर छलि, मुदा से एतबे टा। एकदम वैह कटु, असंगत टन-टन ओतय लगाब' मे रहय, वैह बहरूआ शक्ति द्वारा जबरिया चालित जीवन। एहि जीवन मे कतहु सृजनक आनंद नइँ छलै। एहि मे एहन किछु नइँ छलै जे ओकर अभ्यंतर केँ प्रमुदित क' सकैए।

शांताक अंत:स्रोत सुखि रहल छलै। ओ ओहि सुखायल डारि जकाँ भेल जा रहल छलि जे हवाक प्रत्येक कड़गर झोंक पर चिरकि जयबा लेल प्रस्तुत होअय। प्रधानाध्यापिका द्वारा बजाओल जायब एक टा ओहने सन अवसर रहै। मनमरू जकाँ शांता विद्यालय कार्यालय दिस चलि पड़लि।

जुगताक' ओ प्रधानाध्यापिका कार्यालयक लचिगर अधा पाट ठेलि भीतर आयलि। प्रधानाध्यापिका अपन टेबुल पर झुकलि रोजमर्राक कागज-पत्तर पर दसखत क' रहलि छलि। बगल मे ठाढ़ एक टा किरानी, आदरपूर्वक झुकल, कागज सभ केँ पलटैत आ दसखतिक जगह इंगित करैत जाइत छलै। जहिना शांता दरबज्जा लग प्रकट भेलि, ओ जोर सँ एक टा अत्यंत बनौटी स्वर मे बाजलि, ''आउ, आउ, शांता बाइ। एम्हर बैसू। हम प्राय: निबटिए चुकल छी। ठीक, नइँ, हे बस आब किछुए कागज। कुलकर्णी जी, अहाँ किछु क्षण प्रतीक्षा करब, प्लीज?''

कुलकर्णी आदरपूर्वक टेबुल लग सँ हटि गेल आ दोसर दिस तकैत ठाढ़ रहल।

'बड़की बाइ' नफासति सँ अपन चश्मा उतारि आ ओकरा कमानी लग पकड़ने बाजलि, ''हम अहाँ सँ कहय चाहैत रही, शांता बाइ, जे अहाँ केँ अपन छात्रा सभ सँ कनेक आओर बेसी लिखित काज करेबाक चाही। हम पछिला एक मास सँ सौंसे विद्यालयक काजक समीक्षा करैत रहलहुँ अछि आ तखन हमर ई सोच बनल अछि। अहाँक कक्षा लिखित काज मे आन कक्षा सभ सँ पछुआयल बुझाइत अछि। जँ साँच कही तँ अहाँ लग अफरात खाली समय अछि। घरो पर कोनो तरद्दुत नइँ। विद्यालय कार्यक अतिरिक्त कोनो भार नइँ। आकि अहाँ केँ एखनो कापी जँचनाइ थकाबयवला काज बुझाइत अछि?...नइँ, नइँ...अहाँ एना नइँ करू। ई कक्षा लेल बड़ बेजाय होयत। लड़की सभ कोनो विषय पर ताधरि अपन पकड़ सक्कत नइँ क' सकत जाधरि ओ सभ एकरा लिखिक' व्यक्त नइँ करत। प्रत्येक केँ वास्तव मे प्रति सप्ताह प्रत्येक विषयक कम सँ कम एक टा प्रश्न निश्चित रूपें लिखबाक चाही।''

आ एहने किदन-कहाँदन...बहुत काल धरि। हुनक स्वर एकदम कोमल रहनि, मुदा ई कोमलता गड़ैत रहै। चेहरा मुस्काइत रहै, मुदा ओहि मुस्कीक आवरण मलमलो सँ क्षीण लटकल रहै। ओ, जतेक हुनका बुते संभव रहै, प्रभुता आ परिपक्वताक हवा बान्हलनि, मुदा ओहि मे हुनक अपन अपर्याप्तताक प्रति हुनक बोध साफ परिलक्षित होइत रहै। तखनो शांता की कहि सकैत छलि? की ओ पूछय, ''की अहाँ स्वयं एहि लिखंत-विधिक यांत्रिकता मे साँचे विश्वास करैत छी?'' की ओ सुझाबय, ''हमरा किछु दिन अपना ढंगे पढ़बए दिअ आ लड़की सभक उत्साह सँ फैसला करू।'' ओ प्रधानाध्यापिकाक प्रवचन सुनैत रहलि आ तखन एहि मे कोनो टा गप कहबाक कल्पनो धरि ओकरा नइँ भेलै। प्राय: ओ बुझियो धरि नइँ सकलि जे ओ किछु सुनबो कयलक। निपट चेतनाशून्यता मे ओ बैसिल आ सुनैत रहल छलि। बड़ी काल बाद ओ अपन विषाद सँ भरलि आँखि उठौने छलि। किरानी कुलकर्णी, जे ओकरे दिस ताकि रहल छल, अपन मुँह दोसर दिस फेर लेलक।

पाँच बजे ओ अपन दू कोठली वला बासाक ताला खोलि रहल छलि। छिटकिनी घिंचायल आ दरबज्जा एहि संसार मे ओकर समग्र हिस्सा-कब्जाक सम्पत्ति दिस खुजलै। सभ टा वस्तुजात ओहिना ठाम पर रहय जेना दस बजे भोर मे छलै। ठाढ़ पंक्तिबद्ध पोथी सभ, कॉपीक ढेरी, टेढ़ सजायल घड़ीक कोण, सभ टा टेबुल पर। एक कोन मे स्थित बिछाओनक रंगीन चद्दरि पर एको टा घोकचन नइँ देखाइ। दू-एक टा चित्र आ दू-एक टा फोटो देबाल पर टाँगल रहै। एतेक नइँ जे कोनो फुद्दी आबि ओहि पर बास ल' लिअय, सभ टा एक सीध मे टाँगल, एकदम अपन सही वाजिब कोण केँ संरक्षित कयने। एक टा फोटो ओकर भाइक छलै। ई निश्चिते बहुत पुरान रहल हेतै। ताहि जमाना मे निश्चिते खूब बेसी उत्साह आ प्रेमभावक आदान-प्रदान भेल हेतै, जखन शांता कॉलेज मे छलीह। तहिया सँ आइ धरि ई शांताक विभिन्न कोठली सभ मे टँगाइत रहल अछि। आइ काल्हि भाइ कतहु नोकरी करैत छै। ओ खूब सजगता सँ ओहि लमगर चढ़ाय पर एक-एक डेग चढ़ि रहल छलै, प्रत्येक मास अपन बीमा किस्तक भुगतान करैत आ अपन गृहस्थी मे खूब रमल। आ ओकर फोटो, ओकर वर्तमान आकृति सँ सर्वथा भिन्न एक टा ननुआगर चेहरा, ओकर बहिनक कोठली मे निरंतर टँगाइत आबि रहल छलै। दोसर देबाल पर सुप्त सौंदर्यक एक टा खूब चिक्कन चित्र टाँगल रहै। एक टा मनोरमा षोडशी, अपन नोकर-चाकर आ प्रिय बिलाड़िक संग, एक टा एहन निन्न मे सूतलि जे अनेक बरस धरि अटूट रहयबला होअय। ओकर मुनायल आँखि ततेक ने वाकपटु छलै जे कोमल पलकहुक माध्यमे, जेनाकि साँचे होअय, ओकर आगामी जीवनक संपूर्ण सुकुमार आकांक्षाक इजोत केँ दर्शाबैत रहै जेकि ओकर सोलह वर्षीय आँखि मे निश्चिते देखायल गेल हेतै। ओ अपन आँखि मे वैह आकांक्षा केँ जोगने राख'वाली छलि आ खुजितहि ओहि आँखि मे एक शताब्दी भरिक स्वप्न अखनो भरि जाइवला रहै। शांताक कोठली मे सेहो कोनो जादुगरनीक सोंटा घूमि गेल रहै आ जिनगीक प्रवाह बंद भ' गेल छलै। मुदा कहिया? कोन परिस्थिति मे? आ की संभावित छलै?

डगर दिस खुजयवला खिड़की पर ओ

भोरे गमला मे किछु मेहँदीक फूल सजेने छलि। तखन सँ छओ-सात घंटाक भीतर ओहि मे अधिकांश मौलाए गेल आ गमलाक चारूकात खसल रहै।

शांता भीतरका कोठली मे पैसलि। समान रूप सँ मूक यंत्र सभक बीच रहैत स्टोव जराक' ओ अपना लेल चाह बनेलक। भनसाघरक नल पर किछु धो-धखार कयलक, भोजन कयलक। ओ पड़ि रहलि आ जिरेबाक प्रयास कयलक, एक टा उपन्यासक पन्ना सभ उनटेलक; मुदा अपन अन्यमनस्कता केँ कनेको नइँ दूर क' सकलि। ओकर जिनगी मे कतेक बेर एहन दिन स्मृत भेलै? आन नइँ, मात्र शांता ई जोड़ क' सकैत छलि, एक टा खास संख्या केँ तीन सय पैंसठि सँ गुणा करबाक छलै, बस। मुदा एहि हिसाब केँ हल करबा मे ओ कहियो सक्षम नइँ भेलि। ओकरा लेल ने कहियो ई अवसरे बीतलै आ ने वर्षे खतम भेलै।

ओकर मनोजगत मे एक टा पात नइँ हहरै। सत्ते, एखनो ओकर आँखिक नीलवर्णी अकास मे भरल पनिआयल मेघ किन्हु टूटिक' प्रवाह नइँ बनतै। भोरका फूही मे सतभइयाँ ताराक घौदा जकाँ, नोर ओकर पिपनी धरि आबि बिलमि गेल छलै।

भरि साँझ आ बड़ी राति धरि शांताक मोन एहि उदासी सँ भरल रहलै। फरिच्छ होइते ओकरा निन्न आबि गेलै। मुदा जखन खिड़की सँ अबैत सूर्यक किरिन ओकरा जगेलकै तँ ओकर माथ भारीए छलै, देह गरम बुझाइत छलै आ ओकर मुँहक सुआद विचित्र सन भेल छलै। ओ अनुभव कयलक जे रातिए ओकरा बोखार चढ़ि गेल रहै। ओ कल्पना मे बड़की बाइक आकृति देखलक जे ई सोचै पर तुलल छलि जे शांता ओतेक कठोर परिश्रम नइँ करैछ जतेक ओकरा करबाक चाही; आ आब शांता केँ लक्षणाधारित अधिकार सँ छुट्टी लेबय पड़तै; आ ई बात बड़की बाइक पुर्वाग्रह केँ पुष्ट करतै। मुदा शांता की क' सकैत छलि? ई कोनो पहिल अवसर नइँ रहै जे ओ अपना प्रति बड़की बाइक तिरस्कार-भाव मादे जानने छलि। ओ एकरा बेस रहरहाँ अनुभव कयने छलि। मुदा ई तँ छोट आफति सभक ढंग थिक। एक-दू-दस बेर ई कोनो चेन्ह नइँ बनबैत अछि, मुदा एक बेर एहन अबै छै जे अगिला पुनरावृत्ति पछिला दसो अवसरक संयुक्त बल संगे एसगर पर लधि जाइ छै। आ तखन एक टा सशक्त मस्तिष्क सेहो तनाओ सँ छटपटाए उठैत अछि। तेहने स्थिति आइ शांताक रहै। बड़की बाइ रहरहाँ ओकरा हतोत्साहित करैत रहैत छलि। ओ ओकरा अप्रिय विषय सभ पढ़ेबा लेल देलकै; ओहि कक्षा सभ सँ स्थानान्तरित करैत रहलै जतय ओ बोध विकसित करय लागल छलि; आ तेहने सन। विद्यालय कार्यक प्रति शांताक स्वाभाविक रुचि एहन अनुभव सभक पुनरावृत्ति सँ क्षीण होइत गेलै; फेर क्रमशः ताहि ठाम उदासीनता आबि गेलै आ तखन अरुचि। तखनो ओ आइ जकाँ हीया नइँ हारने छलि; कहियो नइँ सोचने छलि जे शिक्षिकाक जीवन ओकरा लेल असंभव अछि। आइ कोनो बाट खुजल नइँ देखाइत रहै। ओ एहन हरिण जकाँ छलि जे चौतरफा शिकारी सभ सँ घेरा गेल होअय।

एहने सन विचार सभ मे ओ अपन शुरुआती समय बितेलक आ घायल हरिणक व्यग्र संकल्प सन किछु लेने अंततः उठि ठाढ़ भेलि। ओ कॉफी बनाक' पीलक। जखन कामवाली दाइ आयलि, ओ घोषित कयलक जे ने आइ कोठली मे बाढ़नि पड़तै आ ने धो-धखाड़ेक काज हेतै—एखन आकि साँझे मे, एकर सत्ती ओकरा ओ सूचना देब'लेल विद्यालय पठा देलकै। ओकरा जाइते, शांदा चद्दरि ओढ़िक' बिछाओन पर पड़ि रहल। ओ तय कयलक जे आइ दिन भरि कोनो चीजक फिकिर नइँ करत, कोनो विचार केँ बुधियारी सँ शमित करबाक चेष्टा नइँ करत, पूर्ण ईमानदारी सँ अपन मोन केँ मुक्त छोड़ि देत, ओकरा लगाम नइँ लगाओत, चाहे ई अपना संग कतबोक तोड़-फोड़ किऐ ने करय, आ एहि तरहें देखत जे किनसाइत ई अपना लेल कोनो बाट ताकि सकय। ''हमरा देखबाक अछि जे हमर ई हेरायल मेमना कतय-कतय बौआइत अछि।'' शांता स्वयं सँ बाजलि।

विद्यालय मे टिफिनक घंटी टनटनायल। लड़की सभक खुशी मचायब आ घोल-फचक्का शुरू भ'गेलै। किछु नाम, किछु कुलनाम, किछु उपनाम सोर पाड़ल जाय लगलै। सभ टा नल एक्के बेर गड़गड़ाबय लगलै। झुटिका रोड़ी, कुदकैत पयर, उताहुल पाठ-स्वर सभ मिलि प्रांगण केँ गुँजायमान क' देने रहै। एक कातक कोठली मे, अपन-अपन टिफीनक डिब्बा पर झुकलि, किछु लड़की सभ गप क' रहल छलि।

''आइ रेगेबाइ किऐ नइँ एलीह?''

''हम की जान' गेलिऐ? बीमार छथि किनसाइत।''

एक टा तेसर मद्धिम आ गंभीर स्वर, ''नइँ बूझल छौह? अपना सभक इतिहासक घंटीक बाद बड़की बाइ हुनका बजेने रहनि। तखने निश्चित किछु भेल हेतै...!''

''ठीक छै! मुदा ई सभ कोनो की हुनका नइँ बूझल छनि! तोरा ई तँ नइँ होइ छहु जे तेहन सन बात लेल बाइ त्यागपत्र द' देने हेतीह, होइ छहु की? अनेरुआ गप! नइँ, ओ बीमार छथि, हमरा बुझने...।''

''से मुदा, मोन छहु—द्रविड़ आ आओर सभ हुनका प्रश्न सँ दिक क' देने रहनि ओहि दिन...।''

''एह! आ तों तँ जेना किछु कयने नइँ छलही! तों तँ अकस्मात जेना प्रेम सँ भरि गेलै, जखन ओ बीमार...।''

''मुदा सैह सत्त छै!'' एखन धरि चुप्प बैसलि एक टा सज्ञान लड़की बाजलि, ''ई सदिखन होइत छै। जे हमरा सभ केँ उपलब्ध रहैछ तकर हम सभ कोनो मोजर नइँ दैत छिऐ। ककरा परबाहि छै कोनो व्यक्तिक प्रतिभाक मादे जाधरि ओ मरि नइँ जाइ वा कम सँ कम बीमार नइँ पड़ि जाइ? बेचारी रेगेबाइ! बुझल छहु जे ओ अपन पढ़ेबाक संग कतेक तरद्दुत उठबै छथि, आ कखनो तमसाइत नइँ छथि, आ एकदम सहज-सरल छथि, आ तों सभ हुनका पर अण्डा सेबैक जोगार मे रहै छिही। तों सभ तँ बस अपन गणित वाली बाइ आ ओकर फज्झतिक जोगर छें। की, केहन लागै छौ!''

''ऊ ओ ओ ओ! की भक्ति! हे, जानि ले, जतेक तों बुझै छिहि ताहि सँ बेसी नीक जकाँ रेगे बाइ बुझै छथिन। ओ जानै छथिन जे हमरा सभक मोन मे कनिको अपकारक भावना नइँ रहय।''

''से की तों एकदम निश्चित छिही? की केओ ओहि दिन हुनका घर जाइत देखने छलै? तोरा सभ केँ हुनक चेहरा देखबाक चाही छल। धरम जानय जे बाइ ओकर की बिगाड़ने छथिन। एतय तों सभ एक दिस छिही आ बड़की बाइ दोसर दिस...।''

चिक्कन-चुनमुन सुमन चन्देकर बाजलि, ''हे, किऐ नइँ हम सभ ककरो आइ विद्यालयक बाद बाइक घर पठाबी? नइँ किछु तँ हम सभ हुनक खोज-पुछारि तँ करी। हम जँ छात्रावासक लड़की नइँ रहितहुँ तँ हम अपने जइतहुँ।''

''हम सभ शीला केँ पठाबी। ओ ओम्हरे सँ जाइत अछि। की तों ओहि बाटे जाइत किछु क्षणक लेल ओत' बिलमि सकबही, शीला?''

''ई हमरा नीक लागितय खूब। मुदा हमरा घबड़ाहटि होइए। ओम्हर, माइ सेहो सदति विद्यालय सँ सोझे घर आब' लेल चेतबैत रहयए। जँ ओ बुझि गेलि...।''

''हे, जाही ने। दू मिनट मे की लागे छै?''

आ से, पाँच बजे शीला शांताक बन्न केबाड़ लग पहुँचलि। ओकर हाथ मे फूलक एक टा गुच्छा छलै जे लड़की सभ बड़ चतुराइ सँ माली सँ चोराक' बिछने छलि। ओ बड़ी काल दरबज्जा लग थकमकायल रहलि, बेर-बेर चारूकात हियासैत रहलि, आ बेर-बेर ओकरा मोन केँ घबड़ाहटि घेरलकै। अंतत: ओ केबाड़ ठकठकेलक।

''के छी?'' शांताक चकित स्वर पुछलकै।

''हम छी, बाइ, शीला दुपालिवार।''

शांताक अचरजक ठेकान नइँ रहलै। ओकर हेरायल मेमना थाकल-ठहिआयल बौआइत छलै। मारिते रास भेड़िया द्वारा कोनटा धरा देल गेल छलै। आ बेर-बेर कोनो स्वाभाविक फुर्ती सँ बचि निकलैत रहै। ओ कोनो चीज सँ भयभीत नइँ छलि, ककरो सँ भयग्रस्त नइँ छलि। मुदा सभक अछैतहु ओ अपना लेल एहन ठाम नइँ खोजि सकल छलि जत' ओ आश्वस्त भ' विश्राम आ आनंद अरजि सकय। अंतत: ओ थाकि गेल, आ तीव्र थकान सँ गतिहीन भ' पड़ि रहलि। थकानेक चलते ओ सभ टा खोज स्थगित क' देने छलि आ चुपचाप पड़ल छलि...आ तखने शीला केबाड़ ठकठकेने छलै।

शांता उठलि आ केबाड़ खोललक। ओ ऊपर-नीचाँ शीलाक नख सँ शिख धरि निहारलक, जे अपन हाथ मे अपन किताब आ फूलक गुच्छा पकड़ने छलि। फेर ओ बाजलि, ''की शीला, एम्हर कोना चलि अयलह? भीतरे आबह।''

शीला भीतर आयलि। एक हाथ सँ किताब सम्हारैत, दोसर हाथ मे फूलक गुच्छा बढ़बैत, बाजलि, ''लड़की सभ अहाँक लेल ई पठोलक अछि, बाइ...।''

ओ ठमकि गेलि। प्राय: अवचेतने मे ओ शांताक उतरल मुँह, ओकर कोठलीक डराउन स्तब्धताक असरि मे आबि गेलि आ ओकरा अपन व्याकुलता बढ़ैत बुझेलै। आ शांता केँ तँ ई उद्यमे विचित्र बुझाइत रहै। ओ बिछाओनक एककात बैसलि शीला दिस ताकय लागलि।

''लड़की सभ पूछय लेल पठेलक अछि, अहाँक मोन केहन अछि?''

एके क्षण मे मारिते रास परस्पर विरोधी विचार सभ शांताक मन मे पैसि गेल। एक क्षण ओ ई कहबाक लेल उद्यत भेलि, ''एहि सँ की फरक पड़ैत अछि जे हम कतेक अस्वस्थ छी? तोरा सभ केँ तँ प्राय: एहि सँ आनन्दे हेतह—छुट्टियो भेटि सकै छह।'' ओकर मस्तिष्कक दोसर हिस्सा—ओ हिस्सा जे स्वाभाविक रूपें लड़की सभक बेदरमति आ निष्कलुषता मे सहानुभूतिपूर्वक सहभागी भ' जाइत छल—कृतज्ञता सँ भरि गेलै। मुदा ओकर संसारिक मस्तिष्क प्रश्न संग तेहने मर्यादा सँ व्यवहार केलक जेहन सन पूछल गेल छलै।

''तेहन कोनो विशेष नइँ। काल्हि हम विद्यालय आयब।''

''बेस, तखन हम जाइ छी...''

शांता ठाढ़ भेलि। शीला दरबज्जा दिस घूमि गेलि। शांता ओकर पीठ केँ दू बेर थपथपेलक आ शीला केँ दृष्टि सँ बाहर होइ धरि मुँहथरि पर ठाढ़ रहलि। फेर ओ केबाड़ सटेलक, बिछाओन पर सँ फूलक गुच्छा उठेलक आ ओकर सुगंध लैत ठाढ़ रहलि।

दोसर दिन शांता विद्यालय आयलि। ओ इतिहासक कक्षा मे पैसलि। ओ शीला दिस एक बेर ताकलि। ओ सभक दिस ताकलि। लड़की सभक आँखि मे ओकरा अपन भावनाक प्रतिबिम्ब देखाइ पड़लै। ओतहि ओ अन्यमनस्कता आ तिरस्कार देखने छलि आ ओकर मोन सर्द भ' जाइत छलै। आइ ओकरा एकदम भिन्न बोध देखाइ पड़लै। ओ खूब आनन्द विभोर भ' पढ़ाब' लागलि। बड़की बाइक खयालो धरि ओकरा नइँ छुअलकै।



अनुवादक संपर्क : **विप्लव भवन, वार्ड नं. 7**
चकला निर्मली, सुपौल-852131 (बिहार)
मोबाइल : 9431091548

फार्म-4

प्रेस तथा पुस्तक पंजीयन अधिनियम की धारा 19 'डी' अंतर्गत 'अंतिका' नामक पत्रिका से संबंधित स्वामित्व और अन्य बातों का विवरण—

1.	पत्रिका का नाम	**अंतिका (मैथिली)**
2.	प्रकाशन की आवर्तता	**त्रैमासिक**
3.	प्रकाशन का स्थान	**153-बी/पॉकेट-ई, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095**
4.	मुद्रक का नाम	**नंदिनी**
	क्या भारतीय हैं?	**हाँ**
	पता	**153-बी/पॉकेट-ई, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095**
5.	प्रकाशक का नाम	**नंदिनी**
	क्या भारतीय हैं?	**हाँ**
	पता	**153-बी/पॉकेट-ई, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095**
6.	संपादक का नाम	**अनलकान्त**
	क्या भारतीय हैं?	**हाँ**
	पता	**153-बी/पॉकेट-ई, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095**
7.	उन व्यक्तियों के नाम और पते जो पत्रिका के मालिक और कुल प्रदत्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार या भागीदार हैं	**नंदिनी**
		153-बी/पॉकेट-ई, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095

मैं नंदिनी एतद्वारा घोषणा करती हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपरोक्त विवरण सही है।

नंदिनी

'अंतिका'क संपादकीय वाजिब बेगरता दिस संकेत करैत अछि। अहाँ जे कह' चाहैत छी, से एकदम स्पष्ट अछि। मुदा एकदम टटका पीढ़िक नवतुरिया लोकसभ जकरा मुँह सँ एखन ठीक-ठीक बकारो नइँ फुटलै से तमसायत जरूरे। जेहन परिस्थिति मैथिलीक साहित्य जगत मे अछि ताहि मे एम्हरका पीढ़ीक युवा सभ लेखन मे अबै सँ धखाइत अछि। किछु गोटे तेना ने मैथिली के पजियौने छथि जे हमरा सभक लेल तकरा बुझब बड़ कठिन भ' जाइत अछि, मुदा ई भरोस अछि जे हमरा सभ सँ पहिने अपने सभ सन किछु दृष्टिसंपन्न लोक छथि जिनका सँ नवतुरिया पीढ़ी केँ दिशा-निर्देश भेटतै।

अहाँ केँ ईहो चिन्ता अछि जे मैथिली मे नवका पीढ़ी किऐ ने अबैत अछि आ नव लोक एम्हर उन्मुख नइँ भ' कत' चलि गेल? अहाँ जनैते हैब जे बेरोजगारी, व्यवस्थाक मारि, गरीबी आ दुनू साँझ लेल रोटीक जोगाड़ मे एखनुका नवका पीढ़ी अपस्याँत अछि। तैयो किछु गोटे तँ अवस्से सर्जना मे लागल छथि। जरूरति छै जे अग्रज पीढ़ीक रचनाकार एहि समस्या केँ आरो नीक जकाँ बुझथि आ एकर समाधान तकबाक लेल प्रयास करथि। एहि लेल नव पीढ़ीक उत्सुक लोक केँ प्रोत्साहित करैत ओकर मार्गदर्शन करब सेहो जरूरी अछि। आ ताहि दिस ध्यान देबा लेल, नवतुरियाक लेखनक धार माँजबाक लेल, अहाँ आ समस्त अंतिका परिवार सँ हमर विशेष आग्रह अछि।

हम किछु रचना पठा रहल छी आ ई क्रम अनवरत चलैत रहत से हम वचन दैत छी।

—अरुणाभ सौरभ

चैनपुर, सहरसा

वर्ष, 1999 मे पटनाक यात्रा क्रम मे अशोक राजपथ पर स्थित एक दोकान मे 'अंतिका' सँ पहिल भेट भेल छल। आइयो ओ दिन मोन अछि। मैथिली साहित्य मे परिवर्तनकामी विचारक संवहन करैत ई त्रैमासिक साहित्यिक आयोजन नव उमेद जगौने रहय। तकर बाद अपना इलाकाक हाट-बाजार मे एहि पत्रिका केँ खोजबाक प्रयास कैक बेर कयल, मुदा बहुत दिन धरि सफलता नइँ भेटल।

हँ, एक टा घटना आर मोन पड़ल। वर्ष 2004-05क एक अंक मे लेखिका मंजूला झाक कविता प्रकाशित भेल छलनि, सेहो अंक देखने रही। तकरा बाद वर्ष 2010 मे मधुबनीक उभरैत युवा रचनाकार नवनीत कुमार झाक सौजन्य सँ लगातार दू टा अंक प्राप्त भेल। मोन गदगद भ' गेल। अपना शहर मे अप्पन भाषाक समकालीन रचनाशीलता सँ एतेक सुरुचिपूर्ण ढंग सँ साक्षात कराब' लेल समस्त अंतिका परिवार केँ साधुवाद।

विगत दुनू अंकक संपादकीय बड़ निराशाजनक लागल। मैथिली साहित्य मरणासन्न अछि से बात मानि लेनाइ असंभव गप्प थिक। अपनेक एहि मंतव्य पर हमर असहमति प्रस्तुत अछि। जँ वास्तव मे एहन स्थिति अछियो तँ हमरे लोकनि एहि लेल जिम्मेदार छी। हमरा विचार मे, बेर-बेर संपादकीय मे एहि तथ्य केँ दोहरायब जे मैथिली साहित्यक स्थिति खराब अछि—ई नीक बात नइँ। नीक रचनाक अभाव अछि, ई कहला मात्र सँ कोनो टा सकारात्मक समाधान नइँ बहराओत। सही अर्थ मे जे लेखक आ पाठक छथि ओ आइयो साहित्यक सेवा आ आस्वादन लेल व्यग्र रहैत छथि। तेँ पत्रिका दिस सँ सेहो ओहेन लेखक आ पाठक वर्ग सँ नीक संबंध जोड़बाक प्रयास परमावश्यक प्रतीत होइत अछि। साहित्यक भलाइ केँ ध्यान मे राखि एहि लेल सामूहिक प्रयत्न कयल जायब बेसी जरूरी अछि।

अहाँ केँ ई जानि प्रसन्नता हैत जे मधुबनी शहर मे हमर मित्र मण्डलीक जतेक सदस्य सभ साहित्यिक गतिविधि मे संलग्न छथि, ओ सभ 'अंतिका'क अंक सभक अद्‌भुत स्वागत कयलनि अछि। जिनका देख' देलियनि ओ सभ एहि बात सँ विस्मित छलाह जे मैथिली साहित्यक एतेक नीक आ व्यवस्थित पत्रिका नियमित रूपें हमरा सभ केँ किएक ने उपलब्ध होइत अछि। तेँ एकर प्रसार पर सेहो ध्यान देब जरूरी अछि। भविष्योन्मुखी योजना पर काज कयल जाय, नव पीढ़ी आगू अयबे करताह।

पछिला अंक मे तारानन्द वियोगीक आलेख 'नवजागरण आ मैथिली जागरण' सारगर्भित अछि आ मैथिल समाज आ साहित्य मे निरन्तर चलि रहल जागरणक प्रक्रिया सँ परिचय करबाब' मे सक्षम। मिथिला लोक चित्रकला पर रवीन्द्र दासक लेख झुझुआन बुझाइत अछि।

परख मे नरेन्द्र जीक 'एनजीओ आ वामपंथ' बहुत विचारोत्तेजक लागल। आइ अपना मिथिलांचलक गैरसरकारी संगठन सभक कार्यशैली संदेहास्पद बुझाइत अछि। सय मे निनानबे टा एनजीओ भ्रष्टाचार आ धनलिप्सा मे लिप्त अछि। जनकल्याण आ सामाजिक उत्थानक विचार सँ कोसो-कोस दूर। लोकगाथाक मिथक आ इतिहास सँ जुड़ल नरेन्द्र जीक विचार सेहो ज्ञानवर्द्धक।

अमरेन्द्र यादवक कविता 'कल्पना आ यथार्थ' तथा 'आह्‌वान' अंकक उपलब्धि थिक।

—नीरज कुमार झा

आदर्श कॉलोनी, मधुबनी

'अंतिका'क वैचारिक सामग्री सँ सहमत हो वा असहमत, सोचबाक लेल सदति बाध्य करैत अछि। खासक' विचार-साहित्य मे रुचि रखनिहार मैथिलीक गंभीर पाठक लेल तँ आब यैह टा एक मात्र एहन मंच रहि गेल अछि जत' सँ वैचारिक खोराक भेट सकैत अछि। ओना एहि मे प्रकाशित कथा आ अन्य स्तम्भ सभ सेहो पठनीय होइत अछि। पछिला अंकक कथा सभ मे सँ रमेश रंजनक 'रणक्षेत्र' संघर्ष केँ दिशा दैत अछि। तहिना विभूति आनन्दक 'बैजू पंडित' मे यात्रीक प्रतिछाया देखाइत अछि। आदि यायावरक कथा सेहो खूब-खूब पठनीय अछि।

रंगायन स्तम्भ मे पछिला दू अंक सँ बर्टोल्ट ब्रेष्टक रंगमंचीय कविता ल'क' कुणाल जी जे अनुवाद आ अपन विचार प्रस्तुत क' रहल छथि से बहुत प्रशंसनीय आ मैथिली रंगमंच सँ जुड़ल लोक लेल दिशा-निर्देशक अछि।

—अमित कुमार

फारबिसगंज, अररिया



अंतिका प्रकाशन

सिर्फ़ एक प्रकाशन नहीं
साहित्य, संस्कृति और विचार की जनपक्षधरता के साथ
पाठकीय विश्वास और आधार पर
निरंतर क़दम बढ़ा रहा
एक मिशन है...

अंतिका प्रकाशन के साथ जुड़े रहकर आप देश, समाज और साहित्यिक रचनात्मकताओं के साथ-साथ सांस्कृतिक जगत की वैचारिक हलचलों और सजगताओं से रू-ब-रू रह सकते हैं...

हमारे लिए किताबों का प्रकाशन एक व्यवसाय मात्र नहीं, अपने समय की नब्ज टटोलने की कोशिश है और इस कोशिश में किताबों के साथ-साथ 'बया' और 'अंतिका' जैसी दो महत्त्वपूर्ण पत्रिकाएँ भी आप तक पहुँचाते हैं।

हमसे निरंतर जुड़े रहने के लिए 'बया' और 'अंतिका' की सदस्यता के अलावा हमारे प्रकाशन के 'पाठक क्लब' के सदस्य भी बन सकते हैं। 'पाठक क्लब' की सदस्यता राशि मात्र ` 200 है। इसकी सदस्यता लेने पर आप बिना अग्रिम राशि भेजे वी.पी.पी. से पुस्तकें मँगवा सकते हैं।

सामान्यत: पुस्तकें मँगवाने के लिए राशि अग्रिम भेजना आवश्यक है। कम-से-कम ` 200 की किताब पर डाक ख़र्च हम वहन करेंगे। ` 300 से ` 500 तक की किताबों पर 10%, उसके बाद ` 1000 तक की किताबों पर 15% और उससे ज़्यादा की व्यक्तिगत ख़रीद पर 20% की छूट दी जाएगी। सजिल्द पुस्तकों पर ये छूट क्रमश: 15%, 20% और 25% होगी। पुस्तकालयों/संस्थाओं को राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउण्डेशन, कोलकाता अथवा यूजीसी की ओर से निर्धारित छूट दी जाएगी।

पुस्तकें मँगवाने के लिए राशि **अंतिका प्रकाशन** के नामे मनीऑर्डर, ड्राफ्ट या एटपार (मल्टिसिटी) चेक के रूप में भेजी जा सकती है। मनीऑर्डर भेजने की स्थिति में अलग से पत्र भी लिखकर आदेश की जानकारी दें।
हमारी पुस्तकों के बारे में नवीनतम और सम्पूर्ण जानकारी के लिए हमारे वेबसाइट देख सकते हैं।



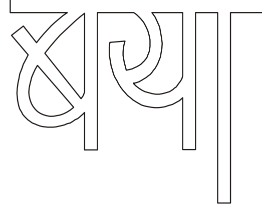
अंतिका प्रकाशन सी-56/यूजीएफ-4, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन -2, ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)
फ़ोन-0120-2648212 मोबाइल : 9871856053
वेबसाइट : www.antika-prakashan.com ई-मेल : antika56@gmail.com

अंतिका प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तकें

पुस्तक का नाम : लेखक	प्रकाशन वर्ष	मूल्य ` (सजिल्द)	मूल्य ` (पेपरबैक)
आलोचना			
इतिहास : संयोग और सार्थकता : सुरेन्द्र चौधरी	2009	450.00	210.00
हिन्दी कहानी : रचना और परिस्थिति : सुरेन्द्र चौधरी	2009	550.00	275.00
साधारण की प्रतिज्ञा : अंधेरे से साक्षात्कार : सुरेन्द्र चौधरी	2009	350.00	160.00
बालकृष्ण भट्ट और आधुनिक हिंदी आलोचना का आरंभ : अभिषेक रौशन	2009	390.00	—
रंगमंच			
बादल सरकार : व्यक्ति और रंगमंच : अशोक भौमिक	2009	225.00	110.00
शिक्षा और सामाजिक चिंतन			
एक कहानीकार की नोटबुक : स्वयं प्रकाश	2010	250.00	120.00
जस देखा तस लेखा : डॉ. योगेन्द्र	2009	400.00	200.00
अपने समय के सवाल : विष्णु नागर	2009	250.00	120.00
मीडिया-समाज			
डिज़ास्टर : मीडिया एण्ड पॉलिटिक्स : पुण्य प्रसून वाजपेयी	2008	200.00	—
राजनीति मेरी जान : पुण्य प्रसून वाजपेयी	2008	300.00	—
देखते रहिये : रवीश कुमार	2010	225.00	125.00
यहाँ मुखौटे बिकते हैं : प्रभात शुंगलू	2010	250.00	130.00
इतिहास, स्त्री-विमर्श			
पालकालीन संस्कृति : मंजु कुमारी	2008	225.00	—
स्त्री : संघर्ष और सृजन : श्रीधरम	2008	200.00	—
इंदिरा गांधी का समाजवाद : हीरानन्द आचार्य	2010	300.00	—
रेखाचित्र/संस्मरण			
हमसफ़रनामा : स्वयं प्रकाश	2010	225.00	110.00
इस उस मोड़ पर : चन्द्रकला त्रिपाठी	2010	200.00	100.00
सपूत मातृभूमि के...(नेपाल): अनिल कुमार झा/कौशलेन्द्र मिश्र	2010	300.00	—
उपन्यास			
धर्मस्थल : प्रियंवद	2011	225.00	110.00
स्वर्गदद्दा! पाणि, पाणि : विद्यासागर नौटियाल	2010	200.00	100.00
नंदित नरक में : हुमायूँ अहमद	2010	145.00	70.00
मोनालीसा हँस रही थी : अशोक भौमिक	2008	200.00	100.00
माइक्रोस्कोप : डॉ. राजेन्द्र कुमार कनौजिया	2009	200.00	100.00
हारिल : हितेन्द्र पटेल	2009	200.00	100.00
समंदर : मिलिंद बोकिल	2010	200.00	100.00
दिमाग़ में घोंसले : विजय शर्मा	2010	200.00	—
कहानी-संग्रह			
पाँच का सिक्का : अरुण कुमार असफल	2011	225.00	110.00
लाल छींटवाली लूगड़ी का सपना : सत्यनारायण पटेल	2011	225.00	110.00
नगरवधुएँ अख़बार नहीं पढ़तीं : अनिल यादव	2011	200.00	100.00
रेल की बात : हरिमोहन झा	2008	125.00	70.00

छछिया भर छाछ : महेश कटारे	2008	200.00	100.00
कोहरे में कंदील : अवधेश प्रीत	2008	200.00	100.00
शहर की आख़िरी चिड़िया : प्रकाश कान्त	2008	200.00	100.00
पीले काग़ज़ की उजली इबारत : कैलाश बनवासी	2008	200.00	100.00
नाच के बाहर : गौरीनाथ	2008	200.00	100.00
आइस-पाइस : अशोक भौमिक	2008	180.00	90.00
कुछ भी तो रूमानी नहीं : मनीषा कुलश्रेष्ठ	2008	200.00	100.00
बड़कू चाचा : सुनीता जैन	2008	195.00	—
भेम का भेरू माँगता कुल्हाड़ी ईमान : सत्यनारायण पटेल	2008	200.00	90.00
अमरीका मेरी जान : हरिओम	2009	200.00	100.00
भुतालिया और अन्य कहानियाँ : निसार अहमद	2009	200.00	—
होशियारी खटक रही है : सुभाष चन्द्र कुशवाहा	2010	200.00	100.00
बहेलिये : विपिन कुमार शर्मा	2010	200.00	100.00
बाणमूठ : मुरारी शर्मा	2010	200.00	100.00
नीम बाबा : रहबान अली राकेश	2010	200.00	—
व्यंग्य-संग्रह			
चौथा बंदर : अनुराग मुस्कान	2010	290.00	—
नाटक			
सरोज का सन्निपात : विद्यासागर नौटियाल	2010	200.00	90.00
बर्बरीक उवाच : कुणाल	2010	200.00	100.00
दो रंग नाटक : अविनाशचन्द्र मिश्र	2010	200.00	100.00
कविता-संग्रह			
ग़लत पते पर समय : नईम	2011	225.00	—
पुश्तों का बयान : राजेश सकलानी	2011	200.00	—
स्याही ताल : वीरेन डंगवाल	2009	200.00	100.00
घर के बाहर घर : विष्णु नागर	2010	200.00	100.00
एक बहुत कोमल तान : लीलाधर मंडलोई	2010	200.00	100.00
वे जो लकड़हारे नहीं हैं: सुरेश सेन निशान्त	2010	200.00	100.00
खिड़कियाँ झाँक रहीं कमरे के पार : प्रमोद उपाध्याय	2010	200.00	—
बूँदों के बीच प्यास : बहादुर पटेल	2010	200.00	—
अमलतास : विपिन कुमार शर्मा	2010	200.00	—
पानी का पता पूछ रही थी मछली : कमलेश्वर साहू	2009	200.00	—
इतिहास बन गया : भोलानाथ कुशवाहा	2010	300.00	—
जीना चाहता हूँ : भोलानाथ कुशवाहा	2008	300.00	—
कब लौटेगा नदी के उस पार गया आदमी : भोलानाथ कुशवाहा	2007	225.00	—
लाल रिब्बन का फुलबा : सुनीता जैन	2007	190.00	—
लूओं के बेहाल दिनों में : सुनीता जैन	2008	195.00	—
फैंटेसी : सुनीता जैन	2008	190.00	—
क़ुर्आन कविताएँ : मनोज कुमार श्रीवास्तव	2008	150.00	—
हेरवा : सुनीता जैन	2010	200.00	—
रसोई की खिड़की में : सुनीता जैन	2010	200.00	—
ग़ज़ल-संग्रह			
समय से लड़ते हुए : नरेन्द्र	2011	200.00	100.00
अजनबी शहर : ज़ुबैरुल-हसन 'ग़ाफ़िल'	2009	250.00	—

साहित्य, संस्कृति और विचार का त्रैमासिक



चार किताबों की एक पत्रिका
पहले खण्ड में थीम केन्द्रित दस-बारह विचारोत्तेजक लेख
दूसरे खण्ड में सात से दस तक यादगार कहानियाँ
तीसरे खण्ड में दस-पंद्रह कवियों की साठ-सत्तर कविताएँ
चौथे खण्ड में एक ताज़ा-तरीन सम्पूर्ण उपन्यास
चार खण्ड यानी चार नई किताबें...

पुराने अंकों की प्रतियाँ ज़्यादातर उपलब्ध नहीं हैं
अपनी प्रति पहले सुरक्षित कर लें
बेहतर होगा कि इसकी सदस्यता ले लें
बार-बार सदस्यता के नवीनीकरण से बचने के लिए एक से अधिक वर्षों की सदस्यता
या आजीवन सदस्यता का चुनाव कर सकते हैं

संपादक : **गौरीनाथ**

मूल्य : एक प्रति : ` 30.00
वार्षिक (व्यक्ति) : ` 240 (रजिस्टर्ड डाक ख़र्च सहित)
वार्षिक (संस्था) : ` 300 (रजिस्टर्ड डाक ख़र्च सहित)
विदेशों में (वार्षिक): 50 डालर/30 पाउण्ड
आजीवन : ` 5,000 (सिर्फ़ भारत में)

'बया' से संबंधित सारे भुगतान चेक/ड्राफ्ट या मनीआर्डर **'अंतिका प्रकाशन'** के नाम से भेजें। ग़ाज़ियाबाद/दिल्ली से बाहर के चेक में ` 50 अतिरिक्त जोड़ें।

संपादकीय संपर्क
अंतिका प्रकाशन
सी-56/यूजीएफ-4, शालीमार गार्डन एक्सटेंशन -II, ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)
फ़ोन-0120-2648212, मो. : 0-9871856053
E-mail : antika56@gmail.com
Website : www.antika-prakashan.com